बिनु सबदै मुकति न होई

भाई पिंदरपाल सिंघ जी
के मुख्य लेख

73

१ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

बिनु सबदै मुकति न होई

भाई पिंदरपाल सिंघ जी
के मुख्य लैक्चर

संपादक
भाई परमजीत सिंघ खालसा
अध्यक्ष, सिक्ख स्टूडेंट फैडरेशन (मेहता)

प्रकाशक
भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ
अमृतसर।

BIN SABDE MUKAT NA HOEE
Edited by : Bhai Paramjit Singh Khalsa

ISBN : 978-81-7601-960-6

प्रथम संस्करण 2009

भेटा 100-00

प्रकाशक :

भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ
बाज़ार माई सेवां, अमृतसर।
फोन : (0183) 2542346, 2547974, 2557973
फैक्स : (0183) 5017488
E-mail : csjssales@hotmail.com, csjsexports@vsnl.com
website : www.csjs.com

Printed in India

मुद्रक : जीवन प्रिंटर्स, अमृतसर। फोन : 2705003, 5095774

विषय-सूची

ज्ञानी जी की अन्य पुस्तकें

1. दरशनां दी जुगति
2. गुरमुखां के मुखु उजले
3. माणसु जनमु अमोलु है
4. बाबीहा अंम्रित वेलै बोलिआ
5. माइआ मोहु दुखु सागरु है
6. सतिगुरु की सेवा ऊतम है
7. महिमा साधू संग की
8. गुरु परमेसुरु पूजीऐ
9. कोई आणि मिलावै

दो शब्द

भाई पिंदरपाल सिंघ जी एक उच्च कोटि के विद्वान तथा कथावाचक हैं। उनकी विद्वता उनके मुख से फूलों की तरह झड़ती है। जब वे बोलते हैं तो उनकी बोलने की गति कभी भी धीमी नहीं होती। ऐसे विद्वान की आवाज़ को सुन कर कलमबद्ध करना कोई मामूली काम नहीं था। मैंने इनकी कैसेटों को बार-बार सुना है और तसल्ली होने पर ही क़लमबद्ध किया है। इस पुस्तक में मैंने उनके दस लेक्चर एकत्र किए हैं। उनके पहले लेक्चर का नाम है 'बिनु सबदै मुकति न होई'। इस श्लोक के बारे में विद्वान लेखक ने यह समझाया है कि शब्द के बिना मुक्ति नहीं होती, इसके लिए साधसंगत करना अति आवश्यक है, क्योंकि भावना वालों की संगत के बिना अंदर की श्रद्धा-भावना बनती नहीं। कबीर राम का रूप हो गया, परमात्मा का स्वरूप हो गया, लेकिन संगत के बिना पार-उतारा नहीं। इसी प्रकार उनके और आलेख जिन्हें मैंने कलमबद्ध किया है, उनमें 'बिनु सबदै मुकति न होई, कतिकि करम कमावणे, हरि पिर संगि बैठड़ीआह, हउ वारी जितु सोहिलै, सूरजु एको रुति अनेक, तिन धंनु जणेदी माउ तथा से पूरे परधान' आदि हैं।

मैंने जैसे पहले भी ज़िक्र किया है कि भाई पिंदरपाल सिंघ जी अपनी निज़ी रफ़्तार से अपना लेक्चर देते हैं, इसलिए उनकी आवाज़ को कलमबद्ध करने के लिए कई प्रकार की कठिनाइयां पेश आती हैं। हो सकता है मुझसे कई लग-मात्राएं रह गई हों,

ऐसी मेरी कमज़ोरी को पाठकजन खुद सुधारने की कोशिश करें। मेरे इस खरड़े को विद्वान कथाकार भाई पिंदरपाल सिंघ जी ने खुद भी पढ़ा है, इसलिए मुझे उम्मीद है कि मेरी त्रुटियों को उन्होंने दूर कर दिया होगा।

भाई परमजीत सिंघ ख़ालसा

प्रशंसनीय यत्न

भाई पिंदरपाल सिंघ जी इस समय के प्रसिद्ध विद्वान तथा कथावाचक हैं। आज हर व्यक्ति उनकी कथा सुनकर गुरु-घर के साथ जुड़ता है। भाई परमजीत सिंघ ख़ालसा ने उनके लेक्चरों को पंजाबी और हिन्दी रूप देकर अति प्रशंसनीय कार्य किया है। हमें मालूम है कि कैसेटों से पंजाबी और हिन्दी प्रतिलिपि करना कोई आसान काम नहीं। भाई परमजीत सिंघ ख़ालसा ने इस तरफ बड़ा उद्यम किया है। इससे पहले भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ की फर्म ने ज्ञानी संत सिंघ जी मस्कीन की कई कैसेटों की हिन्दी/पंजाबी प्रतिलिपियां करवाई हैं। भाई पिंदरपाल सिंघ जी बड़ी चढ़दी कला वाले वक्ता हैं। उनकी कैसेटों को पंजाबी-हिन्दी रूप देना अति प्रशंसनीय कार्य है। भाई परमजीत सिंघ ख़ालसा ने सात लेक्चरों को पंजाबी रूप दिया है। इन कथाओं में **बिनु सबदै मुकति न होई, कतिकि करम कमावणे, तिन पिर संगि बैठड़ीआह, हउ वारी जितु सोहिलै, सूरजु एको रुति अनेक, तिन धंनु जणेदी माउ, से पूरे परधान** आदि दर्ज हैं।

-तरलोचन सिंघ

सिंघ साहिब, जत्थेदार तख्त श्री केसगढ़ साहिब,
श्री आनंदपुर साहिब।

आमुख

भाई परमजीत सिंघ ख़ालसा ने मेरे कुछ लेक्चरों को कैसेटों से कलमबद्ध किया है, इसलिए मैं उसका बहुत आभारी हूं। एक कैसेट से लेक्चर ज्यों का त्यों लिख लेना कोई आसान बात नहीं है, लेकिन मैंने उनके खरड़े को पढ़कर देखा है और वे इस कार्य में पूरे सफल रहे हैं। इसमें सबसे बड़ा तथ्य यह है कि भाई परमजीत सिंघ ख़ालसा खुद भी गुरबाणी के रंग में रंगे हुए हैं, इसलिए लेक्चरों को कलमबद्ध करने में उनको ज्यादा कठिनाई नहीं आई होगी। मैंने उनके खरड़े को अच्छी तरह से पढ़ा है और उसमें से बहुत कम गलतियां मिली हैं। जो मनुष्य तन-मन से श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के साथ जुड़ जाता है उसके अंदर की हउमै दूर हो जाती है और वह गुरबाणी के रंग में रंगा न भूलने योग्य हो जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की अमृत गुरबाणी में जहां जिज्ञासु अपने गुरू से बार-बार कुर्बान जाता है वहां सतिगुरु अपने सिक्ख से बार-बार बलिहार जाते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी में हजूर श्री गुरु अरजन देव जी का एक अमृत वचन है कि आम तौर पर हम रूहानियत के मार्ग पर चलने वालों को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की गुरमति विचारधारा में से चार-पांच शब्दों के साथ संबोधन करते हैं। किसी के लिए यह शब्द प्रयोग करते हैं कि यह महान संत है, किसी के लिए शब्द प्रयोग करते हैं कि यह वास्तव में प्रभु का प्यारा भक्त है, किसी के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब में से शब्द पढ़ते हैं कि यह पूर्ण साध है, किसी के लिए पढ़ते हैं कि यह तो गुरमुख है। पांचवां शब्द हम पढ़ते हैं कि यह एक महान गुरु का सिक्ख है। भाई परमजीत सिंघ ख़ालसा, जिन्होंने इतनी लगन और प्यार से मेरे लेक्चरों को कलमबद्ध किया है, उनके लिए भी मेरा एक ही शब्द है कि भाई परमजीत सिंघ ख़ालसा महान गुरु का एक महान सिक्ख है।

-भाई पिंदरपाल सिंघ

बिनु सबदै मुकति न होई

सबदि मरै सोई जनु सिझै बिनु सबदै मुकति न होई।।
भेख करहि बहु करम विगुते भाइ दूजै परज विगोई।।
नानक बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ जे सउ लोचै कोई।।३२।।

(अंग १४१६)

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

परम सम्मानयोग्य सतिगुरु ग्रंथ साहिब सच्चे पातशाह जी की पावन पवित्र हजूरी अंदर शोभायमान गुरु-संवारे सतसंगी-जनो! आज धन्य गुरु अमरदास कृपालु जी का 'वारां ते वधीक' में से 32वां श्लोक आप जी ने श्रवण किया है। इस श्लोक का संक्षेप-सा भाव इस प्रकार है कि जो गुरु-संवारे अपने आप को जीते-जी शब्द में मार लेते हैं वही असल में अपनी ज़िन्दगी को सफ़ल करके जाते हैं। शब्द के बाद किसी को मुक्ति नहीं मिली और यदि कोई शब्द का आसरा रख कर अन्य प्रकार के कर्म-कांड करे तो वह असल में परेशान होता है और गुरु को छोड़ कर जितने मर्ज़ी दूसरे कोई कर्म करे, सतिगुरु के बिना नाम की प्राप्ति नहीं।

गुरु अमरदास सच्चे पातशाह जी ने अज इस वचन को प्रारम्भ करते हुए मनुष्य की ज़िन्दगी की सफलता की हकीकत को बयान किया है। इस संसार में आते सभी हैं, ज़रूरी नहीं कि जो आदमी इस जगत् में जन्म लेकर आया है वह मरते समय इस संसार से सफल भी होकर जाए। संसार पर आए सभी हैं लेकिन जाते समय सफलता किसी-किसी के पल्ले पड़ती है। हजूर ने अमृत बाणी में कृपालता

की है कि सफल वे होकर जाते हैं जो जिज्ञासु जीते-जी अपने आप को शब्द में मार देते हैं।

अब जीते-जी शब्द में मरना क्या है? गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी ने एक शारीरिक तौर पर जो मौत है उसे स्वीकार किया है। हम रोज़ पढ़ते हैं :

जो जनमै सो जानहु मूआ।। *(अंग ३७५)*

जिस आदमी का जन्म हुआ है उसने मरना अवश्य है। सतिगुरु ने बाणी में फ़रमाया है :

जो उपजिओ सो बिनसि है.....।। *(अंग १४२९)*

जो पैदा हुआ है उसने एक दिन ख़त्म ज़रूर होना है, लेकिन गुरु अमरदास जी कहते हैं कि जो शब्द में मर गए, असल में वे ही ज़िन्दगी में सफल हुए हैं।

जब मरने की व्याख्या करेंगे तो हमें शब्द में मरने से पहले इस बात की समझ होनी चाहिए कि शारीरिक तौर पर इंसान की मौत क्या है? शब्द में मरना शारीरिक तौर पर मरने के बिलकुल आस-पास की व्याख्या करेगा। शारीरिक तौर पर जब कोई इंसान मरता है तो हम सब को पता है कि उसका शरीर घर में पड़ा है, लेकिन उसके शरीर के ऊपर जितना मर्ज़ी परिवार के आदमी रुदन करते जाएं, लोगों के रोने का उस पर कोई असर नहीं। शारीरिक तौर पर मरे हुए के श्वास नहीं चलते। मुर्दा कभी भी अपने अंदर का दुख किसी को प्रकट नहीं करता। यदि मरे को पानी में प्रवाह कर दिया जाए तो कभी भी मुर्दा बोल कर नहीं कहेगा कि मुझे जल-प्रवाह न करो। यदि मुर्दे को आग पर रख कर जला दो तो मुर्दा कभी नहीं कहता कि मुझे आग पर न रखो। यदि कोई ज़मीन में गड्ढा खोद कर मुर्दे को ख़ाक के सपुर्द कर देता है तो मुर्दा कभी नहीं कहता कि मुझे ख़ाक के सपुर्द न करो। मुर्दे की वास्तव में तब ताकत ख़त्म हो गई जब उसकी मृत्यु हो गई।

अब शब्द में मरना क्या है? जब कोई मरता है तो पहली बात कि यदि मरता हुआ आदमी खड़ा है तो ज़मीन पर गिरेगा। मृत्यु आए, आदमी बैठा हो तो ज़मीन पर गिरेगा। मुर्दे खड़े नहीं होते, मरने के बाद उनका पहला कर्म यह है कि वे अपने आप को धरती को समर्पित कर देते हैं। कबीर साहिब ने एक वचन कहा कि दुनिया के लोगो! आम तौर पर आदमी जब शारीरिक तौर पर मरते हैं, जैसे किसी को मृत्यु आई तो अपने आप मर गया, किसी को कत्ल किया गया, गोली चलाई तो मरा, तलवार चलाई तो मरा, तीखे तीर लगे तो मरा। कहने लगे, जैसे संसार के शस्त्र से किसी तन पर वार करने से तन की मृत्यु होती है, सच जानना गुरु का शब्द एक तीर है। जिसके सीने को गुरु का शब्द छेद जाए, मरने वाले का पहला लक्षण है कि वह अपनी हउमै को छोड़कर धरती पर गिर पड़ता है। मरने वाले का लक्षण नम्रता है। कबीर साहिब ने इस वचन को अपने अमृत वचन श्लोकों में प्रकट किया है। कहते हैं :

कबीर सतिगुर सूरमे बाहिआ बानु जु एकु।।

गुरु सूरमे ने अपने शब्द का तीर एक ही बार चलाया।

लागत ही भुइ गिरि परिआ परा करेजे छेकु।। *(अंग १३७४)*

तीर लगते ही शब्द मेरे हृदय को स्पर्श किया और हम धरती पर गिर पड़े। पहली बात धरती पर गिरा। दूसरी विनती, धरती पर गिरने का भाव शारीरिक तौर पर नहीं, मरने वाला सबसे पहली बात नम्रता में जाता है। ज़मीन पर गिरता ही आदमी तब है जब उसके अपने अंदर की ताकत ख़त्म हो जाए।

हम देखते हैं कि शारीरिक रूप से कोई ताकत वाला आदमी किसी पर ज़ुल्म करे, ताकत वाला आदमी अपने ज़ोर से किसी को झुकाना चाहे और कमज़ोर आदमी सबसे पहले यह काम करता है कि अपने हाथ जोड़ कर, घुटने टेक कर उसके पैरों में सामने झुक जाता है। अमीर होने का पहला लक्षण है नम्रता में आकर अपने आप को समर्पित करना। कबीर जी कहते हैं कि एक उपदेश का तीर गुरु

ने चलाया, लगते ही हम ज़मीन पर गिर पड़े। अब उस तीर ने असर क्या किया? हम कहेंगे कि संसार के अनेकों लोग माथा टेकते हैं, क्या ज़मीन पर गिरा हुआ हर आदमी मरा हुआ है? क्या माथा टेकने वाला हर आदमी शब्द से मरा हुआ है?

गुरु कलगीधर पिता जी ने अपनी रचना में बहुत सुंदर उदाहरण दी है कि जो झुकने वाले हैं, सजदा करने वाले हैं, असल में वे जीते-जी मर जाते हैं और जो आदमी केवल शारीरिक रूप से झुका है, आंतरिक रूप से नहीं झुका, क्षमा करना, यदि वह अंदर से मरा नहीं तो बाहर के तन का झुकना उसका, कोई अर्थ नहीं रखेगा। हजूर का हम एक कबित्त पढ़ते हैं, जिसका तात्पर्य है कि अनेकों लोग सजदे में झुकते हैं। मस्जिद में आप देखें, वहां नमाज़ पढ़ते हैं, वे बार-बार घुटनों के बल ज़मीन पर अपने मस्तक को रगड़ते हैं। सजदा वे भी कर रहे हैं।

गुरुद्वारे में हम आते हैं तो आते समय सतिगुरु के चरणों में पहले खड़े होकर हम माथा टेकते हैं। अनेकों लोग ऐसे हैं जो तोपें चलाते हैं, गोलियां चलाते हैं, वे ज़मीन पर लेट कर ही चलाते हैं। तीर भी चलाना हो तो झुक कर ही तीर चलाते हैं। अब क्या उनका झुकना हम कहेंगे कि इनके सीने में शब्द लग गया है तो धरती पर गिर पड़े हैं। नहीं, साहिब कहते हैं कि एक नशेड़ी उसे नशा नहीं मिलता, उसे खाने के लिए नशा नहीं मिलता और सारा दिन अपने शरीर को गिरा कर पड़ा रहता है, क्या उस नशेड़ी का सिर गिराना इस बात का प्रतीक है कि इस आदमी का अंदर प्रभु के चरणों में झुक गया है? पोस्ती (नशेड़ी) को नशा न मिले तो वह सिर गिराता है और कभी पहलवान को अखाड़े में उतरते हुए को देखो। जब कहीं वह वर्जिश करता है, वह अपना अभ्यास करता है तो वह डंड निकालता है। पहलवान जब डंड निकालता है तो अपनी नाक को ज़मीन के साथ रगड़ता है। क्या उसका नाक ज़मीन पर रगड़ना प्रभु के चरणों में सजदा करना है? नहीं। साहिब कहते हैं कि शिकारी झुकते हैं, पोस्ती झुकते हैं, पहलवान डंड निकालते समय झुकते हैं। रोगी की तरफ नज़र मार कर देखो,

सारा दिन अपना मुँह ऊपर की ओर करके बैठा रहेगा। अब जब मुसलमान भाई नमाज़ पढ़ते हैं तो हम उनकी मुद्रा को देखें। अपने हाथ उन्होंने सीधे किए हैं और आकाश की ओर वे अपने मुँह को उठा कर नमाज़ पढ़ते हैं। अब रोगी ज़मीन पर पड़ा है या चारपाई पर पड़ा है और वह रोगी हाथ मारे ऊंचे-ऊंचे दुख में आसमान की ओर मुँह करके बैठा है, इसका मतलब यह नहीं कि रोगी का आसमान की तरफ मुँह करना प्रभु की दुआ बन गया है।

अब उपदेश यदि गुरु सुनाता है तो उपदेश का असर होना भी बहुत ज़रूरी है। यदि गुरु का उपदेश सुना भी और सुन कर उसने असर न किया तो फिर कबीर साहिब ने अपनी रचना में एक बहुत सुंदर उदाहरण दी है। कहते हैं कि मानो कोई जिज्ञासु अपने सतिगुरु के दर पर आया और गुरु ने उस जिज्ञासु को उपदेश भी दृढ़ करा दिया। अब गुरु का उपदेश जिज्ञासु ने सुन लिया। एक कान से सुना और दूसरे कान से उसने उपदेश को बाहर निकाल दिया। फिर कहते हैं कि इसमें कभी भी हम न कहें कि पता नहीं शायद गुरु की बाणी में रस नहीं रहा, गुरु के शब्द में ताकत नहीं रही, पता नहीं गुरु के मंत्र में ताकत नहीं रही। कबीर साहिब कहते हैं कि शब्द में, बाणी में, मंत्र में, गुरु के उपदेश में ताकत है, लेकिन यदि एक बांस की मोरी में हम एक तरफ़ से फूंक मारें और दूसरी तरफ़ से फूंक निकल जाए तथा बांस की मोरी कहे जाए कि फूंक मारने वाले में दम नहीं तो याद रखना कि बांस की मोरी में ही ताकत नहीं कि उस फूंक को अपने अंदर टिका सके। सतिगुरु के अमृत वचनों में कबीर साहिब कहते हैं :

कबीर साचा सतिगुरु किआ करै

अब गुरु क्या करेगा यदि सिक्ख के अंदर उपदेश असर ही न करे। इसमें गुरु का कोई दोष नहीं।

कबीर साचा सतिगुरु किआ करै जउ सिखा महि चूक।।

(अंग १३७२)

यदि मेरे अपने अंदर कमज़ोरी है और मैं कहता जाऊं कि नहीं जी, गुरु का उपदेश असर नहीं करता तो यह ठीक नहीं। याद रखना, आज पानी बरस रहा है। पानी सभी जगहों पर बरसेगा और जो स्थान ऊंचे हैं, पहाड़ियां हैं, पहाड़ियों पर मूसलाधार वर्षा हुई तथा जो पहाड़ी धूप निकलने के बाद यह कह दे कि लो जी, वर्षा में ही ताकत नहीं थी तो अज्ञानता होगी। वर्षा ने तो तेरे शिखर पर छहबर लगा दी, लेकिन बदकिस्मती यह है कि तेरे पास पानी टिकाने वाला पात्र ही नहीं।

बाबा फ़रीद जी की रचना में से हम पढ़ते हैं :

फरीदा गरबु जिन्हा वडिआईआ धनि जोबनि आगाह।।

(अंग १३८३)

अब अपने अंदर कमी है। गुरु उपदेश देता है लेकिन मैं अपनी हउमै छोड़ने को तैयार नहीं, क्योंकि मेरे पास बहुत समझ है। समझ की जगह पर रस नहीं आता। गुरु अरजन साहिब जी का आप एक वचन पढ़ते हो :

बहुतु सिआणप जम का भउ बिआपै।। *(अंग २६५)*

यदि कोई आदमी ज़्यादा सियाना है, सियाने आदमी को यम का भय खाता है, क्योंकि वहां सियानप नहीं चलती। हज़ूर कह रहे हैं कि :

फरीदा गरबु जिन्हा वडिआईआ धनि जोबनि आगाह।।
खाली चले धणी सिउ

प्रभु के बिना इस तरह दुनिया से खाली चले गए :

टिबे जिउ मीहाहु।। *(अंग १३८३)*

जैसे पहाड़ का टीला वर्षा होने के बाद फिर खाली का खाली। जो शब्द में मर जाते हैं वहां साहिब कहते हैं :

कबीर गूंगा हूआ बावरा बहरा हूआ कान।। *(अंग १३७५)*

जिसके ऊपर शब्द ने असर किया उसकी जुबान चली गई, वह बहरा हो गया, अंधा हो गया, पैरों से चल नहीं सकता, अपाहिज हो गया, हाथों में काम नहीं कर सकता, हाथ उसके लूले हो गए।

कबीर गूंगा हूआ बावरा बहरा हूआ कान।।
पावहु ते पिंगुल भइआ मारिआ सतिगुर बान।। *(अंग १३७४)*

गुरु ने अपना पैना तीर मारा। शब्द के तीर से आँखों से अंधा, कानों से बहरा, पैरों से अपाहिज, जिह्वा से गूंगा, हाथों से लूला और अपने जीते-जी वह मर गया। अब सच जानो, जब आदमी अहंकार में जीता है, तब तपाक-तपाक उसकी ज़ुबान बोलती है, जब उसका अंदर किसी रस में जुड़ना शुरू हो जाए तब ऐसा प्रतीत होता है कि इस आदमी के मुँह में जुबान है ही नहीं। सच जानो, गुरु ने उसके अंदर को शब्द का इतना रस दिया कि उस आदमी को बोलना भूल ही गया। बोलते हुए ऐसे प्रतीत करता है जैसे अंदर सूखता है। दुनिया की नज़र में गूंगा है लेकिन चुपचाप वह परमात्मा के नाम का रस ले रहा है। अब मनुष्य का मुँह बिलकुल गूंगा हो गया।

भाई साहिब भाई गुरदास जी ने एक वचन किया है। कहते हैं कि बावरा, गूंगा, अपाहिज, अंधा, लूला इसके कुछ ख़ास भाव हैं। सांसारिक रूप से उसकी जुबान तब गूंगी हो गई जब उसे अंदर का रस आ गया। जो जुबान के तौर पर गूंगे हो गए, असल में उनके होंठ बंद हुए भी वे अपनी अंतर-आत्मा में नाम का रस ले रहे हैं। साहिब ने फ़रमाया कि अब वह चुप है, लेकिन वाहिगुरु गुरु-शब्द के प्याले को लबों के साथ लगाकर वह अंदर का रस ले रहा है। साहिब कहते हैं कि गूंगा हो गया, रसना अन-रस से ऊपर उठ गई। बाबा फ़रीद जी ने कानों से बहरे होने का एक प्रमाण दिया। कहते हैं :

फरीदा इहु तनु भउकणा

शरीर का काम था बोले जाना, इंद्रियों का काम है बोले जाना। कान सुनते हैं तथा सुने हुए का मन पर असर होता है और मन फिर

आगे से कर्म करने के लिए प्रेरित करता है। बाबा जी कहते हैं कि भाई असल में जो तन दिन-रात ख़्वाहिशों के लिए, इंद्रिय-सुखों के लिए भौंकता था, हमने इसकी आवाज़ सुननी ही बंद कर दी। क्यों? कहने लगे कि अपने कानों में उपदेश के डाट देकर इन्हें ऐसे बहरे बना दिया कि अब इन कानों पर इस संसार के बोलों का कोई असर नहीं।

फरीदा इहु तनु भउकणा नित नित दुखीऐ कउणु।।
कंनी बुजे दे रहां किती वगै पउणु।। *(अंग १३८२)*

जब यह तन संसार की इच्छाओं वाली बातों से, संसार के रस-कस वाली बातों से, संसार की निंदा-चुगली से ऊपर उठ जाए तो सच जानो, वह सिक्ख जीते-जी कानों से मर चुका है।

कबीर गूंगा हूआ बावरा बहरा हूआ कान।। *(अंग १३७४)*

वह बावरा जो शब्द है यह बहुत भावपूर्ण शब्द है। बावरे का शाब्दिक अर्थ है, पाग़ल, दीवाना। जब गुरु का उपदेश हृदय में घर करता है तो गुरु के उपदेश कमाने वाले को संसार के लोग पाग़ल ही कहते हैं। हमारे ज्ञान को समझ का स्तर है। प्रत्येक आदमी का स्तर है ज्ञान को समझने के लिए। दो तरह के इंसान हैं, जिन्हें हमारे समाज ने दीवाने, शौदाई, पाग़ल, बावरे, मूर्ख शब्द दिए। एक तो वे आदमी हैं जो सचमुच अपना दिमागी संतुलन गंवा बैठे तथा जो मानसिक तौर पर ठीक न रहे उसे हम कहते हैं शौदाई है, क्योंकि उस पाग़ल की बातें जो हैं, वह इतनी धीमी बात कहता है कि हमें बात की समझ नहीं पड़ती। वह हमारे पैरों के नीचे से निकल जाती है। शौदाई हो गया, तन के वस्त्र फाड़े जाए, सारा दिन यूँ ही बोले जाएगा। अपने-पराए की पहचान कोई नहीं। फिर हम उसकी हरकतों को देखकर कह देते हैं कि पाग़ल हो गया। लेकिन याद रखना, एक शौदाई, पाग़ल, बावरा, मूर्ख, दीवाना वह है जिस आदमी का दिमागी संतुलन ख़राब हो गया तथा दूसरे वे बावरे, मूर्ख, पाग़ल हैं जो रहते संसार में हैं लेकिन सच जानना शरीर संसार में रखकर सुरति उनकी

निरंकार के चरणों के साथ जुड़ी है। जब वे कोई बात करते हैं तो वे क़रेंगे गम्भीर ज्ञान की बात, तब समझ हमारे नहीं पड़ती।

यही तो आदमी की एक त्रासदी है कि धर्म की दुनिया की जब कोई उच्च स्तर की बात करता है और हमें समझ न पड़े तो ऊंची बात करने वाले को लोग शौदाई कह देते हैं। अब मानो एक आदमी सियाना है और 100 आदमियों के पास ज्ञान नहीं, तो 100 आदमी अपनी हउमै में उसे पाग़ल बना देंगे, परन्तु कभी यह नहीं स्वीकार करेंगे कि सांसारिक तौर पर पाग़ल हम हैं। जब गुरु के उपदेश ने अंदर को काट दिया तो कहने लगे बावरा हो गया। कई बार अपने भी उस बात को समझते नहीं, परिवार के लोग भी शौदाई कहते हैं।

अब शब्द में मरे जो सज्जन हैं उन्हें सिमरन के बिना दूसरी और कोई बात नहीं। हर समय वे शब्द में जुड़े रहते हैं। जो शब्द में मर गए, उनके बारे में गुरु अंगद देव जी ने एक शब्द कहा है। हालांकि हमारे इंद्रे कभी भी तृप्त नहीं हुए।

भाई गुरदास जी ने शब्द कहे थे :

अखी वेखि न रजीआ बहु रंग तमासे।

आज तक आँखें तृप्त नहीं हुईं, आँखों की ज्योति मर जाती है :

उसतति निंदा कंनि सुणि रोवणि तै हासे।
सादीं जीभ न रजीआ करि भोग बिलासे।
नक न रजा वासु लै दुरगंध सुवासे।
रजि न कोई जीविआ कूड़े भरवासे।
पीर मुरीदां पिरहड़ी सची रहरासे।।९।। *(वार २७)*

बाबा गुरु अंगद साहिब का एक वचन आता है। कहते हैं— **अखी बाझहु वेखणा।** जो शब्द में मरे हैं वे आँखों के बिना प्यारे के दीदार करते हैं :

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा।।

वे संसार की बातों के बिना अंदर का नाद सुनते हैं।

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा।।
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा।।

सुरति के मार्ग के साथ चलते हैं। हाथ के बिना वे अपने कर्म किए जा रहे हैं।

जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा।।
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा।। *(अंग १३९)*

जो जीते-जी मर गए उन्होंने खसम के हुक्म को पहचाना। भाई गुरदास जी कहने लगे कि शब्द में जो मरे हैं:

मुरदा होइ मुरीदु न गली होवणा।
साबरु सिदकि सहीदु भरम भउ खोवणा।
गोला मुल खरीदु कारे जोवणा।
ना तिसु भुख न नीद न खाणा सोवणा।
पीहणि होइ जदीद पाणी ढोवणा।
पखे दी तागीद पग मलि धोवणा।
सेवक होइ संजीदु न हसणु रोवणा।
दर दरवेस रसीदु पिरम रसु भोवणा।
चंद मुमारखि ईद पुगि खलोवणा।।१८।। *(वार ३)*

मेरे धन्य गुरु अमरदास कृपालु जी ने आज के अमृत वचनों में यह कृपा की है:

सबदि मरै सोई जनु सिझै

जो शब्द में अपने आप को मार दे, अपनी इच्छाओं, अपनी ख़्वाहिशों को मार दे तो याद रखना, शब्द में जब कोई मरता है तब अच्छे प्रकट होने वाले ख़्याल ही मिट जाते हैं, क्योंकि शब्द उसके लिए ख़ुद जीवन बन जाता है। **सोई जनु सिझै,** वे अपनी ज़िन्दगी में सफल हो गए।

बिनु सबदै मुकति न होई।।

शब्द की कमाई के बिना कभी कोई मुक्त नहीं हुआ। **भेख करहि,** यदि शब्द को छोड़ कर कोई बाहर के भेख (भेस) करे तो साहिब कहते हैं :

.....बहु करम विगुते भाइ दूजै परज विगोई।।

जो आदमी शब्द को छोड़ कर कर्मकांडी हो गए वे इनमें ही खचित हो गए।

नानक बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ जे सउ लोचै कोई।। ३२।।

जितनी मर्ज़ी कोई इच्छा रखे कि गुरु के बिना नाम मिल जाए, लेकिन गुरु के बिना, सतिगुरु के बिना कभी भी नाम नहीं मिल सकता। नाम का दाता केवल सतिगुरु है। जितने भी ऋषि, धर्मात्मा, महात्मा आए हैं, आखिर उन्होंने गुरु धारण किया तथा गुरु धारण करने में से उन्हें कोई रूहानियत की दिशा मिली। रूहानियत की मंज़िलें गुरु के बिना तय नहीं हो सकतीं। जब गुरु मिल जाए, समझो प्रभु मिल गया। आज इतनी ही विनतियां स्वीकार करना। हुई बेअंत भूलों की क्षमा!

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

कतिकि करम कमावणे

परम सम्मानयोग्य चवर तख़्त के मालिक साहिब सतिगुरु गुरु ग्रंथ साहिब कृपालु जी की पावन पवित्र हजूरी में शोभायमान सतसंगी-जनो! आज कार्तिक का महीना आरम्भ हुआ है। सारे महीने में से दो बातें बहुत स्पष्ट हैं तथा विचार भी हमने आज के दिन से संबंधित ही करनी है। पहला वचन कि इंसान जो तू कर्म कमा रहा है, अपने किए हुए कर्मों का दोष दूसरे के सिर न थोप, लेकिन आखिर में कृपा की कि यदि तूने कर्म बुरे कर लिए हैं तो कार्तिक के महीने में गुरु की संगत का आसरा ले, तेरे अंदर के सारे चिंता-ग़म ख़ुद ही ख़त्म हो जाएंगे।

सतिगुरु ने दो वचन कहे, पहला रोग है, फिर उस रोग की दवा है। रोग क्या है?

कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु।।

क्या कर्म कमाया? कहने लगे :

परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग।।
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग।।
खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग।।
विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज।।

(अंग १३५)

आखिर में एक वचन कहा कि यदि तूने इस चिंता को, इस ग़म को ख़त्म करना है तो एक काम कर कि :

कतिक होवै साधसंगु बिनसहि सभे सोच।।१।।

जो कर्म कमाए हैं, यह रोग लगाए हैं और यदि तू अपने अंदर से चिंता को ख़त्म करना चाहता है तो कार्तिक के महीने में साधसंगत का आसरा ले।

गुरु ग्रंथ साहिब जी की अमृत गुरबाणी में कर्म-फ़िलासफ़ी के संबंध में सतिगुरु ने हमें अनेकों प्रमाण देकर सुचेत किया है कि जो कर्म इंसान करता है, इसे अपने किए हुए कर्म भाव जो बीज़ बो रहा है, इसका फल एक दिन अवश्य काटना पड़ेगा। हम रोज़ गुरु नानक साहिब जी का एक अमृत वचन पढ़ते हैं तथा जपु जी साहिब की बाणाी में वे वचन हैं कि पुण्य तथा पाप केवल कहने मात्र नहीं, जो इंसान कर्म करता है यह कर्म मानो अपनी धरती-शरीर में बीज बो रहा है तथा इम कर्मों की बोयी हुई फ़सल एक दिन ज़रूर काटेगा। साहिब के वचन हम पढ़ते हैं :

पुंनी पापी आखणु नाहि।।

पुण्य और पाप केवल कहने मात्र नहीं।

पुंनी पापी आखणु नाहि।।
करि करि करणा

जो इंसान तू करता है, मत सोच कि तेरे किए हुए ने साथ नहीं चलना।

पुंनी पापी आखणु नाहि।।
करि करि करणा लिखि लै जाहु।।
आपे बीजि आपे ही खाहु।।
नानक हुकमी आवहु जाहु।। *(अंग ४)*

जो तूने बोया है, तुझे अपने बोए हुए को काटना पड़ेगा। समर्थ गुरु की शरण में हम कैसे जाते हैं? जब हम श्लोक पढ़ते हैं तो धन्य गुरु नानक साहिब ने आखिर में जाकर फिर सुचेत किया है कि हे इंसान! देख जो तेरे अच्छे या बुरे कर्म हैं, तेरे कर्मों के अनुसार यदि तेरे कर्म शुद्ध हैं तो प्रभु के पास होगा, नहीं तो अपने किए हुए कर्मों के अनुसार उस प्यारे सतिगुरु जी से तू दूर भी जा सकता है। वचन हम पढ़ते हैं :

चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि।।
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि।। *(अंग ८)*

कोई अच्छे कर्मों के कारण साईं के नज़दीक हो गया और कोई बुरे कर्मों के कारण परमात्मा से दूर चला गया। गुरु ग्रंथ साहिब के अमृत वचनों में आसा की वार में एक पउड़ी हम पढ़ते हैं। धन्य गुरु नानक साहिब ने वहां फिर सुचेत किया है। कहते हैं कि देख ऐ इंसान! जो तेरा तन है, यह तन तो इस तरह है जैसे तू अपने तन ऊपर कपड़े पहनता है। जैसे वस्त्र पुराने हैं और एक दिन तूने इसे उतार देना है तथा सच जान, इस शरीर रूपी कपड़े को भी इस संसार में तूने छोड़ कर जाना है और आगे साथ तेरे जो चलना है, वे तेरे अच्छे या बुरे कर्म हैं। यहां तूने कर्म किए हैं अपने मनपसंद, परमात्मा की दरगाह में तेरा हुक्म नहीं वहां तेरे किए हुए कर्मों के अनुसार फ़ैसला होगा। साहिब का हम वचन पढ़ते हैं :

कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा।।

(अंग ४७०)

इस शरीर को हमने एक दिन दुनिया में छोड़ कर चले जाना है। शरीर आया ज़रूर साथ है लेकिन गुरु के प्यारिओ! शरीर कभी किसी के साथ नहीं गया। गुरु ग्रंथ साहिब की अमृत बाणी में भक्त कबीर साहिब बख्शिश करते हैं कि हम घर के अंदर दीया जलाते हैं। दीये में तेल डाला है और तेल की बरकत से उस दीये में से बत्ती लट-लट जली। तेल डाला और उसकी रोशनी ने हमें प्रकाश दिया, परन्तु बाबा जी कहते हैं कि जितनी देर तक दीये में तेल है उतनी देर तक उसकी बत्ती लट-लट करके जलेगी, परन्तु जिस समय तेल ख़त्म हो गया उसी समय बत्ती बुझ जानी है तथा जिस समय बत्ती बुझ गई, जिस घर के प्रकाश में तेरे सारे अपने प्रतीत होते हैं, अंधेरे में प्रवेश करके देखना, तेरे अपने तन की परछाईं भी साथ छोड़ जाएगी।

मैं हमेशा विनती करता हूं कि जो शब्द हम बारहमाह में पढ़ते हैं, क्या संक्रांति का अर्थ केवल माथा टेक कर जाना है? क्या संक्रांति

का अर्थ केवल महीने का नाम सुनना है ? नहीं, गुरसिक्खो! उस दिन कहे हुए वचनों को ज़िन्दगी में धारण कर लें। बारह महीने हैं और यदि एक-एक वचन भी महीने में कमाया जाए तो बारह महीनों में इंसान, तुझे परम आनंद की प्राप्ति हो सकती है। दीया जले तो उसके प्रकाश में तन की परछाइयां हैं, दीया बुझ जाए तो परछाइयां भी तन के अंधेरे में साथ छोड़ गईं तथा धन्य गुरु ग्रंथ साहिब कहते हैं कि शरीर मानो एक दीया है। परमात्मा ने श्वासों का तेल डाला है, जीवन की ज्योति जलेगी। जितनी देर तक श्वासों का तेल है, जिस दिन श्वासों का तेल ख़त्म हो गया, जीवन की ज्योति बुझ गई तथा जिस तन को तू अपना समझता है, ज्योति बुझने की देर है कि बहनों-भाइयों ने तेरा साथ क्या देना है, तेरे अपने तन की परछाईं ने भी साथ छोड़ जाना है। कबीर साहिब कहने लगे :

जब लगु तेलु दीवे मुखि बाती तब सूझै सभु कोई।।
तेल जले बाती ठहरानी सूंना मंदरु होई।।
रे बउरे तुहि घरी न राखै कोई।।
तूं राम नामु जपि सोई।। *(अंग ४७७-७८)*

महाराज! मेरा तो परिवार बहुत बड़ा है। जन्म देने वाली माँ मेरे साथ है, मेरा जीवन-साथी मेरे साथ है, मेरा भाई मेरे साथ है और मेरे गुरु ग्रंथ साहिब ने निर्णय किया है कि ऐ इंसान! माँ जन्म दे सकती है, माँ अपने तन का अमृत दूध तुझे दे सकती है, लेकिन जिस दिन मृत्यु आई तो माँ भी केवल घर की दहलीज़ तक ही रोती हुई जाएगी, परन्तु याद रखना, मरे हुओं को माँ भी गोद में नहीं समा सकती।

जिस दिन अनंद कारज होता है, कीर्तनिए गुरसिक्ख अनंद कारज कराएं, कोई प्रचारक बोले कि एक शब्द हम कहते हैं कि आज के बाद आप एक-दूसरे के जीवन-साथी हो। मैं कहता हूँ कि असल में अनंद कारज वाले दिन भी हमें यह बात समझा दी जाती है कि आप एक-दूसरे के जीवन-साथी हो, आप मरन-साथी नहीं हो, क्योंकि कपड़-रूप यहां छोड़ कर जाना है।

देहुरी बैठी माता रोवै खटीआ ले गए भाई।। *(अंग ४७८)*

भाई चारपाई उठा कर चले गए। आज तक हमारा स्वभाव है कि कार्तिक के महीने में जो कर्म करता है, कर्म तेरे साथ निभने हैं, संसार के लोग-परछाइयां साथ नहीं निभनी। भाई बांहें हैं और जिस समय आदमी की अर्थी तैयार होती है तो सबसे पहले जिन्हें हम बांहें कहते हैं, ये बांहें ही तो अर्थी को उठाकर अपने कंधों पर रखती हैं। कभी किसी दुश्मन ने अर्थी नहीं उठाई। साहिब कृपालु जी ने अमृत बाणी में कहा है :

तिन्हा पिआरिआ भाईआं अगै दिता बंन्हि।।
वेखहु बंदा चलिआ चहु जणिआ दै कंन्हि।। *(अंग १३८३)*

आप बाणी को समझने वाले हो। साहिब के वचन थे :

देहुरी बैठी माता रोवै खटीआ ले गए भाई।।
लट छिटकाए तिरीआ रोवै

औरत रो रही है, लेकिन अंदर वाला प्यारे !

हंसु इकेला जाई।। *(अंग ४७८)*

जाने वाला अकेला है। हज़ूर ने वचन किए :

कतिकि करम कमावणे

सबसे बुरा कर्म क्या है जिसका फल हमें भोगना पड़ता है? उस पउड़ी के अर्थ मैं करता जाऊं कि :

कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा।।
मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा।। *(अंग ४७०)*

बुरा कर रहा है चाहे अच्छा कर रहा है, अपने किए हुए को तूने ख़ुद ही पाना है।

हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा।।

(अंग ४७१)

इस धरती में तो मनमर्ज़ी के हुक्म चलाए, लेकिन क्या परमात्मा के घर में इंसान का हुक्म चल सकता है? सवाल ही नहीं पैदा होता। मेरे धन्य गुरु नानक साहिब जी ने प्रतिदिन हमें जपु जी साहिब की बाणी में एक ऐसी पउड़ी बख्शिश के रूप में दी है जिसे हम टिक कर पढ़ें। गुरमुखो! जब हम गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी पढ़ते हैं तो मैं अर्ज़ किया करता हूं कि बाणी को इस तरह पढ़ो जैसे पिता की गोद में बैठ कर पिता पुत्र के साथ बातें करता हो। बाणी को मजबूरी-वश नहीं पढ़ना। बाणी तो मेरे गुरु नानक साहिब का हृदय है। जिस आदमी ने गुरु नानक साहिब के हृदय का आनंद लेना है, उनके गले मिलने का प्यार लेना है तो वह अपने अंदर को टिकाकर गुरु की बाणी का अभ्यास करे।

हजूर ने हमें अमृत वेले जपु जी साहिब की बाणी बख्शिश के रूप में दी है। उसमें एक पउड़ी द्वारा बता दिया है कि अपने अंदर के भ्रम को निकाल ले। यहां मनमर्ज़ी के हुक्म चलेंगे, लेकिन प्यारे! साईं के घर में नहीं। यदि दाता जी, किसी के पास धन की बहुतात हो, किसी के पास अपनी बांहों में बाहुबल हो, किसी आदमी का लाखों लोग हुक्म मानें, तो क्या परमात्मा के घर में उसका हुक्म नहीं चलेगा? कृपालु सतिगुरु ने साथ में उदाहरण दे दी। कहने लगे कि ऐ इंसान! इस धरती का बच्चा-बच्चा तेरे हुक्म को माने, तेरे नाम के सिक्के चलें, कोई तेरा विरोध न करे, लेकिन यदि 'सतिनामु वाहिगुरु' तेरे हृदय में नहीं, शुभ कर्म तेरे पल्ले नहीं तो प्रभु के दर पर तेरी चींटी जितनी कीमत नहीं पड़नी। बाबा जी के वचन हम पढ़ते हैं :

जे जुग चारे आरजा

यदि आदमी की उम्र चार युग हो जाए।

होर दसूणी होइ ।।

चार को दस के साथ गुणा कर दे, 40 गुना उम्र हो जाए।

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ।।

नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ।। *(अंग २)*

सारी दुनिया उसके साथ चले। भीड़ कभी भी धर्म नहीं होती। यदि हम सोचते हैं कि फलां आदमी के धर्म के पीछे बहुत भीड़ है तो यह भ्रम है। मैं दिल्ली की एक उदाहरण आपको देता हूं। साहिब धन्य गुरु हरिक्रिशन साहिब इस दिल्ली की धरती पर आए। बाला साहिब मेरे साहिब के पवित्र तन का सस्कार किया गया। धन्य गुरु हरिक्रिशन साहिब जिस दिन आए हैं, सन् 1664 को, मेरे कृपालु दाता जी ने अपने तन को समेटा है। 8 वर्ष कुछ महीने की आयु है। धन्य गुरु हरिक्रिशन साहिब जब आए हैं तो गुरु कलगीधर जी ने उसके बाद एक वचन गुरु हरिक्रिशन जी के लिए कहा है। हम रोज़ अरदास करते हैं, देखो, गुरु रामदास जी के दर पर जाते हैं अमृतसर साहिब। पुराने बुजुर्ग एक बात कहते थे कि जब वे हरिमंदर साहिब माथा टेकते थे तो उनकी रसना पर तीन शब्द होते थे। ये शब्द थे—पहला धन्य गुरु रामदास, दूसरा दर पर गिरे हुओं की रखना लाज और तीसरा वचन करते थे कि किसी का मोहताज न करना। उनकी भावना थी। उन्होंने उस परिक्रमा में माथा टेकना तथा ये तीन शब्द कहने। जब सतिगुरु ने शब्द लिए, उन्होंने पहला वचन किया कि :

प्रिथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लईं धिआइ।।

गुरु नानक साहिब जी को याद करना किया। गुरमुखो! जब गुरु नानक साहिब जी का नाम आता है, आदि गुरु हैं, धुर दरगाह से गुरु बन कर आए हैं, उनको याद करने की बात की। आगे फिर शुरू किया कि :

फिर अंगद गुर ते अमरदासु रामदासै होईं सहाइ।।

सहायता मांगी। फिर :

अरजन हरगोबिंद नो सिमरौ स्री हरिराइ।।

पहले जपा, फिर सहायता, फिर याद किया तथा जब गुरु हरिक्रिशन सहिब जी का नाम आया तो वहां एक पंक्ति पूरी गुरु हरिक्रिशन साहिब

के लिए कही। वह पंक्ति थी कि सिक्खो! गुरु हरिक्रिशन साहिब जी के दर्शन करें तो दुख कट जाते हैं तथा आज के पढ़े-लिखे वर्ग ने कहना था कि दर्शन तो उन्होंने किए जो सन् 1664 में थे, अब दर्शन कैसे? गुरु गोबिंद सिंघ जी कहते हैं कि तू रसना से जप लेना और सच जानना, जपने वालो के भी दुख कट जाते हैं।

स्री हरिकिशन धिआईऐ जिस डिठे सभि दुखि जाइ।।

सतिगुरु सन् 1664 को अपने शारीरिक चोले को यहां समेट रहे हैं। प्यारो! जिस दिन दुख काटने की बात चली और आज तक हम कहते हैं कि हज़ारों लोगों की चारपाइयां मैदान में भी रख दी गईं तो गुरु हरिक्रिशन साहिब जी की अमृत-दृष्टि ने लोगों के तन के रोग खंडित कर दिए, क्योंकि गुरु जी का बिरद है कि जीव का भला करने के लिए वे कोई युक्ति भी इस्तेमाल कर सकते हैं। सुखमनी साहिब हम पढ़ते हैं, सच्चे पातशाह कहते हैं कि दर्शन भी दुख काटते हैं। वचन सुन कर भी रहमत मिलती है, चरण स्पर्श करके भी कृपा मिलती है तथा बाबा जी के हम वचन पढ़ते हैं :

सफल दरसनु पेखत पुनीत।। परसत चरन गति निरमल रीति।।
भेटत संगि राम गुन रवे।। पारब्रहम की दरगह गवे।।
सुनि कर बचन करन आघाने।। मनि संतोखु आतम पतीआने।।

(अंग २८७)

यह सारी गुरु-कृपा करने की युक्ति है। जिस दिन गुरु हरिक्रिशन साहिब ने रहमतें बरसाईं, उस दिन हज़ारों लोग दिल्ली से आरोग्यता लेकर गए। 11 वर्ष केवल व्यतीत हुए, आरोग्यता लेने वाले सारे धर्मियों की भीड़ नहीं, अपने स्वार्थ को, अपने सुख की खोज में आए। उस दिन हज़ारों की संख्या में आए तथा जिस दिन इसी धरती पर ग्यारह वर्ष पश्चात मेरे धन्य गुरु तेग़ बहादर जी ने शहादत का जाम पिया, उस दिन मात्र चार-पांच निकले। जो एक शीश लेकर चला गया तथा दूसरे धड़ लेकर चले गए। भीड़ हज़ारों की थी लेकिन धर्म कमाने वाले पांच-सात ही थे।

बाबा जी ने बाणी में इसका निर्णय किया है। गुरसिक्ख जो बाणी पढ़ते हैं वे कभी भी भ्रमों में नहीं पड़ेंगे। भ्रमेगा वह जो गुरु के शब्द से दूर चला जाएगा। जिसके चारों ओर गुरु के शब्द की चौंकी है उसे प्यारिओ! भ्रमणे की आवश्यकता ही नहीं।

साहिब कृपालु जी ने कृपा की है। यह कभी भी न सोचें कि अमुक धर्म के पीछे बहुत लोग हैं, नहीं। गुरु साहिब कहते हैं :

पूज लगै पीरु आखीऐ सभु मिलै संसारु।।
नाउ सदाए आपणा होवै सिधु सुमारु।।

सारे लोग उसकी जै-जैकार करें, मगर प्यारो! यदि साईं के दर पर प्रवान नहीं तो उस भीड़ को क्या करेंगे?

जा पति लेखै ना पवै सभा पूज खुआरु।। *(अंग १७)*

जो पूजा कराते रहे, सारी ख़ुआरी पल्ले पड़ गई।

मैं अपने विषय पर आऊँ कि :

हुकम कीए मनि भावदे

बाबा नानक जी कहते हैं कि कौन से हुक्म किए?

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ।।
नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ।।
चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ।।
जे तिसु नदरि न आवई ता वात न पुछै के।।

महाराज ! यहां तो बादशाही है। कहने लगे :

कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे।। *(अंग २)*

यहां बादशाह है लेकिन वहां कीड़ों में भी छोटा कीड़ा। हजूर वचन कर रहे हैं, जो तू कर्म कर रहा है :

मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा।।
हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा।।
नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा।।

सतिगुरु कहते हैं, प्यारे!

करि अउगण पछोतावणा।। *(अंग ४७०-७१)*

प्यारिओ! हम कई बार सोचते हैं कि कर्म भी तो परमात्मा करा रहा है। यह एक बहुत पेचीदा मसला है। गुरमति ने यह बात कही है कि हम कर्म करने में स्वतंत्र हैं लेकिन भोगने में परतंत्र हैं। यहां मैं एक उदाहरण देनी चाहता हूं। गुरमुखो! हम शब्द के साथ जुड़कर कभी देखें कि गुरु सज्जन कैसा है?

'गुरु नानक प्रकाश' में कवि संतोख सिंघ ने तथा 'गुरु नानक चमत्कार' में भाई साहिब भाई वीर सिंघ जी ने बहुत सुंदर उदाहरण दी है। गुरु नानक साहिब एक नगर में गए। गांव सारे का सारा लुटेरों का है। इनका व्यवसाय है आए हुए आदमी को लूटना और लूटने से पहले उसका कत्ल कर देना। गुरु नानक साहिब कृपालु गए और चेहरे पर नूर चमकें मारता है। हज़ूर के दर्शन किए तो ऐसे प्रतीत हुआ कि कोई हीरों का व्यापारी आया है, कोई कीमती मोतियों का जौहरी है। इसके माथे का नूर बताता है कि इसके पास बहुत ख़ज़ाना होगा। धन्य गुरु नानक साहिब जी को उनमें से एक सज्जन अपने घर ले गया। वृत्ति मलिन थी। साथ वालों ने कहा कि देखना, व्यापारी बहुत बड़ा है, यूं ही न कहीं जाने देना। जो कुछ इसके पास से मिला, ईमानदारी से सारे गांव में बांट देना।

रात इसने हज़ूर को आराम करने के लिए कहा। पहले कहा, भोजन छकोगे? गुरु साहिब कहते हैं कि बस, एक बार छक लिया है, उसका ही आधार बना कर चले हैं। पूछा कि कौन-सा भोजन? गुरु जी कहते हैं कि नाम का भोजन छका है, उसे आधार बनाया है। कहने लगा कि विश्राम करोगे? गुरु जी कहते हैं कि तन के विश्राम की बात नहीं, मन हमेशा विश्राम में ही रहता है। कहने लगा, आप टिकोगे? हज़ूर ने कहा, स्थिरता बताने की ज़रूरत नहीं, अंदर चंचल मन को गुरु के शब्द ने स्थिरता दी है। वह कुछ बोले तथा गुरु साहिब अंदर के उत्तर दें। उसके

मन में आया कि वेपरवाह व्यापारी है, रात को सोएगा तो प्रभात समय इसका कत्ल करके सब कुछ छीन लूंगा।

हजूर चौंकड़ी मार कर बैठे रहे। सूर्योदय के साथ वह ठग उठा। बाबा जी भिन्नी रहिनड़ीए अपने मार्ग पर चल पड़े थे। गांव के लोग आए, कहने लगे कि ला हमारा हिस्सा, रात जो व्यापारी से लूटा है। उसने कहा, नहीं, दुहाई रब्ब की, मैंने क्या लूटना था, मुझे तो नींद ने ठग लिया। मेरे सोते हुए वे कहीं चले गए।

भाई वीर सिंघ जी ने यहां बहुत भावपूर्ण वचन कहे हैं मात्र एक श्रद्धा बनाने के लिए। हे मन! देख, दुनिया में बहुत सज्जन मिलेंगे। यदि सतिगुरु को सज्जन बना ले तो सतिगुरु सज्जन प्रभु की दरगाह में भी तेरे सामने खड़ा है। भाई साहिब भाई वीर सिंघ जी लिखते हैं कि सुबह वे लोग इकट्ठे हुए। नौजवानों ने तेज़ धार वाले शस्त्र लिए, जंगल में जाकर गुरु नानक साहिब को घेरा। कहने लगे, रुको! हजूर रुके और शब्द थे कि आपने हमें धोखा दिया है। हंसकर कहने लगे, जिनके श्वास धोखा दे रहे हैं उन्हें किसी दूसरे ने धोखा क्या दे जाना है? तुम्हारी तो ज़िन्दगी तुम्हें धोखा दे रही है। कहने लगे कि हमने आपको ठगना था। हमारा धंधा है कि जो हमारे गांव में काबू आ जाए। हम कई पुश्तों से ठगते हैं। सतिगुरु हंसकर कहने लगे कि ठग रहे हो लेकिन मन तुम्हारे तो भरे नहीं। कहने लगे कि यूं ही फालतू बातें न कर, हमने तुझे भी ठगना है। गुरु जी मुस्करा कर कहने लगे कि ठगने की जुर्रत तो करो। आज तक दुनियादार ही ठगे हैं, कहीं प्रभु की कमाई वाले को ठगने की जाच आ जाए तो जन्मों-जन्मों की भूख चली जाएगी। एक ने आगे बढ़ कर कहा कि हे व्यापारी! हमारे गांव की रस्म है कि हम जिसे लूटते हैं, लूटने से पहले उसका कत्ल किया जाता है। सतिगुरु वहां रुक गए। कहने लगे, जी-सदके कत्ल करो, परन्तु एक बात मेरी भी सुन लो, हम भी घर से निर्णय करके चले हैं कि शरीर को खराब नहीं होने देना। कत्ल बेशक कर दो लेकिन कम से कम हमारे तन को फूंकने के लिए लकड़ियां और आग का प्रबंध ज़रूर करो। गुरु पर भरोसा करें तो गुरु-सज्जन रहमतें करते हैं।

कहने लगे, हम लूटने से पहले चिता की लकड़ियों का भी प्रबंध कर देंगे, मगर आग कहां है? कहते हैं कि सामने ऊंची जगह से धुआं निकलता था। मेरे कृपालु बाबा जी जी ने केवल निकलते हुए धुएं की तरफ उंगली की और कहने लगे कि चले जाओ, सामने जलती हुई आग में से अंगार लेकर आओ तथा आकर हमें मारने के बाद तुमने लूट लेना और हमारे तन को ज़रूर फूंक देना।

कतिकि करम कमावणे

कुछ तो गुरु नानक साहिब के पास रुक गए, कुछ आग लेने के लिए चले गए। जब वहां गए तो किसी के घर के चूल्हे की आग नहीं, जंगल को लगी हुई आग नहीं, वह शमशान घाट था। किसी के तन को घर के सदस्य शमशान भूमि में फूंकने के लिए आए थे। उसकी चिता को लगी आग तो देखते हैं कि उस सज्जन को यम-गण मारते हैं, उसके अंदर की रूह विलाप करती है, मिन्नतें करती है, लेकिन वे छोड़ते नहीं। एक पल के बाद देवगण आ गए। यमदूत उसके सामने झुक गए हैं, उसकी रूह को प्रणाम कर रहे हैं, लेकिन यह दृश्य दिखाई दे रहा है केवल उनको जो ठगने के लिए ठग आए थे तथा उस रूह को जो रूह को ले जा रहे हैं। ये सज्जन रुक गए और रुक कर इन्होंने एक बात पूछी तथा आग भूल गई। कहने लगे कि पहले आप इस रूह को मारते थे और हम कई बार कह देते हैं कि आगे जाकर किसी ने पूछना नहीं। गुरमुखो! जो कर्म कर रहे हैं, ये कर्म अवश्य पूछे जाएंगे।

बाबा फ़रीद जी ने एक वचन कहा है। वे छः उदाहरणें एक श्लोक में दे गए। उनका वचन आता है :

फरीदा वेखु कपाहै जि थीआ जि सिरि थीआ तिलाह।।
कमादै अरु कागदै कुंने कोइलिआह।।
मंदे अमल करेदिआ एह सजाइ तिनाह।। *(अंग १३८०)*

कहते हैं कि तू गर्व करके घूमता है कि मुझे किसी ने पूछना नहीं। इस कपास ने कौन से बुरे कर्म किए हैं? बेलन से बेला, तू

(रूई को) धुनकी में धुना, चरखे पर इसे काता, फिर इसका कपड़ा बनाया, काटा तथा इस भट्ठी पर चढ़ाकर रंगने लगे। कपास का क्या दोष है? कपास ने इतना दुख पा लिया। तिलों का क्या दोष था घाणी में धुने गए? गन्नों का क्या दोष था, कोहलू में पीड़े गए? देख, कोयले का क्या दोष है? पहले लकड़ियां जला कर कोयले बनाए, फिर अंगीठी में रख कर फूंका। सज्जना! इस हंडिया का क्या कसूर है, जो रोज़ आग पर जलती है। ये छः निर्दोष हैं और इतनी सज़ा मिल रही है तथा जो तू बुरे कर्म करता है, काहे के दावे किए बैठा है? एक वचन हम पढ़ते हैं:

फरीदा दरि दरवाजै जाइ कै किउ डिठो घड़ीआलु।।
एहु निदोसां मारीऐ हम दोसां दा किआ हालु।। ३९।।
घड़ीए घड़ीए मारीऐ पहरी लहै सजाइ।।
सो हेड़ा घड़ीआल जिउ डुखी रैणि विहाइ।। ४०।।

(अंग १३७९)

गुरु अरजन साहिब को पढ़ो। कहते हैं:

पापी करम कमावदे करदे हाए हाइ।।
नानक जिउ मथनि माधाणीआ तिउ मथे ध्रम राइ।।

(अंग १४२५)

हम भाई गुरदास जी की एक पउड़ी पढ़ते हैं तथा मैंने अर्ज़ की थी, जब गुरु नानक साहिब की रहमत बरसती है तो तब फिर विरोधी भी चरणों में आ झुकते हैं। हजूर काअबे के नज़दीक गए हैं लेकिन जब हजूर पहुंचते हैं, मक्के की धरती की बात करते हैं। पहले अपने पैरों की ठोकरें मारते हैं मेरी सच्ची सरकार को और जब फिर अंदर की रहमत देखते हैं तो पैरों की ठोकरें मारने वाले उस बापू के चरण पकड़ कर कहते हैं कि ख़ुद तो जा रहा है, कम से कम अपने चरणों की खड़ांव तो दे जा। वहां दोनों के लिए एक सवाल उठा था तथा वह शब्द था भाई गुरदास जी की रचना में से कि:

पुछनि गल ईमान दी काजी मुलां इकठे होई।

इकट्ठे होकर बाबे से धर्म की बात पूछने आए। इसका मतलब कि वे इतने प्रभावित हो गए कि गुरु नानक साहिब से पूछने आए कि सच की झलक पड़ी है आपके पास से, हमें बताओ धर्म क्या है?

वडा सांग वरताइआ लखि न सकै कुदरति कोई।
पुछनि फोलि किताब नो हिंदू वडा कि मुसलमानोई।

गुरसिक्खो! उस आवाज़ को भूलना न जो अरब की धरती पर आई थी। इसका मतलब यह नहीं है कि मैं सिख बन गया, मैंने ककार पहन लिए, मुझे लाइसेंस मिल गया है तथा जितने मर्ज़ी कुकर्म मैं किए जाऊं। गुरु जी के सामने ईमान की बात पूछी कि क्या धर्म बाहर के चिन्हों का नाम है? धर्म बाहर के आडम्बरों का नाम है? आगे से गुरु जी कहते हैं :

बाबा आखे हाजीआ सुभि अमला बाझहु दोनो रोई।

(वार १:३३)

'दोनो रोई' का मतलब अकेले वे नहीं थे। प्यारो! यदि हमारे पल्ले शुभ अमल नहीं तो क्या सिक्ख के पल्ले रोना नहीं पड़ेगा? बाबा जी का वचन सबके लिए एक समान है।

जलती हुई चिता है। यमदूत रूह के सामने झुके हैं। वहां सब कुछ भूल गए और प्रश्न किया कि हम क्या माजरा देख रहे हैं? कई बार हम यह शब्द कहते हैं कि जो चीज़ दिखाई नहीं देती, वह होती नहीं। गुरमुखो! मैंने एक अर्ज़ की थी कि बहुत कुछ ऐसा है जो दिखाई नहीं देता, लेकिन है, हमारे शरीर में से प्रकट होता है। क्रोध का कौन सा रूप है? क्रोध के कौन से वस्त्र हैं? पता ही तब चलता है जब आदमी के होंठ फरकते हैं तथा जुबान से गालियां निकलती हैं। क्रोध दिखाई नहीं देता, प्रकट हो जाता है। काम कभी किसी को दिखाई दिया है? आदमी का तन पीड़ा जाता है। कुकर्म जन्म लेता है तो हम कहते हैं कि काम प्रकट हो गया। चोरी करता है, लालच प्रकट होता है।

प्यारिओ! प्रभु ने इस स्पेस में बहुत कुछ अदृश्य रखा है, लेकिन जिनके अंदर टिक जाए, प्रकट हो जाता है। परमात्मा सर्व-व्यापक हम कहते हैं, फिर सारे संत क्यों नहीं? गुरमुखो! धरती के नीचे सारे पानी है, परन्तु अंजुली वहां की जाती है जहां पानी प्रकट हो जाता है। बाबा जी ने कहा है :

सभनी घटी सहु वसै सह बिनु घटु न कोइ।।
नानक ते सोहागणी जिन्हा गुरमुखि परगटु होइ।।

(अंग १४१२)

पानी सर्व-व्यापक है, लेकिन प्रकट सभी जगहों पर नहीं। जब उन्होंने देखा तो पूछा कि पहले आप मारते थे तो रूह बिलखती थी, परंतु अब हम पीछे हट गए और आप इसे सजदा करते हो, क्यों? आगे से आवाज़ आई कि जिसे आप ठगना चाहते हो, जिसे आप कत्ल करना चाहते हो, याद रखना, आदमी कुकर्मी था, कर्म बहुत बुरे किए, परन्तु इसकी जलती हुई चिता की ओर करोड़ों ब्रह्मण्डों के साईं की उंगली हो गई। जिसकी चिता को एक बार देख ले उसके कर्म कट जाते हैं। सच जानना, बाबे नानक की मात्र कृपा तथा उंगली ने इसके करोड़ों जन्मों के पाप काट दिए हैं। गुरमुखो! यदि इतना भरोसा करें तो गुरु अरजन साहिब वचन करते हैं :

मै मूरख की केतक बात है
कोटि पराधी तरिआ रे।।
गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिआ
से फिरि गरभासि न परिआ रे।। *(अंग ६१२)*

गुरु सज्जन है। जो तू कर्म कर रहा है तुझे भुगतने पड़ेंगे। मगर एक तरीका है। कर्मों का पश्चाताप करके कहीं गुरु के सामने खड़ा हो जा। सच जानना, गुरु तेरे करोड़ों जन्मों के किए हुए कर्म भी जला देगा। उन्हें कहने लगे कि उसे मारो न, उस साईं के जाकर चरण पकड़ लो।

कृपालु दाता जी के पास वापिस आए। आकर कहने लगे, सच्चे पातशाह! हमें बख्श ले। साथ वालों ने कहा कि हमने लूटना था और

आप इसके चरणों में? कहने लगे, नहीं, इसके एक हाथ का इशारा करोड़ों जन्मों के पापियों को पार कर सकता है, तो चरण पकड़ लो, कहीं किए हुए पापों से हम भी बच सकें। गुरु अरजन देव जी फ़रमाते हैं :

तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई।।
मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई।।
तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ।।
नानक नामु मिलै तां जीवां तनु मनु थीवै हरिआ।।

(अंग १४२९)

कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु।।

हम कहते हैं कि कर्म करने में इंसान स्वतंत्र है लेकिन भोगने में परतंत्र है। सतिगुरु ने अमृत बाणी में भी उदहारणें दी हैं तथा भाई वीर सिंघ ने एक बहुत सुंदर उदहारण दी है। वे कहते हैं कि देखो, अंगूर की बेल है। अंगूरों में रस भरा गया। अब उसी अंगूरों की कोई चीनी बनाए, जिसके खाने से आदमी को ताकत मिलती है तथा उसी अंगूरों को गला कर कोई बर्तन में रखकर नशा बना ले तो पीकर अक़्ल मारी जाती है और आदमी यह कहना शुरू कर दे कि देखो जी, दोष अंगूरों का है, क्योंकि इनमें से शराब निकली है। प्रभु ने केवल तुझे अंगूर दिए हैं, शराब बनाना, मीठा बनाना तेरा अपना काम था।

परमात्मा ने तुझे कीमती समय दिया है। बस, सज्जना! तेरे अपने किए कर्मों से तू भक्त भी बन सकता है, अपने किए कर्मों से तू नास्तिक भी बन सकता है। भाई साहिब कहने लगे :

दाखां अते अंगूरी शीशे, कुदरत आप बनाए।
मिठे ते सुआदी रस भर भर, वेलां गल लटकाए।
तूं उह तोड़ मट विच पाए, रख रख के तरकाए।
दुख देवे दारू उस विचों, तूं हन आप चुआए।

प्यारिओ! परमात्मा ने शरीर दिया है। जैसे हम कर्म करते हैं वो कर्मों की बेल, वे कर्मों के बीज, वह कर्मों की फ़सल एक दिन

इंसान को काटनी पड़ेगी, जैसे कर्म हैं। बाबा फ़रीद साहिब ने तो कृपा भी की है। कहते हैं, देख :

फरीदा लोड़ै दाख बिजउरीआं किकरि बीजै जटु।।
हंढै उंन कताइदा पैधा लोड़ै पटु।। *(अंग १३७९)*

तू बुरे कर्म कर बैठा है, फिर क्या कोई रास्ता है कि गुरु के दर पर हम बख़्शे जाएं? हम यह तो प्रमाण देते जाएंगे कि तुझे किए कर्मों की सज़ा मिलेगी। अब मान लो, बंदा तैयार हो गया कि मैं कर्म तो बुरे कर बैठा हूं मगर क्या कोई मेरे लिए बचाव का रास्ता है? तो मेरे धन्य गुरु ग्रंथ साहिब ने बहुत सुंदर उदाहरणें दी हैं।

प्यारो! कभी गुरु तेग बहादर जी के वचन पढ़ो। कहते हैं :

अब मै कउनु उपाउ करउ।।
जिह बिधि मन को संसा चूकै
भउ निधि पारि परउ।।१।।रहाउ।।

मेरे मन के संशय दूर हो जाएं, मैं भवसागर से पार हो जाऊं।

जनमु पाइ कछु भलो न कीनो ता ते अधिक डरउ।।
मन बच क्रम हरि गुन नही गाए यह जीअ सोच धरउ।।१।।
गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ पसु जिउ उदरु भरउ।।
कहु नानक प्रभ बिरदु पछानउ तब हउ पतित तरउ।।२।।

(अंग ६८५)

कर्म मैंने कर लिए हैं, लेकिन मेरे मालिक! तू अपने बिरद-बाणे की लाज रख तो मेरे कर्म काटे जा सकते हैं।

यहां एक भक्त महापुरुष जिनके गुरु ग्रंथ साहिब में वचन हैं, देखो, उसने कमाई की। कर्म चाहे पहले बुरे थे लेकिन सिमरन करने के बाद हमें एक मार्ग बताकर गए। भक्त सधना जी का वचन आता है गुरु ग्रंथ साहिब में। उनका कर्म था कि वे कसाईगिरी का काम करते थे। जब प्रभु की भक्ति की तरफ चले तो कहते हैं कि गुरमुखो! कभी दुनिया की परवाह न करो। मान लो, हम कर्म बुरे कर बैठे हैं और अब उन कर्मों को पश्चाताप करके कह लें। पहली बात कौन

से कर्म हैं जो निषिद्ध हैं? कर्म दो प्रकार के हैं— एक बिद्द हैं तथा एक नखिद्द हैं। बिद्द का अर्थ होता है करने योग्य काम तथा नखिद्द का अर्थ होता है जो काम नहीं करने। यदि गुरमति की भाषा में समझना है तो रहत का मतलब है बिद्द कर्म। यह करने हैं और कुरहत का मतलब है निषिद्ध (नखिद्द) कर्म। यह कभी नहीं करने। भक्त सधना प्रभु की ओर चला लेकिन लोगों ने बख्शा न। सभी ने एक ही बात कही कि कल तक कसाई था, आज बन गया बड़ा भक्त। गुरमुखो! प्रभु की रहमत किसी समय भी बरत सकती है। भक्त सधना जी पर कृपा हुई। कर्म उन्होंने बुरे किए। समाज ने कहा, नहीं, कल तक का कसाई आज कैसे भक्त बन सकता है? भक्त जी ने प्रभु को मुख़ातिब करके वचन कहे कि परमात्मा! मुझे एक बात आप समझाओ। पहले मैं कर्म बुरे करता था तो लोग कहते थे कि कसाई लेखा कहां देगा और आज मैं भक्ति की तरफ़ चला हूं तो लोग कहते हैं कि तू छूटेगा कैसे। तेरे लेखे ही नहीं खत्म होंगे। मुझे एक बात समझा दो कि यदि तेरी भक्ति करके भी कर्मों की ज़ंजीर पड़ी रहनी है तो फिर भक्ति का लाभ क्या है?

कतिकि करम कमावणे भी हैं लेकिन

कतिक होवै साधसंगु बिनसहि सभे सोच।।

यदि संगत में आए तो कर्म दगध भी हैं। वहां उन्होंने वचन किए। कहने लगे कि परमात्मा! चल तेरे कर्मों को तू उस कामी की तरह ही समझ ले। मैं कहता हूं, स्वाद आ गया अरदास करने का प्रभु के चरणों में। फिर उस कुमारथिए ने अरदास की कि परमात्मा! भेष बना लिया लेकिन कर्म अच्छे नहीं। मैं तेरे चरणों में आया। क्या मेरे कर्म विचारेगा? शब्द कहे :

न्रिप कंनिआ के कारनै इकु भइआ भेखधारी।।
कामारथी सुआरथी वा की पैज सवारी।। १।।
तव गुन कहा जगत गुरा

हे जगत् के मालिक वाहिगुरु जी! तेरे कौन से गुण कहूं?

जउ करमु न नासै।।

यदि हमारे कर्मों का नाश नहीं होना, फिर तेरे नाम को ऊंचे-ऊंचे पुकारने का क्या लाभ है? मैं कहता हूं कि भक्ति करे तो ऐसी, जो प्रभु से बातें ही करे, कर्म-कांड न करे।

तव गुन कहा जगत गुरा जउ करमु न नासै।।
सिंघ सरन कत जाईऐ जउ जंबुकु ग्रासै।। १।। रहाउ।।

जंबुक का शाब्दिक अर्थ होता है गीदड़। कहते हैं कि शेर की गुफ़ा में जाकर भी गीदड़ की धमकियों से डरता है तो फिर मुझे बता शेर की ताकत क्या होती है? मैंने कर्म तुच्छ किए हैं और यदि तेरा नाम लिया भी तो उन कर्मों का डर फिर भी हो तो मुझे बता तेरी बख्शिश क्या होगी?

एक बूंद जल कारने चात्रिकु दुखु पावै।।

चात्रिक एक बूंद को तरसता है और गुरमति नकद धर्म है। गुरु कहता है कि तू कमाई कर तो सही। मरने के बाद मुक्ति नहीं, इस घर में तो जीते-जी ही मुक्त हो जाते हैं। कहने लगे :

प्रान गए सागरु मिलै फुनि कामि न आवै।। २।।
प्रान जु थाके थिरु नही कैसे बिरमावउ।।
बूडि मूए नउका मिलै कहु काहि चढावउ।। ३।।

जीते को मुझे तिनके का सहारा बख्श दे। मैं डूब रहा हूं और जिस दिन मर गया फिर किश्तियां लाया तो मैंने किश्तियों को क्या करना है। कहने लगे :

मै नाही कछु हउ नही किछु आहि न मोरा।।
अउसर लजा राखि लेहु सधना जनु तोरा।। ५।। १।।

(अंग ८५८)

मैं कुछ नहीं। तू कृपा कर, मेरे ग़रीब की लाज रख ले। प्यारो! जो कर्म हम करते हैं यह सहने पड़ेंगे। सबसे बड़ा तुच्छ कर्म पता क्या है? गुरु जी ने आज कहा कि :

कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु।।

सबसे बड़ा तुच्छ कर्म है :

परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग।।
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग।।

यदि भूल गया तो :

खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग।।

(अंग १३५)

जो भोग, भोग रहा है, ये कड़वे हो जाएंगे, मगर यदि तू प्रभु से बेमुख न हो और गुरु के सन्मुख रहे तो तेरी झोली में दात पड़ेगी।

गुरमुखो! जिस माली ने पौध संभाल ली, बाग उसको सुगंध देंगे। कबीर जी ने एक बहुत कमाल का शब्द कहा है। कभी न समझें कि बच्चे को केवल उम्र करके, अंदर जो उसकी आत्मा है पता नहीं कितने दिनों का सफ़र कर रहा है। हमारे सामने उसकी आयु पांच वर्ष, दस वर्ष है, लेकिन अंदर वाला आत्मा तो कई जन्मों का चला है। यदि कहीं माँ-बाप ख़ुद किसी सांचे में ढले हों तो बच्चा अवश्य ढलेगा। कबीर जी ने एक वचन कहा है कि जिस तरह बच्चा निर्मलताई बचपन में लेकर चलता है, प्रभु कृपा करे, बच्चा एक उस पेड़ की तरह है जो धरती में से निकलता है। इतना कोमल तथा लचीला है कि जिस तरफ उस पेड़ को करेंगे उधर ही ढल जाना है। जहां बच्चे को चलाओगे उसने उसी तरफ चल पड़ना है। कबीर जी ने कहा :

जैसी उपजी पेड ते

जब माता के उदर (गर्भ) में बच्चे का अभी जन्म नहीं हुआ, जो ध्यान वहां लगा था, यदि कहीं वह ध्यान जन्म से लेकर मृत्यु तक लगा रहे तो आदमी की कीमत करोड़ों रत्नों से भी नहीं पाई जा सकती।

कबीर जैसी उपजी पेड ते जउ तैसी निबहै ओड़ि।।
हीरा किस का बापुरा पुजहि न रतन करोड़ि।।

(अंग १३७२)

प्रहलाद एक बच्चा है। उस बच्चे के अंदर प्रभु ने कृपा की। कोई बाप के सामने नहीं था बोलता, लेकिन प्रहलाद अपने बाप के सामने खड़ा होकर बोला। उस बच्चे की दृढ़ता कैसी थी? परमात्मा भी उसके भोलेपन पर ख़ुश हो गया। ध्रुव की आयु कितनी थी? ध्रुव बिलकुल भी प्रभु के लिए नहीं चला। ध्रुव जिस दिन चला, उसने यह नहीं था पूछा कि माँ, मुझे प्रभु कैसे मिलेगा। उसने एक बात कही—माँ! जिस तख़्त से आज मुझे धक्का पड़ा है, मेरे बाप का तख़्त मुझे कैसे मिलेगा? माँ बहुत समझदार थी। उसने कहा, पुत्र मेरे, मैं राजा के घर पैदा हुई हूं, राजा के घर ब्याही हूं। मुझे धक्के तो पड़े हैं कि मेरी भक्ति कोई नहीं। माँ ने भेजना था। गुरु ग्रंथ साहिब में से आवाज़ आती है कि यदि प्रभु को पाना है तो :

राम जपउ जीअ ऐसे ऐसे।।
धू प्रहिलाद जपिओ हरि जैसे।। *(अंग ३३७)*

एक दृढ़ता है। सिक्खो! तीन चीज़ों से कभी भटकना न—(1) अमृत से, (2) अमृत-बाणी से तथा (3) अमृतसर से। ये तुम्हारे जीवन का आधार हैं। अमृत-बाणी के साथ जुड़ो तथा नाम-अमृत के प्याले से न चूकना और गुरु रामदास का दरबार साहिब न कभी भूल जाना। बच्चों को लेकर जाओ। वहां लंगर के बर्तनों में खड़े हो। अमीरी का गर्व न करें। याद रखो, उसके दर के जूतों की धूल में नवाबियां पड़ी हैं। पहले ख़ुद खड़े हो। सेवा करने का मतलब बातें करनी नहीं। पहले सेवा में खड़े हो, फिर स्नान करके अंदर जाओ तथा घंटा गुरु रामदास जी के चरणों में बैठ कर आओ। कभी बाबा दीप सिंघ जी को उनकी माता इसी तरह ही लेकर जाती थी। गुरु कृपा करे। इतनी विनतियां प्रवान करना। बेअंत भूलें हुई हैं, क्षमा करना।

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

हरि पिर संगि बैठड़ीआह

मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह।।
तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह।।
तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह।।
साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह।।
तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह।।
जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह।।
रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह।।
नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह।।
मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह।।

(अंग १३५)

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

परम सम्मानयोग्य शब्द-गुरु सतिगुरु गुरु ग्रंथ साहिब सच्चे पातशाह जी की पावन पवित्र हजूरी में शोभायमान गुरु-संवारे सतसंगी-जनो! आज मार्गशीर्ष (मग्घर) का महीना शुरू हुआ है तथा धन्य गुरु अरजन देव जी ने इस महीने के द्वारा जो हमें गुरमति उपदेश दृढ़ कराया है, उसकी विचार करनी अति ज़रूरी थी। इस महीने के शब्द का पाठ आप ने श्रवण किया है। इस शब्द का भाव-अर्थ है कि इस पवित्र शब्द में धन्य गुरु अरजन देव जी ने दो वचन हमें दृढ़ कराए हैं। पहला वचन है कि वे सुहागिनें, वडभागिनें जो अपने प्यारे पति परमेश्वर के पास बैठी हैं तथा उनके तन का रूप, उनके गुणों का शृंगार, उनके अंदर रूहानियत का जो नूर है, वास्तव में वही

श्रृंगार बन कर उन्हें शोभा देती हैं। दूसरा, इस वचन में एक और किया है कि जिन्हें उस प्यारे प्रभु पति का मिलन हासिल नहीं हुआ वे अकेली विलाप कर रही हैं। सुहागिनों ने अपने गले में नाम का रत्न डाला है और परमात्मा से बिछुड़ी हुई दोहागिनों (दुर्भाग्य वाली) ने अपने गले में दुखों का हार डाल लिया है, जिस कारण उनका यह दुख कट नहीं रहा। आखिर में धन्य गुरु अरजन साहिब बख्शिश करते हैं कि जिन सुहागिनों को प्यारे वाहिगुरु जी का मिलन हसिल हो गया है उनके चरणों की धूल मिल जाए। तो साहिब कहते हैं कि मार्गशीर्ष के महीने में जो इंसान उस परमात्मा की आराधना करेगा, उसका जन्म तथा मरण का दुख भी कट जाएगा।

गुरु पंचम पातशाह महाराज जी ने आज के इस अमृत वचन को प्रारम्भ करते हुए मार्गशीर्ष के महीने में उन गुरमुख सखियों की, उन सुहागिनों की, उन भाग्यशालियों की सिफ़तो-सालाह की है कि जो मार्गशीर्ष के महीने में अपने परमात्मा पति के पास बैठी हैं। हज़ूर के अमृत वचन आरम्भ में हैं :

मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह।।
तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह।।

धन्य गुरु अरजन साहिब कहते हैं कि मार्गशीर्ष के महीने में वही जीव-स्त्रियां सोहंदीआं हैं (अच्छी लगती हैं)। कौन सी?

हरि पिर संगि बैठड़ीआह।।

जो अपने परमात्मा पति के पास बैठी हुई हैं, वे शोभा वाली हैं और यदि कोई अपनी जुबान से, अपने अंदर के ख़्याल से उन सुहागिनों की शोभा बयान करने का यत्न करे तो वह उनकी पूर्ण शोभा बयान नहीं कर सकता तथा वे भाग्यशाली हैं जो अपने पति में समा गई हैं।

सुहागिन का तथा श्रृंगार का आपसी बहुत बड़ा संबंध है। जब कभी श्रृंगार की बात चलती है और यदि तब सुहागिन शब्द साथ जुड़ा हो तो उस श्रृंगार की उपमा और अधिक हो जाएगी। सुहागिन

तथा श्रृंगार का आपसी इतना गहरा संबंध है कि सुहागिन हो तो उसका श्रृंगार भी प्रभावित करेगा लेकिन याद रखना यदि सुहागिन नहीं तथा वह श्रृंगार करती हो तो कई बार उसका किया हुआ श्रृंगार उसके जीवन को शक के घेरे में ले आता है। सिर पर खसम हो, सिर पर मालिक हो तो उस सुहागिन का किया हुआ श्रृंगार उसकी और शोभा बढ़ाता है, लेकिन यदि सिर के ऊपर मालिक नहीं और वह औरत अपने तन पर श्रृंगार करे तो गुरमुखो! उसका किया हुआ श्रृंगार कई बार अपयश का कारण बन जाता है। गुरु नानक साहिब कहते हैं कि वह कौन सा श्रृंगार है जो मार्गशीर्ष के महीने में सुहागिन ने किया है पति के पास बैठ कर? प्यारिओ! बाहर के श्रृंगार की बात छोड़ो, एक सुहागिन के लिए तो सबसे बड़ा सुख, सबसे बड़ा श्रृंगार, सबसे बड़ा अंदर का सुकून ही यह है कि तन के वस्त्र चाहे फटे हों, हाथों-पैरों में पहनने के लिए चाहे गहनें न हों, एक वक्त की सूखी रोटी मिलती हो और यदि पति उसके घर में टिका हो तो सच जानना, उसके 16 श्रृंगार पति के पास बैठने से ही पूरे हो जाते हैं। गुरु साहिब ने एक वचन कहा है :

रूखो भोजनु भूमि सैन

वहां सोने, हीरे, मोती, चांदी तथा लालों की बात नहीं की। देखो, एक सुहागिन का श्रृंगार क्या है? एक आध्यात्मिक जीवन में विचरण करने वाली गुरमुख सखी का श्रृंगार क्या है? साहिब कहते हैं :

रूखो भोजनु भूमि सैन

रूखी रोटी मिल गई और सोने के लिए पलंग नहीं, चारपाई नहीं, ज़मीन पर एक फटा-सा वस्त्र बिछा कर उसके ऊपर लेट गई और देखने वालों ने कहा, बेचारी भूख से निढाल, सूखी रोटी मिली, रहने के लिए, सोने के लिए जगह नहीं, ज़मीन पर वस्त्र बिछा कर लेट गई बेचारी। आगे से गुरु अरजन साहिब कहते हैं कि बेचारी न कहो, रूखे भोजन तथा ज़मीन पर बिछी हुई चटाइयों को न देखो,

आप देखो मेरा साईं मेरे पास बैठा है। इससे बड़ा सुख कौन सा है? यदि रूखी रोटी खाकर तथा भूमि पर सोकर मेरा प्यारा पास बैठा हो तो वह रूखी रोटी भी छत्तीस प्रकार का भोजन है।

बाबे नानक की एक साखी आपके साथ सांझी करनी है। उस सुहागिन का शृंगार है कि:

रूखो भोजनु भूमि सैन सखी प्रिअ संगि सूखि बिहात।।

(अंग १३०६)

यह कुछ मुझे मिल जाए, मगर यदि मेरा पति प्यारा मेरे पास है तो मुझे यह भी प्रवान है। इसका भाव यह है, यदि सांसारिक तौर पर सुख है, तन पर पहनने के लिए सुंदर वस्त्र भी हैं, लेकिन यदि पति उस घर में नहीं तो प्यारो! उस पदार्थ को क्या करोगे? और यदि बाबे लालो की एक घास की झोंपड़ी हो, कोदरे की रोटी हो तथा रात उसकी झोंपड़ी में बाबा नानक कीर्तन करता हो तो उसका घर कितना भाग्यशाली है, जिसके घर में साईं बैठा हुआ है।

गुरु नानक साहिब कृपालु जी ने तिलंग राग के अंदर एक रंगे हुए चोगे का ज़िक्र किया है। मार्गशीर्ष के महीने में कौन-सी भाग्यशाली स्त्रियां हैं जिनके पास उनका प्यारा साईं बैठा है। गुरु साहिब कहते हैं कि औरत शृंगार किसलिए करती है? उसके शृंगार करने का केवल एक ही मतलब है कि मेरा पति मेरे पर मोहित हो जाए, मेरा पति मेरे पर प्रसन्न हो तथा हज़ूर ने इस शब्द को आध्यात्मिक जीवन की तरफ मोड़ा है। कहने लगे कि देख बहन! कई वस्त्र होते हैं, यदि तू तन पर पहने तो पति बहुत प्रसन्न है तथा कई बार ऐसे मैले वेश पहन लेती है जो पति को लुभाता नहीं। वचन किए कि कुछ लोग ऐसे होते हैं जो चाहते हैं कि प्यारा परमात्मा पति हमारे साथ रहे। वे ऐसे वस्त्र ही पहनते हैं जो पति को पसंद आ जाएं। हे धन्य गुरु नानक देव जी! वे वस्त्र कहीं रेशमी हैं? वे वस्त्र कहीं संसार के कीमती हैं जो तन पर पहने जाएं? कहने लगे, नहीं, जिन लोगों के अंदर के चोगे लालच, तमा, तृष्णा के विकारों के रंग में

रंगे हैं, वे जितना मर्ज़ी शोर मचाए जाएं, ऐसे चोगों को, ऐसी वृत्ति को, ऐसे श्रृंगार को देखकर कभी भी पति उनके हृदय की सेज पर आएगा नहीं। हे गुरु नानक साहिब! फिर बताओ आज मार्गशीर्ष के महीने कौन-सी भाग्यशाली हैं जिनकी शोभा बयान नहीं हो सकती। उनके चोगे कैसे हैं? कृपालु दाता जी ने अमृत वचन किया है कि :

इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे लीतड़ा लबि रंगाए।।

अपने अंदर के कपड़े को लालच में

मैरै कंतु न भावै चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाए।। १।।

कहते हैं कि मेरे स्वामी को तेरा चोगा नहीं अच्छा लगता। हे बहन! कैसे तू प्यारे स्वामी की सेज का आनंद ले सकेगी? यहां तो मार्गशीर्ष के महीने में वे सुहागिनें शोभा वाली हैं जो अपने पति के पास बैठी हैं।

हंउ कुरबानै जाउ मिहरवाना हंउ कुरबानै जाउ।।
हंउ कुरबानै जाउ तिना कै लैनि जो तेरा नाउ।।

(अंग ७२१-२२)

यह है कि :

तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह।।

हज़ूर कह रहे हैं कि सारे जीवों पर कृपा करने वाले! मैं तेरे पर कुर्बान जाता हूं। फिर अगला वचन किया कि अकेला तेरे पे कुर्बान नहीं, जो तेरे रंग में रंगे हुए, तेरे नाम में जुड़े हुए हैं, मैं उन पर से भी कुर्बान जाता हूं। जो दो-चार घड़ियां नाम जपते हैं उन पर से तो जाता ही जाता हूं और कृपा करना जो सदा के लिए तेरे नाम में जुड़ गए मेरे दाता जी! मैं सदा उन पर से कुर्बान जाता हूं।

लैनि जो तेरा नाउ तिना कै हंउ सद कुरबानै जाउ।।

अब आगे देखें। कौन-से चोगे, कौन-से कपड़े, कौन-से आभूषण, कौन-से गहने, कौन-से तन के किए हुए श्रृंगार अच्छे लगते हैं मेरे मालिक को? गुरु नानक साहिब कहते हैं कि हे जिज्ञासु! यदि

तू चाहता है कि तूने प्यारे पति की ख़ुशी लेनी है तो एक बात याद रखना कि खसम (प्रभु) की रज़ा जैसा शृंगार कोई नहीं। प्यारो! इसे दुनियावी पक्षों में न ले जाना। जो परमात्मा करता है, जो पति की हर बात को भला जान ले, वाहिगुरु जी के किए हुए वचन को सत्य कर मान ले, भला कहने वाला, सत्य कहने वाला हुक्मी बंदा, इससे बड़ा और शृंगार दुनिया पर नहीं।

मैं एक अर्ज़ करनी चाहता हूं। मैं एक दिन एक वचन पढ़ रहा था जिसमें हिंदी के एक विद्वान ने बहुत सुंदर एक घटना दी है तथा इस शब्द को समझना है इस बात से कि यदि पति डांटता है तो भी ख़ुशी है। कम से कम घर बैठे उसकी डांट भी हमारे लिए शृंगार है। कहते हैं, एक सखी दूसरी सखी के पास गई है। उसने देखा कि वह उदास चारपाई पर बैठी है। जब उसने आकर बुलाया और पूछा कि तेरी उदासी का क्या कारण है तो उसने आगे से उत्तर दिया कि हे बहन! मेरे पति ने अपने हाथ से मेरे ऊपर वार किया। आंखों में इतना पानी बहा कि नाभि तक मेरे सारे कपड़े आंसुओं से भीग गए। कानों में मुरकियां (बालियां) पहनी, नाक में नथनी डाली, गहने पहने थे, लेकिन पता नहीं आज कैसा गुस्सा चढ़ा कि आया, आते ही मेरे नाक की नथनी निकालकर फेंक दी, कान की बालियां उतार कर फेंक दीं, हाथ की चूड़ियां उतार कर फेंक दीं। बहन! मैं तो उदास बैठी हूं। आज मेरे कान भी उसने अलग कर दिए गहनों से और आगे से सुंदर उत्तर दिया तथा कहने लगी कि पति तेरा कहीं दूर तो नहीं गया? कहने लगी, नहीं, मेरा पति घर पर ही है। कहने लगी कि बहन! यह गहने चले गए कोई बात नहीं, मगर याद रखना, आंखों में से आंसू निकल आए तो घबरा न। इतना कुछ हो गया लेकिन यदि पति घर में बैठा हो तो इसके जैसा अन्य कोई सुख नहीं। इसका मतलब कि सबसे बड़ी शोभा है यदि साईं घर में है। मगर इसके अर्थ यह न कर लेना कि शायद पति पत्नी पर हाथ उठाए। तो भाई साहिब इस बात को लोगों में सही बता रहे थे, नहीं। केवल मैंने

एक नुक्ता आपके साथ सांझा किया है। गुरु नानक कहने लगे कि प्यारे! यदि तूने पति को मोहित करना है :

काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ।।
रंङण वाला जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न डीठ।। २।।
जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि।।
धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि।। ३।।
आपे साजे आपे रंगे आपे नदरि करेइ।।
नानक कामणि कंतै भावै आपे ही रावेइ।। *(अंग ७२२)*

गुरमुखो! यदि वाहिगुरु-पति घर में आ जाए तो इससे बड़ा सुख और क्या है? गुरु साहिब जी के दो शब्द हैं। एक वचन हम पढ़ते हैं :

लालनु राविआ कवन गती री।।

हे बहन! मार्गशीर्ष का महीना चढ़ा, तेरी शोभा बयान नहीं की जा सकती। हमें एक कृपा करके बता दे तू कि प्यारे साईं को कैसे पा लिया?

लालनु राविआ कवन गती री।।
सखी बतावहु मुझहि मती री।। १।।
सूहब सूहब सूहवी।। अपने प्रीतम कै रंगि रती।।

(अंग ७३९)

अपने प्यारे के रंग में रंगें! अपने प्यारे के गुणों में दिन-रात ख़ुमारी में रहने वाली जीव स्त्री! मुझे यह बता दे कि प्यारे पति का तूने कैसे आनंद लिया? अगला वचन किया कि बहन! कुछ बोल तो सही। प्यारो! वह बोलेगी क्या जिसके हृदय-घर के अंदर प्यारा पति आकर बैठा हो?

हम अपने प्यारे गुरु नानक साहिब का पर्व मना रहे हैं तथा हम अरदास करें कि कृपा करो, इस हृदय में आकर निवास बख़्शो। प्यारे की वर्षगांठ क्या थी? ननकाणा सहिब की धरती है। उस धरती पर आज अभी अमृत समय है। एक वृद्ध बाबा उसने उठ कर स्नान किया है, वस्त्र पहने तथा तकिए का सहारा लेकर अपने आसन पर बैठ

गया। आसन पर बैठे हुए के दोनों नेत्र मुंदे हुए हैं तथा अपने भीतर ही भीतर वह विरह की इच्छा लेकर किसी प्यारे के आने के इंतज़ार में बैठा है। तकिए का सहारा लिए उसका चेहरा दग-दग करता है, लेकिन फिर भी कभी-कभी आह भरता है तथा आंखों में से पानी बह निकलता है और चुप कर जाता है। कभी अपने साथ ही बातें कहता है, वाह रब्बा! कितना सुंदर समय दिया है। इस नगरी को मेरे बाबे नानक ने भाग्य लगाए। अकेले भाग्य नहीं लगाए, इस बूढ़े के अंदर को प्रभु की रूहानियत की चिंगारी लगा गया तथा ऐसी लगा गया कि दिनों-दिन अंदर की विरह की अग्नि बढ़ने लगी है। ख़ुद ही बातें करके कहता है कि चलो, कोई नहीं, आखिर प्यारा कई सालों का गया है, कभी न कभी तो फेरा पाएगा, कम से कम इस शरीर को विदा करने के लिए तो आएगा।

प्यारो! यह वृद्ध कोई और नहीं, इसी तलवंडी का मालिक है, जिसका नाम है राय बुलार। यह जन्म साखी में बोल कर कहता है कि कालू! कहीं अपने पुत्र को सांसारिक जीव न जानना। देखना, यह तो ख़ुदा का रूप है। साथ में कहता है कि देख यूं ही कहीं डांटता रहे मेरे बाबे नानक को और बाबा कालू जी पूछते हैं, क्यों? तो कहने लगा कि इसके कारण तो मेरी तलवंडी बसती है। इसके कारण तो मेरे शहर को भाग्य लगे हैं। यह राय बुलार तकिए का सहारा लेकर बैठा है। बैठा हुआ सच का पुलता गुरु नानक के प्रेम में रंगा हुआ है। सूर्य की किरणें धरती पर पड़ीं और यह बाबा अपने आसन से उठ कर हाथ में छड़ी पकड़ कर बाहर निकला। आज ठंडी-ठंडी ऋतु तथा कार्तिक का महीना चल रहा था। बाहर निकला और उसके मुंह पर सूर्य की किरणें पड़ीं। वास्तव में करोड़ों सूर्यों का प्रकाश तो बाबा अंदर बख़्श गया था तथा जब बाहर के सूर्य की किरण इसके चेहरे पर पड़ी तो मानो वह चमक चेहरे में से निकली, जैसे एक साफ शीशे में से सूर्य के प्रतिबिंब की चमक पड़ती है। नौकर आए, राय बुलार के सामने आकर झुके तो धीमी आवाज़ में कहने लगा

कि बाबे कालू के घर जाओ, उसे मेरे पास बुलाकर लाओ। नौकर गया। मेहता कालू जी को बुला कर लाया तथा राय बुलार ने छड़ी हाथ में पकड़ी और उसका सहारा लेकर खड़ा है और आते ही बाबे कालू को देख कर शीश झुका दिया तथा कहने लगा, मेरे साईं के बापू! तू कृपा करके बता, कहीं कोई ख़बर आई है मेरे प्यारे के वापिस आने की?

आज बाबा कालू जी वृद्ध हो चुके थे। राय बुलार की दशा देखकर नेत्र सजल करके कहने लगे, राय जी! ख़बर तो नहीं सुनी, लेकिन पता नहीं, पहले हाथ उठाता रहा, पहले पैसों की गिनती-मिनती ही करता रहा, आज कई दिन हो गए अंदर से एक नई-सी चीज़ पैदा हो गई है। अब पुत्र-मोह नहीं। मन कहता है कि आखिर कौन-सा ख़ज़ाना उसके पास है जिस ख़ज़ाने का तिनका-तिनका जिन्हें दिया उनके धरती पर पैर नहीं लगते, आत्मिक मंडलों में घूम रहे हैं। कहने लगे, अभी आया नहीं।

राय बुलार ने सुना और चुप करके होंठ बंद कर लिए तथा जैसे कोई बच्चा रोता है, ख़ामोश हो गया। कहने लगा, अच्छा ख़ुदा, तेरी रज़ा में ही सुख है, लेकिन आपने तो चलते समय यह बात कही थी कि राय जी, जब अपनी शक्ति काम न करे तब अरदास करना, मैं ज़रूर आप के पास आऊंगा। हे मेरे मुरशिद! मेरी एक अरदास है, इस बूढ़े के पिंजर में से प्राण निकलने से पहले-पहले जगत्-फेरी देकर मुक्त करने वाले! पा तलवंडी की फेरी (चक्कर) तथा इस बूढ़े के जीवन की नैया किसी तरफ लगा दे।

प्यारो! केवल अरदास की। अपने अंदर को टिकाओ। आज यह घर से निकला, नौकर-चाकर साथ थे। कहता है, मेरा अंदर पुकार कर कहता है कि राय, तेरे अंदर का मालिक आने वाला है। तू जा उस गांव की सीमा से बाहर। राय बुलार गांव से बाहर वृक्ष के नीचे जा बैठा, लेकिन इसका बैठना अंदर के रंग में है। नेत्र सजल थे मगर अंदर गुरु नानक साहिब का शब्द चल रहा है, अंदर प्यारे का इंतज़ार कर रहा है तथा मानो आवाज़ दे रहा है :

आवहु सजणा हउ देखा दरसनु तेरा राम।। *(अंग ७६४)*

मुझे कहीं तेरे दर्शनों की झलक पड़ जाए। मैं अपने घर में खड़ा हुआ तेरा इंतज़ार कर रहा हूं। मानो अंदर की विरह यह थी कि जिसे गुरु अरजन साहिब ने कहा है :

साजन देसि विदेसीअड़े सानेहड़े देदी।।
सारि समाले तिन सजणा मुंध नैण भरेदी।।
मुंध नैण भरेदी गुण सारेदी किउ प्रभ मिला पिआरे।।
मारगु पंथु न जाणउ बिखड़ा किउ पाईऐ पिरु पारे।।

(अंग ११११)

कृपा कर, तू दर्शन दे। राय बुलार बैठा है तथा पिता कालू जी इसके पास टिके हैं, मगर वह बैठना दुनियादारों वाला नहीं। वह बैठना है जिसमें प्यारे की याद, प्यारे का रस है। इतनी देर में सामने से एक घुड़सवार आया है। जब वह पास आया तो उस घोड़े के पीठे एक रेड़ू (ठेला) है। राय बुलार ने देखा कि घोड़े पर एक सवार है और पीछे कोई ठेला आ रहा है तथा एक ही दम छड़ी का सहारा लेकर उठ खड़ा हुआ और अपने नौकरों को आवाज़ देकर कहता है कि घोड़े पर कौन चढ़ा आ रहा है? जब वह घोड़े पर चढ़ा हुआ पास आया तो वह कोई और नहीं, वह है मेरे धन्य गुरु नानक सच्चे पातशाह की बहन बेबे नानकी के सिर का साईं भाई जैराम जी। घोड़े से उतरे। राय बुलार ने देखा। बड़े होने के नाते अदब किया और इतनी देर में जब ठेला पास आ रुका और उसमें से बेबे नानकी निकली, जिसने धन्य गुरु नानक साहिब को सबसे पहले पहचान लिया था। पांच साल बड़ी है भाई से, लेकिन अंदर ने पहचान लिया। राय बुलार ने सिर पर आशीर्वाद दिया और साथ ही पूछ लिया, बेटा! हमारे साईं की कहीं आने की ख़बर तूने सुनी है? वहां भाई वीर सिंघ लिखते हैं कि बेबे नानकी आंखें भर कर कहने लगी, ख़बर तो कोई नहीं सुनी लेकिन जब बैठती थी तो मेरा अंदर कह रहा था कि चल नानकी, आज तेरे गुरु का पर्व आने वाला है और मानो मुझे तलवंडी आवाज़ें मार रही थी। बस अंदर के आकर्षण को लेकर आई हूं। मैं समझती

थी कि आए होंगे, परन्तु हाय! अभी भी प्यारा आया नहीं। राय बुलार ने आगे से कहा कि बच्चीए! तेरे पर तो रहमतें हैं। चल, नहीं यदि प्यारा आया तो देख इस वृक्ष के नीचे अपनी मीठी यादें तो भेज रहा है।

मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह।।

राय बुलार ने कहा, बेटा! प्यारे की मीठी याद, उसका प्यार, उसकी ठंडक आ गई। तीनों-चारों यहां बैठ गए। कैसा अंदर का खेल होगा? गुरु ग्रंथ साहिब ने बाणी में इसके लिए इशारे भी किए हैं। कहने लगे :

होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ।।
हरि नामै के होवहु जोड़ी गुरमुखि बैसहु सफा विछाइ।।

(अंग ११८५)

उस वृक्ष के नीचे किसी रस में मग्न हो गए। बोलते नहीं, लेकिन उस चुप का रस भी बहुत आनंदमयी था। भंवरा शोर मचाता है लेकिन जब खिले हुए फूल के शिखर पर पहुंचता है तथा रस चूसने लगता है तो रस में मग्न हुए को गूंज भूल जाती है। प्यारिओ! वैसे जिज्ञासु आत्मिक जीवन पर पुकारता है, वाहिगुरु-वाहिगुरु कहता है, लेकिन एक परम अवस्था ऐसी आती है ज़हां आकर इसकी ज़ुबान पर शब्द खत्म हो जाते हैं, घंटों तक चौंकड़ा मार कर आंखों का नीर कहे जाता है कि चुप के प्याले पी रहा है। किसी अंदर के सुख से जुड़ा है। चारों बैठे और रात हुई, घरों को चले हैं।

प्यारो! आज दूसरा दिन आ गया है तथा राय बुलार, आज फिर उसी ठिकाने पर आ बैठा है तथा आज सारा दिन फिर इंतज़ार किया। अभी प्यारा नहीं आया और कहते, दोपहर ढली तथा आज इसे कोई चीज़ नज़र नहीं आई है। सामने वृक्ष के नीचे बैठे को दो आदमी चले आते हैं तथा आपस में बातें नहीं करते, चुप हैं। जब राय जी ने देखा कि ये आदमी कौन हैं? पास आए तो पहचाना कि ये भाई मनसुख तथा भाई भगीरथ साहिब जी चले आते हैं। आकर राय बुलार जी को मिले। अदब के साथ इनके सामने शीश झुकाया तथा आते

ही सवाल किया कि हमारे दिल के महरम गुरु नानक साहिब कृपालु पिता जी आ गए हैं? राय बुलार चुप था। फिर उन्होंने पूछा, राय जी! कुछ बोलते नहीं? कहने लगे, वृक्ष के नीचे बैठा इंतज़ार कर रहा हूं। कल भी बैठा था, लेकिन संदेशे प्यारे के आए जाते हैं परन्तु अभी आंखों से दीखता नहीं। कहने लगे कि संदेशे क्या? कहते आप चल कर आ गए और क्या यह संदेशा नहीं? राय बुलार ने जब-जब यह शब्द कहे और साथ में यह कहा कि आपको प्यारे की ख़बर नहीं तथा उस समय भाई मनसुख तथा भाई भगीरथ एक ही आवाज़ में कहने लगे कि बैठे थे लाहौर और कानों में आवाज़ सुनाई दी थी तथा अंदर को खींच पड़ी थी कि कहां बैठे हो? प्यारे का पर्व आ रहा है। जाओ, प्यारे के घर जाकर उसका पर्व मनाया करो। हम पर्व मनाने के लिए अपने प्यारे की तलवंडी आ पहुंचे। तीनों फिर बैठ गए हैं।

प्यारिओ! अभी ये तीन बैठे हैं कि इतनी देर में शाम ढलने से पहले एक सादे वस्त्रों वाला सज्जन और चला आता है। यह कौन था? इसके कंधे पर चादर थी। इसके कपड़े बिलकुल साधारण साद-मुरादे हैं। यह न व्यापरी है, न शाह है, न दुनियावी धनाढ्य अमीर-वज़ीर था। यह कौन था? लकड़ियों के खूंटे बनाने वाला, चारपाइयों के पाए बनाने वाला, लकड़ियों के दरवाज़े तथा खिड़कियां बनाने वाला, कंधे पर चादर रखे लेकिन अंदर के नाम के ख़ज़ाने का व्यापारी भाई लालो तलवंडी चला आता है। प्यारे का पर्व आ गया है। भाई लालो ने तीनों को वृक्ष के नीचे बैठे देखा। लालो ने दूर से जोड़ा (जूते) उतारा और इनके चरणों में आकर झुका, क्योंकि उस समय **पैरी पवणा जग वरताइआ** था। उन्होंने पूछा कि प्यारा जी आए? आवाज़ मिली, नहीं। कहने लगे तू तलवंडी कैसे आया? कहता है कि रात सोया था और रात सपने में झलकें दिखाईं तथा इशारे करके कहा, लालो! आ जाओ। मैं इस बार अपने घर चला हूं, वर्षगांठ आ रही है। सभी मेरे घर में इकट्ठे होंगे।

गुरमुखो! जो प्रभु की तरफ चले हैं, मैं फिर विनती करूं, जिस दिन प्यारे का सपना, प्यारे के प्यारों का सपना, प्यारे के गीत गाने वालों का सपना, कहीं प्यारे की झलक पड़ जाए तो किसी ख़ुशनसीबी उस नींद में होगी। बाबे नानक ने एक वचन कहा था। एक तरफ बाणी में कहते हैं :

कबीर सूता किआ करहि उठि कि न जपहि मुरारि।।

(अंग १३७१)

गुरु तेग़ बहादर जी कहते हैं :

जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ।।
जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ।।

(अंग ७२६)

सच्चे पातशाह कहते हैं :

सिआम सुंदर तजि नीद किउ आई।।
महा मोहनी दूता लाई।। *(अंग ७४५)*

लेकिन दूसरी तरफ वह नींद, जब आंखें बंद हुईं तो प्यारा एक दम अंदर आया तथा झलक देकर चला गया। लालो! आ चल, मैं तुझे अपने घर में निमंत्रण देने आया हूं। जल्दी से मेरे घर में आ जाना। वह कैसे अंदर का रस होगा जिसे बाबे नानक ने कहा कि :

मै रोवंदी सभु जगु रुना

मैं रोई तो सारी दुनिया मेरे वैराग्य को देखकर रो पड़ी।

रुंनड़े वणहु पंखेरू।।
इकु न रुना मेरे तन का बिरहा जिनि हउ पिरहु विछोड़ी।।
सुपनै आइआ भी गइआ मै जलु भरिआ रोइ।।
आइ न सका तुझ कनि पिआरे भेजि न सका कोइ।।
आउ सभागी नीदड़ीए मतु सहु देखा सोइ।। *(अंग ५५८)*

सुपनै ऊभी भई गहिओ की न अंचला।।
सुंदर पुरख बिराजित पेखि मनु बंचला।। *(अंग १३६२)*

प्यारे की झलक ही ऐसी थी कि सब कुछ भूल गया। बस, उसके दीदार ही मेरे अंदर को मस्त कर गए। हम मिन्नतें करते हैं प्रभु के दर्शन हों, लेकिन याद रखना, हमारे मनुष्य होने में एक बहुत बड़ी कमी है। इस गलती को स्वीकार करना पड़ेगा। प्रभु की मिन्नतें करता हूं। हमें दीदार दे तथा जिस दिन कहीं यह मनुष्य-रूप धारण करके हमारे पास आ जाए तो लोगों ने शब्द दिए, कहने लगे, भूतना है, बेताला है। तीसरों ने कहा कि नहीं, एक भोला सा आदमी है तथा जब बाबा नानक बोला तो कहने लगे कि भूतना नहीं, बेताला नहीं, मैं आम आदमी नहीं, मैं दीवाना, परवाना तथा प्यारे के रस में मस्त हुआ मस्ताना हूं। गुरमुखो! वह भाई लालो जिसे इतनी बड़ी रहमत मिली, जिसे गुरु एक बार आवाज़ मार ले तथा गुरु ग्रंथ साहिब सच्चे पातशाह बाणी में कहते हैं कि समझो उसके भाग्य बहुत बड़े हैं। हजूर ने कहा :

मनु लोचै हरि मिलण कउ किउ दरसनु पाईआ।।
मै लख विड़ते साहिबा जे बिंद बोलाईआ।। *(अंग १०९८)*

प्यारे! तू एक क्षण मुझे बुला तो सही, तू एक बार मुझे पुकार ले। लोग सारी ज़िन्दगी कमाई करके कहते हैं कि करोड़ों कमाए, मैं तो तब अरबपति बन गया जब तूने अपनी रसना से मुझे पुकार लिया। बाबे रविदास ने तो विनती करके कहा है :

हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने।।

लेकिन एक बात मुझे बता मालिका!

कारन कवन अबोल।। *(अंग ६९४)*

तू मेरे साथ क्यों नहीं बोल रहा? गुरु अरजन साहिब कहने लगे :

तू चउ सजण मैडिआ डेई सिसु उतारि।।
नैण महिंजे तरसदे कदि पसी दीदारु।। *(अंग १०९४)*

मेरे सज्जन! तू एक बार मेरे साथ बोल तो सही, मेरे नेत्र तरस रहे हैं। हे भाई लालो! तेरे चरणों में नमस्कार। यहां विनतियां की

जाती हैं कि एक बार गुरु नानक साहिब आप बोलो तो सही। तेरे घर में अकेले बोले ही नहीं, कई महीने तेरे घर पर बैठ कर रबाब बजाते रहे तथा तुझे बाणी में एक बार नहीं, दो बार नहीं, सात बार पुकार कर कह गए कि :

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो।।

(अंग ७२२)

भई मनसुख तथा भाई भगीरथ भी आ गए। बेबे नानकी भी आ गई, भाई जैराम जी भी आ गए, लेकिन अभी वह नहीं आया जिसके आने के इंतज़ार में ये बैठे हैं। आज सच्चे पातशाह ने कृपा की है। प्यारो! प्यारे की वर्षगांठ की सुबह आज सारे कीर्तन में जुड़े हैं। आवाज़ें दी जा रही हैं कि हे साईं! कृपा कर, आकर दर्शन-दीदारे दे।

सुणि नाह प्रभू जीउ उकलड़ी बन माहे।। *(अंग २४३)*

अपने-अपने घरों को सभी जाने की तैयारी कर रहे हैं कि गुरु नानक साहिब आ पहुंचे तलवंडी। माँ ने सुंदर वस्त्र तैयार किए थे कि अपने लाल को पहनाऊंगी। आए हैं, जब देखा प्यारा सामने चला आता है तो धन्य गुरु नानक साहिब जी के दीदार करते हुए **दरसन देखत सुध की न सुध रही, बुध की न बुध रही, मत में न मत है।।** बस, प्यारे की एक झलक ने इनके अंदर को किसी रस में मग्न कर दिया। भाई लालो ने नमस्कार की, भाई भगीरथ ने चरण पकड़े, भाई मनसुख ने गुरु नानक के चरणों की धूल मस्तक पर लगाई। बेबे नानकी आगे बढ़ कर नमस्कार करने लगी तो अपने हाथों से शीश को पकड़ लिया, बेबे! तू बड़ी है।

आज माता-पिता बापू को भी समझ पड़ गई। आज वह बापू जो कभी थप्पड़ मारता था, जो कभी झिड़कता था, उस बापू का अंदर इतना बह चला कि अपने पुत्र को देख कर पहली बार नेत्रों में से जल धारा आई है। माँ त्रिपता ने देखा कि राय बुलार बुज़ुर्ग है, छड़ी के सहारे उठा, कुछ नहीं बोला, क्योंकि प्यारे को देख कर बोल खत्म हो गए। जब वह झुकने लगा तो सच्चे पातशाह ने कहा, राय जी!

आप हमारे बड़े हो, आप बुज़ुर्ग हो। राय बुलार फिर बोला, हे मेरे साइयां! कृपा कर। तू मुझे क्यों बड़ा कहता है? कहने लगे, आप इस शहर के मालिक हो। कहने लगे, नहीं, आज मुझे अपने चरणों में माथा टेक लेने दो, मैं मरने से पहले यह भी प्रशंसा लेनी चाहता हूं। इस गांव का मालिक मैं नहीं, इस गांव का मालिक तो तू है। तैं तो तेरा नौकर हूं। देख, मैं इस गांव का नाम रखूंगा ननकाणा साहिब। क्यों? कहने लगे मेरे बाप का नाम था राय भोय, लोग कहते थे राय भोय की तलवंडी, लेकिन आज तक मेरे बाप की तलवंडी को देख कर कई नफ़रत करते थे, मगर मैं बापू की जगह अपने मुरशिद के नाम पर नाम रखूंगा और जब इस धरती पर कोई आएगा तो इस शहर को देख कर वह नफ़रत नहीं करेगा। इस गांव की धूल को लोग माथे पर लगा कर अपने आप को भाग्यशाली समझेंगे।

प्यारो! दूसरे दिन प्यारे की वर्षगांठ थी। आज इस बुज़ुर्ग को रात नींद कहां? सारी रात गुरु नानक साहिब जी के वचन सुने। रंग में रोता था, रंग में हंसता था और सुबह उठकर कहता है बाबा कालू जी को कि तेरा तो आखिर हक है, तेरा ख़ून है गुरु नानक, बेबे तेरा भी रिश्ता है, इसकी बहन है तू। त्रिपता जी को देख कर कहने लगे कि तू जननी है, तेरा भी रिश्ता है। हम रुलते हुओं का तो ख़ून का रिश्ता ही कोई नहीं, लेकिन एक कृपा कर दी है कि रुलते हुओं को 'शब्द' का ऐसा रिश्ता दे गया है कि ख़ून के रिश्ते तो शायद बिछुड़ सकते हैं, लेकिन जिन्हें 'शब्द' के रिश्ते दे जाए वे लोक तथा परलोक कहीं भी नहीं बिछुड़ते।

प्यारे की वर्षगांठ आई। आज उस राय बुलार ने गुरु नानक के चरण परसे। दो सिक्ख ऐसे हैं—एक पंडित शिवदत्त, जिसने उस दिन चोगा (शरीर) छोड़ा जिस दिन गुरु कलगीधर प्रीतम जी का गुरुपर्व था तथा दूसरा राय बुलार, जब प्यारे का पर्व आया, चरणों में माथा टेक कर सदा के लिए गुरु नानक के चरणों में ही टिक गए। ऐसों को मेरा गुरु कहता है :

मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह।।

फिर उनकी शोभा क्या?

लालनु राविआ कवन गती री।।
सखी बतावहु मुझहि मती री।।१।।
सूहब सूहब सूहवी।।
अपने प्रीतम कै रंगि रती।।१।।रहाउ।।
पाव मलोवउ संगि नैन भतीरी।।
जहा पठावहु जांउ तती री।।२।। *(अंग ७३९)*

हे प्यारे के पास बैठी बहन! मैं अपनी आंखों की पुतलियों का पानी निकाल कर तेरे पैर धोऊं। जहां मुझे कहेगी मैं वहां जाने के लिए तैयार हूं, लेकिन मुझे बता दे कि मेरे बाबे नानक ने कल को आना है, उसके दर्शन कैसे होंगे?

जप तप संजम देउ जती री।।

बहन! बता, पर्व आया है मैंने अपना जप, तप, संयम सब कुछ दे दिया। एक कृपा कर, मेरे गुरु ग्रंथ साहिब सच्चे पातशाह! झलक दे प्यारे की।

इक निमख मिलावहु मोहि प्रानपती री।।

प्यारो! आज मेरे पातशाह गुरु अरजन साहिब कृपालु जी ने अमृत वचन किया है कि:

मंघिरि माहि सोहंदीआ

मार्गशीर्ष के महीने में वे गुरमुख सखियां शोभा वाली हैं।

हरि पिर संगि बैठड़ीआह।।

कहने लगे कि मार्गशीर्ष के महीने में वही जीव-स्त्रियां शोभा वाली हैं जो अपने प्यारे पति के पास बैठी हैं, अपने गुरु नानक साहिब के पास बैठी हैं।

तिन की सोभा किआ गणी

उनकी शोभा को कौन बयान कर सकता है?

जि साहिबि मेलड़ीआह।।

जिन्हें मेरे साहिब ने अपने साथ मिला लिया है उनकी शोभा क्या है? मेरे गुरु ग्रंथ साहिब से पूछो। कहने लगे :

लालु चोलना तै तनि सोहिआ।।
सुरिजन भानी तां मनु मोहिआ।। १।।
कवन बनी री तेरी लाली।।
कवन रंगि तूं भई गुलाली।। १।। रहाउ।।
तुम ही सुंदरि तुमहि सुहागु।।
तुम घरि लालनु तुम घरि भागु।। २।।
तूं सतवंती तूं परधानि।।
तूं प्रीतम भानी तुही सुर गिआनि।। *(अंग ३८४)*

उनकी शोभा को कोई नहीं बयान कर सकता। प्यारो! लोग कई बार यत्न करते हैं मिले हुओं की शोभा को धब्बा लगाने के लिए। नहीं, चाँद पर कोई थूकेगा तो चाँद ने तो फिर भी उसी तरह साफ रहना है, थूकने वाले के चेहरे पर ही थूक पड़ेगा।

तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह।।

मार्गशीर्ष के महीने में जिन्हें साईं मिल गया उनका तन भी तथा मन भी आनंद में आ गया। वह कौन-सा आनंद? वह आनंद था :

नसि वंञहु किलविखहु करता घरि आइआ।।
दूतह दहनु भइआ गोविंदु प्रगटाइआ।। *(अंग ४६०)*

साहिब कहते हैं कि तन तथा मन दोनों खिल गए हैं, लेकिन कैसे?

संगि साध सहेलड़ीआह।।

जब उन्हें साधू-सहेलियां मिलीं। साधू का शाब्दिक अर्थ है गुरमुख, जो नाम जपने वाले हैं। प्यारो! संसार में मित्रता बनाई जाती है। मित्र उसे बनाओ जो प्यारे मित्र के साथ जोड़ दे। वह काहे का मित्र जो दुनिया भर की ईर्ष्या-गंदगी का कूड़ा ही हमारे अंदर फेंकता

है। गुरु जी कहते हैं कि जब साध-सहेलड़ीआह मिलीं तो उन्हें देखते ही बाबा जी कहते हैं :

ओइ साजन ओइ मीत पिआरे।।
जो हम कउ हरि नामु चितारे।। *(अंग ७३९)*

साध जना ते बाहरी

'बाहरी' का अर्थ है 'अलग'। जो लोग 'नाम' जपने वालों से नफ़रत करते हैं, प्यारो! किस्मत के बिना जपने वालों की संगत नहीं मिलती। जो प्रभु के प्यारे गुरमुखों से बाहरे (अलग) हैं, संगत नहीं करते। कहने लगे :

साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह।।

'इकेलड़ीआह' का अर्थ है जैसे तिल की फसल की हम उदहारण देते हैं। जिन तिलों में तिल पड़ जाए (फल लग जाए), उनको तो ज़मींदार घर ले गया। जो जल गए वे अकेले खेत में रह गए। अकेलों को जलाने के लिए अनेकों लोग आ गए। हे जिंदे! यदि साध-जनों से बाहरी रह गई तो निखसमे (खसम के बिना) तिल की तरह तेरी किसी ने बात नहीं पूछनी।

तिन दुखु न कबहू उतरै

उनको जो प्यारे के विछोड़े का दुख पड़ा है वह उतरता नहीं। कहने लगे :

से जम कै वसि पड़ीआह।।

यदि संगत नहीं की तो यमों के वश पड़ गईं। यमदूत उन्हें पकड़ रहा है। सच्चे पातशाह! जिन्होंने जपा है। कहने लगे :

जिनी राविआ प्रभु आपणा

जिन्होंने अपने सतिगुरु जी के नाम को माणा (आनंद लिया), जपा :

से दिसनि नित खड़ीआह।।

'नित खड़ीआह' का अर्थ है परमात्मा उन पर दयालु हो गया। गुरु जी कहते हैं कि उनका श्रृंगार क्या है?

रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह।।

उनके गले में वाहिगुरु जी के नाम का रत्न, नाम का हीरा, नाम का लाल जड़ा पड़ा है। धन्य गुरु अरजन साहिब आखिर में कहते हैं कि सच्चे पातशाह! जिन्हें प्यारे के पास बैठने का सौभाग्य मिल गया, जिनके हृदय की सेज पर प्यारा आ गया :

नानक बांछै धूड़ि तिन

उनके चरणों की धूल दास नानक मांगता है।

प्रभ सरणी दरि पड़ीआह।।

जो प्रभु की शरण में जा गिरीं तथा सच्चे पातशाह कहते हैं, गुरसिक्खो! मार्गशीर्ष आ गया है। इस महीने में मुक्ति मिल जाएगी। कैसे? कहने लगे :

मंघिरि प्रभु आराधणा

मार्गशीर्ष के महीने में परमात्मा को याद कर।

बहुड़ि न जनमड़ीआह।।

लौट कर जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़ेगा। मार्गशीर्ष के महीने में प्यारे के चरणों के साथ जुड़। धन्य गुरु नानक साहिब सच्चे पातशाह कृपा करो, सुखों को हरे कर दो, मारुस्थल पर करो नाम की वर्षा। पत्थरों को, राक्षसों को, जादूगरों को, कातिलों को, नीच कुकर्मियों को पार लगाने वाले! हमारे तो भाग्य उनके जैसे नहीं, क्योंकि उनके भाग्य तो अच्छे थे। उनके दरवाज़े पर आप चले गए थे। कृपा करो, हमारी वृत्ति है :

गलीं असी चंगीआ आचारी बुरीआह।।
मनहु कुसुधा कालीआ बाहरि चिटवीआह।।
रीसा करहि तिनाड़ीआ जो सेवहि दरु खड़ीआह।।
नालि खसमै रतीआ माणहि सुखि रलीआह।।

लेकिन कृपा करो, हमें उनकी संगत बख्शो। उसमें आखिर वाली तुक आती है :

होदै ताणि निताणीआ रहहि निमानणीआ।।
नानक जनमु सकारथा जे तिन कै संगि मिलाह।।

(अंग ८५)

उनकी संगत ही हमें मिल जाए। धन्य गुरु ग्रंथ साहिब कृपा करें। इतनी विनतियां प्रवान करना। भूल-चूक की क्षमा!

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

हउ वारी जितु सोहिलै

सोहिला रागु गउड़ी दीपकी महला १॥
१ओअंकार सतिगुर प्रसादि॥
जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो॥
तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो॥१॥
तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला॥
हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ॥१॥रहाउ॥
नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु॥
तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु॥२॥
संबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु॥
देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु॥३॥
घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि॥
सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि॥४॥१॥

(अंग १२)

वाहिगुरु जी का ख़ालसा॥
वाहिगुरु जी की फ़तह॥

साहिब सतिगुरु गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन पवित्र हजूरी में शोभायमान गुरु-संवारे सतसंगी-जनो! अकाल पुरख सतिगुरु जी की कृपा का सदका इस बार हजूर की अमृत बांणी सोहिला साहिब जी की विचार हमने करनी है। चाहे हम एक पंक्ति पर भी विचार करते हैं, गुरमति के एक विषय के ऊपर व्याख्यान किए जाते हैं, लेकिन अंदर वाला मन कहता है कि बाप-दादे के ख़ज़ाने को अच्छी तरह विचारें और विशेषतः जो हम रोज़ बाणी पढ़ते हैं। जुबानी तो हमें

याद है, कंठ से हम रोज़ उच्चारण किए जाते हैं। आखिर, इस अमृत बाणी के भाव-अर्थ क्या हैं? सतिगुरु ने जो नेम बख़्शे हैं इनका कोई अर्थ है? दातार जी ने इसीलिए अमृत बाणी में बाणी की सिफ़त (प्रशंसा) में बाणी उच्चारण की है। जैसे हम हजूर का यह अमृत वचन पढ़ते हैं कि :

बाणी गुरू गुरू है बाणी

बाणी गुरु है और गुरु बाणी है। इसी को बाबा जी ने बाणी में बख़्शिश करके कहा है :

सतिगुर बचन बचन है सतिगुर पाधरु मुकति जनावैगो।।

(अंग १३०९)

सतिगुरु वचन है और वचन सतिगुरु है।

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे।।

गुरबाणी कहै, जो गुरु जी अपनी रसना से बाणी कहते हैं :

गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे।।

(अंग ९८२)

यदि सेवक-जन उस बाणी को मान ले। दातार जी ने यही एक और प्रमाण बख़्शिश किया। साहिब बख़्शिश करते हैं कि इस अमृत बाणी को अपनी ज़िन्दगी का आधार बना ले, इसे अपने जीवन का सहारा बना ले और देख, जैसे घर-मकान कोई चीज़ अपना सिर छुपाने के लिए तू बनाता है तो इसकी छत को रोकने के लिए दीवारों की, स्तंभों के सहारे की ज़रूरत है, बिलकुल इसी तरह इस मन को यदि टिकाना चाहता है तो गुरु के शब्द का स्तंभ बनाकर मन को टिका। आप रोज़ यह वाक्य पढ़ते हो :

जिउ मंदर कउ थामै थंमनु।।
तिउ गुर का सबदु मनहि असथंमनु।। *(अंग २८२)*

धन्य गुरु अरजन साहिब ने इन अमृत वचनों को एकत्र किया और हमारे पर कितनी कृपालता कर दी कि ख़ुद बाप-दादे के ख़ज़ाने

को खर्चा, ख़ुद इस्तेमाल किया, ख़ुद छका, ख़ुद उसे भोगा, लेकिन साथ में एक बात बाणी में यह दर्ज करके गए कि आज के पश्चात जो कोई भी इस अमृत ख़ज़ाने को इस्तेमाल करेगा, खर्चेगा, खाएगा और भोगेगा, उसका उद्धार होगा। आप रोज़ पढ़ते हो कि :

जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो।।

(अंग १४२९)

यह अमृत-बाणी ख़ज़ाना कितना कीमती है? आप पढ़ते हो :

हम धनवंत भागठ सच नाइ।।

धन्य गुरु अरजन साहिब कहते हैं कि हम धनाढ्य हैं, अमीर हैं, जिनके पास कीमती ख़ज़ाना है।

हम धनवंत भागठ सच नाइ।।
हरि गुण गावह सहजि सुभाइ।।१।।रहाउ।।
पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना।। *(अंग १८५-८६)*

'खोलि डिठा' का अर्थ है, दीदार किए अपने नेत्रों से।

ता मेरै मनि भइआ निधाना।।१।।
रतन लाल जा का कछू न मोलु।।
भरे भंडार अखूट अतोल।।२।।

ख़ज़ाने को पहले खोला। खोलने के बाद उसके दीदार किए और फिर मानो एक भरोसा आ गया कि दुनिया का कोई भी लाल, कोई भी करंसी मेरे गुरु की कीमत नहीं पा सकती। एक काम हमने करना है। वहां हजूर ने एक जाति को नहीं, एक सम्प्रदाय को नहीं या एक वर्ग के लोगों को नहीं कहा, साहिब ने कहा, भाई!

खावहि खरचहि रलि मिलि भाई।।

मिल-जुल कर इस ख़ज़ाने को खर्च करना, खाना। इस ख़ज़ाने में कभी कमी नहीं आएगी।

खावहि खरचहि रलि मिलि भाई।।
तोटि न आवै वधदो जाई।।३।। *(अंग १८६)*

इसी की फिर 'सलोक वारां ते वधीक' में बख़्शिश की कि :

तिचरु मूलि न थुड़ींदो जिचरु आपि क्रिपालु।।
सबदु अखुटु बाबा नानका खाहि खरचि धनु मालु।।

(अंग १४२६)

शब्द अखुट (न समाप्त होने वाला) ख़ज़ाना है। धुर की बाणी कीमती हीरों से भी अधिक कीमत रखने वाली है। इसी ख़ज़ाने में से धन्य गुरु अरजन साहिब ने गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना करते समय उस समय सिक्खों की जो नेम की बाणियां थीं, उन्हें गुरु ग्रंथ साहिब के आरम्भ में दर्ज कर दिया। सबसे पहले दाता जी ने कृपा की कि जपु साहिब की बाणी दर्ज की, बाणी का नाम 'जपु' नीसान है विषय-सूची में, लेकिन हम अदब के साथ जपु जी साहिब कहते हैं। उसके बाद दातार जी ने सोदरु के शब्द दर्ज किए। सोदरु के शब्दों की सम्पूर्णता के बाद धन्य गुरु अरजन साहिब जी ने कृपा की 'सोहिला साहिब' जी की बाणी दर्ज कर दी। चाहे ये शब्द गुरु ग्रंथ साहिब में दोबारा भी आते हैं। हजूर ने यह पांच शब्दों का सुमेल करके इस बाणी का शीर्षक रखा 'सोहिला'। 'सोहिले' का शाब्दिक अर्थ है कि खुशी का गीत, मंगलमयी गीत। यदि और हमने सरल इसके अर्थ करने हों तो 'सोहिले' का शाब्दिक अर्थ है कि जब बच्ची का विवाह हो, उसके विवाह से पूर्व जो सुहाग के, वैराग्य के, मिलन के तथा विछोड़े के जो गीत गाए जाते हैं उनके लिए शब्द 'सोहिला' या 'सोहिलड़ा' प्रयोग किया गया है।

गुरु ग्रंथ साहिब की अमृत-बाणी की इस विचार से पूर्व एक अर्ज़ ज़रूर करनी चाहता हूं कि इस अमृत-बाणी के शब्द करतारपुर साहिब की धरती पर गाए जाते थे, क्योंकि इस बाणी के जो पांच शब्द हैं, इनमें से तीन शब्द तो धन्य गुरु नानक साहिब जी के हैं। चौथा शब्द धन्य गुरु रामदास जी का है तथा पांचवां शब्द गुरु अरजन देव जी का उच्चारण किया है। भाई साहिब भाई गुरदास जी ने अपनी रचना में इस बाणी के लिए शब्द 'आरती गावीऐ' भी कहा है। आज हजूर ने कृपा की। करतारपुर साहिब की धरती पर बाबा नानक जी

आए हैं। भाई साहिब के कथन अनुसार हजूर ने जो पोशाक उदासियों के समय, प्रचार दौरों के वक्त या जगत्-जलंदे को ठंडक देने के लिए धारण की थी, वापिस करतारपुर साहिब की धरती पर आए और सतिगुरु ने वे वस्त्र उतार दिए। साधारण गृहस्थियों वाले कपड़े पहने। अगली कृपा हजूर ने और की, करतारपुर साहिब की धरती पर धर्मशाला कायम की। भाई साहिब ने एक वचन यह भी कहा है कि :

सति रूपु सति नामु करि सतिगुर नानक देउ जपाइआ।
धरमसाल करतारपुरु साधसंगति सच खंडु वसाइआ।

फिर कहते हैं :

वाहिगुरू गुर सबदु सुणाइआ।।१।। *(वार २४)*

इसी करतारपुर की धर्मशाला में हजूर कृपा करते हैं। पलंघ पर बैठे हैं और सिक्ख दाता जी के चरणों में बैठते हैं। करतारपुर साहिब की धरती पर गुरु नानक साहिब अपनी रसना से बाणी उच्चारण करते हैं। भाई साहिब की रचना के अनुसार जिसने गुरु नानक साहिब के वहां वचन सुने, उसके अंदर का अंधेरा इस शब्द ने दूर कर दिया। वहां सिक्ख आते हैं, गुरु नानक साहिब के साथ हाथों से किरत (श्रम) करते हैं, लेकिन प्यारो! किरत के साथ-साथ परमात्मा की कीर्ति भी करते हैं। वहां अन्य मतों के साधू पुरुष आते हैं, गुरु नानक साहिब के साथ गोष्ठि करते हैं, चर्चा करते हैं, लेकिन जो एक बार बाबे नानक के साथ परमार्थ की, आत्मिक जीवन की चर्चा करके गया, याद रखना, चर्चा कुचर्चा नहीं, चर्चा करते हैं, संवाद रचाते हैं। जिसने एक बार बाबे नानक के साथ अंदर की गोष्ठि की, भाई साहिब कहते हैं कि वह जहां भी बैठता है, उसके अंदर एक रस गुरु का शब्द गूंजने लग जाता है। भाई साहिब के वचन हैं :

फिरि बाबा आइआ करतारपुरि भेखु उदासी सगल उतारा।

उदासियों वाले वस्त्र उतार दिए।

पहिरि संसारी कपड़े मंजी बैठि कीआ अवतारा।
उलटी गंग वहाईओनि गुर अंगदु सिरि उपरि धारा।

पुतरी कउलु न पालिआ मनि खोटे आकी नसिआरा।
बाणी मुखहु उचारीऐ

धन्य गुरु नानक साहिब अपने मुख से बाणी उचारते हैं।

हुइ रुसनाई मिटै अंधारा।
गिआनु गोसटि चरचा सदा अनहदि सबदि उठे धुनकारा।
सोदरु आरती गावीऐ अंम्रित वेले जापु उचारा।
गुरमुखि भारि अथरबणि तारा।। ३८।। *(वार १)*

सोदरु के शब्द गायन किए जाते थे, आरती के शब्द गायन किए जाते थे तथा अमृत समय दातार जी द्वारा जपु जी का जाप किया जाता था। हम इस बाणी को रात को सोते समय पढ़ते हैं।

सिखों ने पूछा, महाराज! यह रोज़ाना नेम (नित्तनेम) के साथ बाणी क्यों पढ़ें? नित्तनेम का शाब्दिक अर्थ है जिस नेम को रोज़ाना निभाया जाए। गुरमुखो! एक बात याद रखना, नेम ही प्रेम है और प्रेम ही नेम है। यही कारण है कि गुरसिक्खों ने, जिन्होंने नेम निभाए, आज भी उन नेम निभाने वालों को याद करते हैं। जिनका नेम टूट जाता है, वे किसी समय भी ज़िन्दगी की पटरी से, जीवन के रास्ते से भटक सकते हैं। वर्षा होती है। पानी हमारी ज़िन्दगी का आधार है। यदि घर में पानी न आए तो हम एकदम व्याकुल हो उठते हैं कि स्नान कैसे करेंगे? अंदर की प्यास कैसे बुझाएंगे? पानी यदि किसी नियम में, किसी अनुशासन में हमारे घर आता है तो पानी हमारी ज़िन्दगी है तथा यदि यही पानी कहीं बाढ़ बन कर, दरिया टूट कर घरों में आ जाए तो हम कहते हैं कि पानी हमारी ज़िन्दगी तबाह करके चला गया। नेम में प्रयोग हुआ पानी ज़िन्दगी है, बेनेम हुआ पानी ज़िन्दगी की तबाही है। साहिब ने कृपा की, हमें नेम दिया तथा बख़्शिश करके कहा कि इस बाणी को नेम से पढ़ना और रात को सोते समय पढ़ना।

गुरु रामदास जी को पूछा कि रोज़ाना बाणी पढ़ें, इसका भाव क्या है? सच्चे पातशाह ने बहुत सुंदर उदाहरण दी। कहने लगे, हम

दुकान करते हैं, खेती करते हैं या कहीं हम नौकरी करते हैं। क्या रोज़ाना दिल करता है दुकान पर जाकर बैठने को? क्या रोज़ाना दिल करता है खेतों में हल चलाने को? क्या रोज़ाना दिल करता है अपने मालिक की नौकरी करने को? कहने लगे, महाराज! कई बार दिल नहीं करता, लेकिन दुकान पर जाना पड़ता है। कहने लगे यदि दिल नहीं करता तो न जाओ। कहने लगे, यदि नहीं जाएंगे तो रोज़ाना आने वाले ग्राहक जो हैं दुकान बंद देख कर वापिस मुड़ जाएंगे और हो सकता है कि कुछ दिनों के बाद कारोबार ठप्प हो जाए। रोज़ाना नहीं जाएंगे तो पेट का काम कैसे चलेगा? नेम से दुकान पर जाएंगे तो ही कुछ कमाएंगे। साहिब कहने लगे कि यदि दुकान तेरी ज़िन्दगी की ज़रूरत है, दिल न भी माने तो भी तू दुकान पर जाता है। यदि सांसारिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए रोज़ाना काम करता है तो प्यारे! जिस दिन बाणी आत्मा की आवश्यकता बना लेगा उस दिन नित्तनेम को कभी भुलाएगा नहीं।

एक गुरमुख प्यारे कहते हैं कि हमारा नित्तनेम क्या है? वे कहते हैं कि मेला बहुत सुंदर लगता है। मेले में अनेकों लोगों का इकट्ठ है, अलग-अलग दुकानें हैं, कई खेलने के तमाशे हैं। कहते हैं कि छोटे बच्चे के लिए मेला तो ही अच्छा है यदि बुज़ुर्ग की उंगली पकड़ कर मेला देखे और यदि वही बच्चा जो मेले को देखकर हंसता है, उसके बुज़ुर्ग की उंगली कहीं छूट जाए तो वही मेला उसके लिए रोना बन जाता है। संसार तो एक मेला है। अच्छा लगता है माता-पिता, पुत्र, पुत्रियां, रिश्तेदार, दुकानें, कारोबार, लेकिन यह तभी अच्छा लगेगा यदि गुरु-शब्द की, नेम की उंगली पकड़ेगा। जिस दिन बाबे के नेम की उंगली छोड़ दी, सच जानना, उस दिन मेला डरावना बन जाएगा। जो हंसाता है वह रुलाने लग पड़ेगा। हजूर ने कृपा की कि हमारे नेम को सोते समय यह बख़्शिश की कि सोहिला साहिब की बाणी का पाठ करना है।

सोहिला हम दो बार पढ़ते हैं। एक तब पढ़ते हैं जब रात को सोने लगते हैं तथा दूसरा आपने देखा जब कोई प्राणी चढ़ाई (परलोक

गमन) कर जाता है तब उस समय भी चिता को अग्नि लगती है तथा साथ बाणी पढ़ने लग जाते हैं। क्या कारण है कि रात को लेटते समय भी सोहिला तथा चिता पर लेटते समय भी सोहिला। यह दो समय क्यों? इसके अर्थ एक गुरमुख विद्वान ने बहुत सुंदर किए हैं, वे कहते हैं कि चिता समय सोहिला पढ़ना तथा रात को सोते समय सोहिले साहिब का पाठ करना यह हमें बात याद कराते हैं कि मृत्यु तथा नींद का आपसी कोई संबंध है। यह कैसे? वे सियाने पुरुष कहते थे कि याद रखना प्यारे! नींद एक छोटी मौत है तथा मौत एक बहुत बड़ी नींद है। जब तू रात को सोता है तो छोटी मौत मानो मरता है, तब तू सोहिला पढ़ कर सोता है तथा जब लंबी नींद मौत में सो जाना है तो तब भी तेरे लिए सोहिला पढ़ा जाना है।

ज़िन्दगी भी एक रात है। हे सतिगुरु! हमारी बाहर की रात तथा ज़िन्दगी की रात में थोड़ा सा अंतर है। 8 बजे रात हो जाए तो याद रखना, सारे शहर के लिए रात एक-सी है। यह नहीं कि मेरे घर में 8 बजे रात होगी और आप जी के घर में 11 बजे रात होगी। एक ही समय अंधकार शहर पर पसरा तथा एक ही समय सुबह प्रभात हुई। बच्चे के लिए रात बड़ी नहीं, बुज़ुर्ग के लिए रात छोटी नहीं, नौजवान के लिए रात कम नहीं। रात का समय सभी के लिए एक-सा है, लेकिन गुरमुखो! ज़िन्दगी की रात का समय सभी के लिए एक जैसा नहीं। हज़ूर ने बाणी में सोने तथा मरने को एक जगह पर इकट्ठा रखा। आप कबीर साहिब का श्लोक पढ़ते हो। उसमें उन्होंने पहले इस रात से उठने की बात कही तथा जो आदमी नींद से नहीं जागता उसे कहते हैं आज उठ पड़े। आवाज़ देते हैं और तू नाराज़ होता है कि मुझे सोने नहीं देते, लेकिन प्यारे! एक दिन ऐसा सोएगा कि चाहे घर वाले विलाप भी करते रहें, तू तब भी नहीं उठ सकेगा। वचन आता है :

कबीर सूता किआ करहि उठि कि न जपहि मुरारि।।

क्यों? कहने लगे :

इक दिन सोवनु होइगो लांबे गोड पसारि।। *(अंग १३७१)*

यह छोटा सोना है, वह बहुत बड़ा सोना हो जाएगा। प्यारिओ! नींद भी कई तरह की है। कई सज्जन ऐसे हैं जो आंखों करके खुली आंखों जागते हैं, ज़ुबान करके बोलते हैं, कानों करके सुनते हैं, मगर बदकिस्मती, वे जागते हुए भी सोए हैं और जो साहिले गाने लग पड़े वे रात को सोते हुए भी जागते हैं। सतिगुरु हमें समझा रहे हैं कि गुरमुखा! रात को सोते समय सोहिला गाकर सो। हो सकता है आज की रात का सोया तेरी ज़िन्दगी की यह आखिरी रात हो। यदि आखिरी रात भी हो तो कम से कम अपने प्यारे का गीत गाते हुए यहां से जा। कम से कम तू अपने प्यारे का नेम निभाकर यहां से चलना और गुरु साहिब कहें, रात सचमुच यह सोहिला गाकर सोया है। सोहिला मंगलमयी एक गीत है। लेकिन गुरु साहिब ने कृपा की, कोई आदमी ऐसा नहीं जो साहिला नहीं गाता।

कुछ दुनिया के सोहिले गाते हैं, कई आदमियों के सोहिले गाते हैं, कोई अमीरों के सोहिले गाते हैं, लेकिन करोड़ों में भाग्यशाली हैं जो बाबे का साहिला गाता है। हज़ूर कहते हैं कि सोहिला गा परमात्मा का, निरभउ का तथा जिसका सोहिला गाएगा गुरमुखा, एक दिन उसके जैसा बन जाएगा। पहली बात कि सोहिला गाना है तो कर्त्ते का गाना। धन्य गुरु अरजन साहिब कृपालता कर रहे हैं। इसके अर्थ मैं थोड़े से आरम्भ करना चाहता हूं। एक विनती और कि जो कथा में मैं अर्थ करने लगा हूं, यह मेरा अंतिम सच है, नहीं, गुरु अगाध बोध है। जितनी सूझ गुरु जी देते हैं, अर्थ हम उतने कर सकते हैं। सच्चे पातशाह ने आज आरम्भता की सोहिला। सोहिला का शाब्दिक अर्थ है मंगलमयी गीत, ख़ुशी का गीत, जो विवाह से पूर्व पढ़ा जाता है। गुरमुख प्यारे के मिलन होने से पहले गीत गाए जाते हैं, तू प्यारे के घर में कूच करने से पहले अपने सोहिले ख़ुद गा। रागु गउड़ी दीपकी— दो रागों का सुमेल है, अकेला दीपक भी नहीं और अकेली गउड़ी भी नहीं, क्योंकि अकेला गउड़ी राग जो है इसमें 12 प्रकार की गउड़ी है।

रागु गउड़ी दीपकी महला १।।

महला का शाब्दिक अर्थ है शरीर, जिस शरीर द्वारा यह बाणी आई। अगला वचन १। १ का शाब्दिक अर्थ है धन्य गुरु नानक साहिब जी। इसे एक नहीं पढ़ना, इसे 'पहला' पढ़ना है, क्योंकि स्रीरागु की आरम्भता में बाबा जी ने शीर्षक ही यह दिया है :

सिरीरागु महला पहिला १।।

यहां हज़ूर ने पहले शरीर के द्वारा कृपा की। सबसे पहले अपने प्यारे का मंगल दिया।

१ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

परमात्मा एक है, अद्वितीय है, जिसके जैसा और कोई नहीं। साथ में युक्ति बता दी 'सतिगुर प्रसादि'।। यदि उसे मिलना चाहता है, उस तक पहुंचना चाहता है तो फिर गुरु की कृपा से। यहाँ पाठ 'प्रशादि' नहीं करना, इसका अर्थ है देग। यहां 'प्रसादि' है।

जै घरि कीरति आखीऐ

देखो यह भी शब्द बहुत भावपूर्ण है 'प्रसादि'। सिक्खी में जितनी भी कृपा घटित होती है, जो दात मिलती है, कभी भी यह दावा नहीं किया जाता कि हमारी कमाई है। केवल एक ही बात कही जाती है कि 'प्रसादि', 'कृपा'। पिछले दिनों मैं बाबा बुड्ढा साहिब जी का जीवन पढ़ रहा था। बाबा जी 125 वर्ष ज़िन्दगी का सफ़र करके गए हैं। जिस समय बाबा जी ने अपना शारीरिक चोला त्यागा, सोहिला गाने वाले को पता है कि मौत आनी है। उन्होंने धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को ख़ुद संदेश देकर बुलाया था तथा साथ यह भी वचन किए थे कि सच्चे पातशाह! बस जिस दिन इस चोले को छोड़कर चलना है, मेरा मरना संभाल लेना। गुरु हरिगोबिंद साहिब रमदास गए। बाबा बुड्ढा साहिब जी के पास बैठे, वचन-बिलास हुए और कैसी वह रात होगी जब पता है कि केवल इस शरीर ने जो 125 वर्ष से इस संसार में आया है, अमृत समय इसने चोला (शरीर) त्याग कर

चले जाना है। वह रात कैसी विस्माद वाली होगी। फिर उन्हें दुख कोई नहीं, उन्हें दर्द कोई नहीं, क्लेश कोई नहीं। यह भी पता है कि अमृत समय इस सत्य-पुरुष ने चले जाना है। वह सारी रात सिक्खों ने कैसे आनंद में व्यतीत की होगी।

उस रात भाई बिधी चंद जी ने एक वचन पूछ लिया कि बाबा जी! आपने गुरु नानक साहिब की कृपा का आनंद लिया, गुरु अंगद साहिब के प्यार का मज़ा लिया, छः गुरु साहिबान के पास रह कर सबसे अधिक प्यार का मज़ा लिया, लेकिन हमें एक कृपा करके बता जाना कि साईं को कैसे ख़ुश किया जाता है? बाबा जी ने वहां उत्तर दिया कि किरण से न पूछो, सूर्य पास बैठा है, इनसे पूछो। मैं तो किरण हूं। यह (सूर्य) निकलेगा तो किरण निकलेगी। सूर्य के बिना किरण की कीमत क्या है? सिक्ख कहते हैं कि समझे नहीं। कहने लगे कि मैं सिक्ख हूं। गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को पूछो कि कैसे ख़ुश किया जाता है। इतनी अंदर की नम्रता! सिक्ख हालांकि अरदास करते हैं, कृपाणें पहनते हैं, गुरु हरिगोबिंद साहिब के साथ लग कर तख़्त रचते हैं, पर कहीं नहीं कहते कि मैं बड़ा सिक्ख हूं। फिर भी कहे जाते हैं कि आप सूर्य हो और मैं किरण हूं।

धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सुन कर बस इतने शब्द कहे थे— बाबा जी! यह सिक्खी की हद है। गुरमुखो! साथ कहा, बाबा जी! बताओ आप इतना बड़ा प्यार अपने हृदय में समाए बैठे हो और बाबा जी ने उत्तर दिया था कि गुरसिक्खो! जप करो बाणी का, सिमरन करो वाहिगुरु का, सेवा करो गुरु की, चाकरी करो गुरु के दर की, लेकिन सब कुछ करने के बाद भी अपनी चाकरी, अपने सिमरन, अपने जप का कभी भी दावा न करना। जब भी अरदास करना, तब प्रसादि की, कृपा की करना। साथ में कहा, जब हम गुरु-घर आते हैं, प्रसादि पैसों से नहीं मिलता, प्रसादि तो केवल अंजुली बनाने वालों को मिलता है। गुरु की कृपा भी पैसों से नहीं, गुरु की कृपा तब मिलती है जब सेवा कर-कर के सिक्ख का अंदर अंजुली की तरह बन जाता है। पात्र बन! हजूर ने कहा, एक अद्वितीय है। आगे कहने लगे :

जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो।।

'जै' का शाब्दिक अर्थ है 'जिस'। जिस घर में कर्त्ता की विचार की जाए, कर्त्ता की कीर्ति की जाए। अब वह घर कौन सा है? आप बाणी पढ़ते हो। कबीर साहिब का एक वचन आता है :

भली सरी मुई मेरी पहिली बरी।।
जुगु जुगु जीवउ मेरी अब की धरी।। *(अंग ४८३)*

कहने लगा कि परमात्मा! अच्छा हुआ, जिसके साथ पहला विवाह हुआ था वह स्त्री मर गई, जो अब आई है, कृपा करना, इसे गर्म हवा न लगे। शाब्दिक अर्थ यह है लेकिन भाव-अर्थ है—मेरे दाता! मैं तेरा शुक्र करूं। जो अक्ल मैं जन्म के साथ ब्याह कर लाया था, तेरी कृपा से वह मर गई है। तेरे घर में मेरा नया जन्म हुआ है। अब जो मुझे गुरमति की सुमति (अक्ल) दी है, कृपा करना, इस अक्ल को कभी गर्म हवा न लगे।

अब यहां घर का शाब्दिक अर्थ करेंगे सतसंगत रूपी घर। जिस सतसंगत रूपी घर में कर्त्ता की कीर्ति हो :

तितु घरि

उस घर में :

गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो।।१।।

सिवरिहु का शाब्दिक अर्थ है सिमरो, याद करो। सिरजणहारो का अर्थ है जो सभी की सृजना करने वाला है। भाई! सतसंगत रूपी घर में बैठ कर कर्त्ते की कीर्ति गाओ। फिर वचन किया :

तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला।।

'निरभउ' जिसे किसी का भय नहीं। मेरे उस सतिगुरु के गीत गाओ, जिस प्यारे को किसी का कोई डर नहीं। वह निरभउ है। प्यारो! जैसे गीत गाएंगे, वैसी अंदर की वृत्ति बन जाएगी। परमात्मा ने हमें दरवाज़े दिए हैं। हम कभी अंदर रखवाली करें। गुरमुखो! आंखें दी हैं अपने अंदर को बचाने के लिए। ये पागल लोगों के घर को देखती

रहीं तथा अपना घर लूटा गया। कान दिए थे अपने घर की रखवाली के लिए। अपना घर उजाड़ दिया। गुरु साहिब ने कहा कि अपने घर को जाना नहीं।

यहूदियों में बहुत सुंदर गाथा है। कहते हैं, एक बार कोई सज्जन रोज़ाना रात को नदी के किनारे जाता था और सुबह दिन-चढ़े रोशनी होते उसने वापिस आ जाना तथा जिस नदी के किनारे जाकर बैठता था, उस किनारे के ऊपर बहुत अमीर लोगों के घर थे। उन बंगलों वालों ने एक नौकर रखा था जो सारी रात जाग कर सड़क पर लोगों के घरों पर पहरा देता था, लेकिन वह हैरान था कि यह आदमी रात होते आता है तथा सुबह सूर्य उदय होते फिर वापिस चला जाता है। यह कौन है? एक रात दबे पांव उसके पीछे चला गया और देखा कि वह नदी किनारे चौकड़ी मार कर बैठ गया। नेत्र उसके बंद थे। उस पहरेदार ने बुलाया नहीं, उठाया नहीं, चुप करके वापिस आ गया और जब प्रकाश हुआ, प्रभात हुई तो यह सज्जन उठ कर अपनी जगह से वापिस आया तथा पहरेदार ने रोक कर कहा कि तू रोज़ जाता कहां है? उसने उत्तर दिया कि तुझे इससे क्या? कहता है कि मैं इन बंगलों का पहरेदार हूं। कहने लगे कि अच्छा फिर हम दोनों का काम तो एक जैसा हुआ। मैं भी पहरेदार हूं, तू भी पहरेदार है। कहता, हद हो गई। इस मोहल्ले में अकेला मैं पहरेदार हूं, तू कहां से आया? कहता, अंतर इतना है कि तू रात को जाकर लोगों के दरवाज़ों पर पहरे देता है और मैं रात को बैठ कर अपने अंदर का पहरा देता हूं। जब मैंने वह गाथा पढ़ी तो मुझे गुरु ग्रंथ साहिब की एक पंक्ति याद आई :

दिल दरवानी जो करे

ऐ मन! लोगों के दरवाज़ों पर न बैठ, अपने दरवाज़े पर बैठना सीख।

दिल दरवानी जो करे दरवेसी दिलु रासि।।
इसक मुहबति नानका लेखा करते पासि।। *(अंग १०९०)*

हजूर आज मेहर करते हैं कि जैसे को याद करोगे, तैसा ही अंदर बनेगा। गुरु अरजन साहिब कहने लगे, परमात्मा! एक कृपा करना, यदि कान दिए हैं, अपने सोहिले के बिना नास्तिकों की आवाज़ और नास्तिकों के गीत कानों में न पड़ने देना। क्यों? क्योंकि यदि वे कानों में पड़ गए तो तेरी कीर्ति भूल जाएगी।

मेरे मोहन स्रवनी इह न सुनाए।।
साकत गीत नाद धुनि गावत बोलत बोल अजाए।।

(अंग ८२०)

साकतों (नास्तिक) के गीत, टूटे हुओं (प्रभु से) की बातें न करना। क्यों? कहने लगे कि जैसी सुनेंगे तथा जैसी करेंगे, जीवन वैसा बन जाएगा। मेरे निरभउ का सोहिला गाओ। यदि गाओगे फिर होगा क्या?

जिन निरभउ जिन्ह हरि निरभउ धिआइआ जीउ
तिन का भउ सभु गवासी।। *(अंग ३४८)*

जब गाओगे फिर निरभउ को गाते-गाते ज्ञानी बन जाओगे। कथा करते हुए ज्ञानी नहीं, ज्ञान की बातें करते हुए ज्ञानी नहीं, निरभउ के सोहिले गाते हुए एक दिन वो ज्ञानी बनोगे जिसे साहिब कहते हैं फिर निरभउ गाने वाला :

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन।।
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि।।

(अंग १४२७)

हउ वारी

मैं कुर्बान जाता हूं। किससे?

जितु सोहिलै सदा सुखु होइ।।१।।रहाउ।।

जिस गीत को, जिस कीर्तन को करने से सदा सुख होगा। आदमी थका-हारा रात को जब ये पंक्तियां पढ़ेगा तो क्यों नहीं सुख की नींद आएगी। सोहिला सुख की नींद देगा। बाकी जो सुख है यह थोड़ी देर के लिए है।

कुछ सुख हम शरीर के साथ लेकर आए हैं, आंखों की ज्योति लेकर आए हैं, कानों की श्रोत लेकर आए हैं, गले की आवाज़ तथा ज़ुबान के शब्द लेकर आए हैं, पैरों से चलने की तथा हाथों से करने की शक्ति लेकर आए हैं, लेकिन यह भी सुख सदीवी नहीं। गुरु साहिब कहने लगे कि जो मोरों की तरह नृत्य करता था, हाथी की तरह ठुमक-ठुमक कर चलता था, अब :

भूंडी चाल चरण कर खिसरे तुचा देह कुमलानी।।
नेत्री धुंधि करन भए बहरे मनमुखि नामु न जानी।।

(अंग ११२६)

शरीर के अंगों का सुख सदीवी नहीं, लेकिन यदि अंतर-आत्मे सोहिला गाएगा तो याद रखना, चिता जलने के बाद हड्डियां जलेंगी, मगर सोहिला गाने वाले की आत्मा सुखी होगी। सच्चे पातशाह! जिसे आपने कहा :

करते का होइ बीचारो।।

वह कर्त्ता और क्या कृपा करता है? कहने लगे :

नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु।।

गुरमुखो! वह कर्त्ता रोज़ाना नित्य-नित्य जीवों को संभाल रहा है।

देखैगा देवणहारु।।

वह देख रहा है, वह सभी को दातें दे रहा है।

तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु।।

'तेरे' जो शब्द इसका अर्थ है 'तेरे से'। हे जीव! तेरे पास कोई ताकत नहीं कि मेरे प्रभु के दान की कीमत पा सके। जिस दाते की कीमत नहीं, उस दाते का अंत तू कहां पा लेगा? वह रोज़ जीवों को संभालता है, रिज़क देता है, तुझसे उसके दान की कीमत नहीं पड़नी तथा दाते का अंत कैसे?

दान कभी भी अपनी मेहनत नहीं, दान तो प्यारे की रहमत है। आपने दान दिया मनुष्य-जन्म, पता नहीं हमारे जैसे छोटे-छोटे कितने

जीव आए थे माँ के गर्भ में जगह लेने के लिए, सभी की मृत्यु हो गई, तूने दान दे दिया, हमें माता के गर्भ में जगह दे दी। आपने आंखों की ज्योति दी। बंद हो जाएं तो दुनिया की दौलत भी दांव पर लगा दें तो नहीं मिलतीं। तेरे दान की कीमत क्या है? आदमी के शरीर के अंग खत्म हो जाएं तथा सारे परिवार के सदस्य भी अपना आप बेच दें तो गए हुए अंग वापिस नहीं आते। तेरे दान की कोई कीमत नहीं। तभी बाबा जी ने बाणी में याद कराया है कि जिस प्रभु को उलाहने देता है और जिस जिह्वा से देता है, वह जिह्वा भी तुझे परमात्मा ने दी है। वचन हम पढ़ते हैं:

जिनि कन कीते अखी नाकु।।
जिनि जिहवा दिती बोले तातु।।
जिनि मनु राखिआ अगनी पाइ।।
वाजै पवणु आखै सभ जाइ।। *(अंग ६६१-६२)*

इसु पानी ते जिनि तू घरिआ।। माटी का ले देहुरा करिआ।।
(अंग ९१३)

आप आसा दी वार का सुबह कीर्तन सुनते हो। वहां बाबा जी ने वचन कहा कि परमात्मा सुधा (शुद्ध, बिलकुल) प्रेम है, नफ़रत नहीं। जब दात देने लगता है तो हमसे कुछ मांगता थोड़े है। सूर्य रोज़ चढ़ता है। बिजली हम खर्च करते हैं और महीने बाद दरवाज़ा खटखटाते हैं और बिल आ जाता है। दो महीने न भरो तो साथ ही कनेक्शन काट कर तारें ले जाते हैं। परमात्मा तो सूर्यवत्त है। सदियों से किरणें दे रहा है, कभी भी कुछ मांगता नहीं, केवल दे ही रहा है। सूर्य क्या मांगता है हमसे? हवा क्या मांगती है हमसे? परमात्मा ने मिट्टी में रत्न पैदा किए, क्या मांगता है हमसे? वह शुद्ध प्रेम है। याद रखना, कर्त्ता बनने से पहले उसके चित्त में आया कि मैं दाता बनूं, क्योंकि जिसे करना है उसे रिज़क भी देना है। बाबा जी ने वचन किया :

दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ।। *(अंग ४६३)*

तरुठ कर (दयालुता में), यह नहीं कि मजबूरी-वश। पहले वह दाता है, कर्त्ता बाद में है। माँ की कोख में से कर्त्ता ने जन्म बाद में दिया, पहले माँ का दूध पैदा किया। गुरमुखो! उस दाते से जुड़ें। उस दाते की कोई कीमत नहीं है। यूं ही हम उलाहने देने लग पड़ते हैं। चार पैसे चले जाएं या दुख आ जाए तो कहने लगते हैं कि प्रभु ने क्या किया हमारे साथ। प्यारे दाते का शुक्र कर। अगली बात कही, जो सबके साथ घटित होती है। साहिब कहने लगे :

संबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेल।।
देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु।।

इस शब्द के भाव को समझें। हजूर कृपा करते हैं कि जब बच्ची का विवाह करते हैं। प्राचीन समय में जब बच्ची के लिए वर ढूंढा जाता था तो पहले कई साल सगाई हुई रहती और साथ में कह देना कि इतने साल तक रुक कर हम विवाह करेंगे। जब वह वर्ष आता तो कह देना कि इस साल का यह महीना निश्चित कर लो। उसके बाद महीने की तारीख़, वार निश्चित कर देना। समय बीतते-बीतते वह दिन आ गया जिस दिन बच्ची का विवाह होना था। उस दिन से पहले सामाजिक रीति थी कि बच्ची के केशों में बहनों, भाभियों, सहेलियों, चाचियों, ताईयों ने तेल डालना। उस समय का माहौल खुशी व गमी दोनों का होता है। केशों में तेल डाला तथा सभी खुशी के गीत गाती थीं। इसका अर्थ है सोहिला। अचानक हंसते-हंसते सारी रोने लग पड़ीं। बाबे नानक सतिगुरु ने उस रीति में से भी हमें परमार्थ सिखाया। कहने लगे, रोई क्यों, हंस रही थीं? आगे से उत्तर मिला कि इस बच्ची की माँ से पूछो। जब माँ से पूछा गया तो वह कहने लगी कि याद आ गया, जब इसने जन्म लिया था। मैंने इसे कैसे हाथों से पाला, कैसे मैंने अपना दूध इसे पिलाया, कैसे छोटे-छोटे वस्त्र सिल कर पहनाए। कहती है कि इसलिए रोई ताकि पुत्री! आज तक घर को लेपा-पोचा, बनाया, कोई चीज़ तेरे पिता जी ने लेकर आना तो तूने छोटी-सी ने दौड़कर जाकर कहना, माँ, ये कपड़े मेरे

हैं, यह चारपाई मेरी है, यह चौंका मेरा है, यह कमरा मेरा है। इसलिए रोई हूं पुत्री कि जिसे अपना-अपना कहती थी, आज तेल केशों में पड़ गया है, परसों फेरे हो जाने हैं, डोली में एक बार चढ़ गई तो लौट कर इस घर में से इसका अपनापन खत्म हो जाएगा। हजूर वैराग्य में चले गए। कहने लगे, संसार के लोगो! एक बेटी का जन्म होता है और हम उसके जन्म के बाद उसके विवाह का दिन निश्चित करते हैं, लेकिन अपनी ज़िन्दगी को पूछ कर देख मना! तेरी ज़िन्दगी-पुत्री का रिश्ता उस दिन ही हो गया था जिस दिन तेरा जन्म हुआ था। साल पहले लिखा गया है, महीना पहले लिखा गया है, तारीख़ पहले निश्चित हो गई है, लेकिर अंतर बेटी में और ज़िन्दगी में इतना है कि बेटी की डोली भाई उठाकर ले जाते हैं तथा दो-तीन दिनों के बाद फिर फेरा डालने आ गई। कहने लगे, ज़िन्दगी! जिन बेटियों की डोलियां विदा की थीं वे तो लौर कर मेहमान बन कर फेरे डालेंगी, परन्तु तू प्रभु के सोहिले गा, तेरी अर्थी भी तेरे भाइयों ने उठाकर लेकर जानी है, लेकिन फिर तू कभी फेरे डालने नहीं आएगी। यहां तेल का अर्थ है प्रेम का तेल डालो। कृपा करो कि मेरे अंदर वैराग्य-प्रेम पैदा हो जाए। साथ वचन किया :

देहु सजण असीसड़ीआ

यहां 'सजण' का अर्थ 'रिश्तेदार' नहीं, 'सजण' का अर्थ है 'आशीश' भी उसकी ही लगेगी जिसकी प्रभु के घर चलती है। वह सजण (सज्जन) है :

जा का कहिआ दरगह चलै।। *(अंग १८६)*

गुरमुखो! मुझे संगत में आशीश दो, मैं सोहिला गाने आया हूं।

जिउ होवै साहिब सिउ मेलु।।

मेरा मेरे साईं के साथ मेल हो जाए। अब अंतिम पंक्तियां हैं :

घरि घरि एहो पाहुचा

प्रत्येक शरीर के घर में मौत के संदेश आ चुके हैं।

सदड़े नित पवंनि।।

रोज़ाना संदेश आ रहे हैं।

सदणहारा सिमरीऐ

मेरी ज़िन्दगी! बुलाने वाले को याद कर।

नानक से दिह आवंनि।।

वह मृत्यु का दिन तेरा भी नज़दीक आ रहा है, हम भी तैयारी करके रखें। गुरमुखो! जिन लड़कियों के अभी रिश्ते तय नहीं होते, चाहे वर नहीं मिला, लेकिन माँएं दहेज पहले ही बनाने लग पड़ती थीं, चादरें पहले ही निकाली (कढ़ाई-बुनाई) जाती थीं, पंखे पहले ही तैयार किए जाते थे। यदि पूछा जाए कि अभी तो तेरा वर-घर भी नहीं मिला तो आगे से उत्तर मिलता था कि क्या पता, किस दिन मिल जाना है, दहेज एक ही बार नहीं बनना। गुरमुखो! यदि वर का पता नहीं और दहेज की तैयारी पहले है और यदि मृत्यु वाले दिन का पता नहीं तो 'नाम' की तैयारी पहले करें, 'नाम' का दहेज तैयार करें। सोहिला असल में मृत्यु की तैयारी का गीत है। सुहागिनें गाएंगी। आओ गुरमुखो! हम भी यत्न करें अपने अंदर को विदा करने का, सोहिला गाएं कर्त्ता का, सोहिला गाएं उसका जो संदेश भेज रहा है। इतनी विनतियां स्वीकार करना! हुई बेअंत भूलों की क्षमा करना!

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

सूरजु एको रुति अनेक

रागु आसा महला १।।
छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस।।
गुरु गुरु एको वेस अनेक।।१।।
बाबा जै घरि करते कीरति होइ।।
सो घरु राखु वडाई तोइ।।१।। रहाउ।।
विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ।।
सूरजु एको रुति अनेक।।
नानक करते के केते वेस।।२।।२।। *(अंग १२)*

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

परम सम्मानयोग्य साधसंगत जी! साहिब सतिगुरु गुरु ग्रंथ साहिब कृपालु जी की पवित्र हजूरी में सतिगुरु गुरु ग्रंथ साहिब जी की अमृत बाणी में से सोहिला साहिब जी की विचार हमने आरम्भ की है। सोहिला साहिब जी का पहला शब्द, इसकी विचार हम कर चुके हैं कि धन्य गुरु नानक साहिब कृपालु जी उस परिपूर्ण परमात्मा का सोहिला गाने के लिए हमें प्रेरित करते हैं जो सबका कर्त्ता है और साथ वचन करते हैं कि इस सोहिले से कुर्बान जाऊं, जिससे हमारे अंदर को आत्मिक सुख मिलता है। साथ ही यह बख़्शिश भरे वचन से हमें सुचेत भी किया है कि ऐ इंसान! मृत्यु वाला दिन बिलकुल नज़दीक आ रहा है। कितना अच्छा हो कि तू इस संसार से कूच करते समय उससे पहले परिपूर्ण परमात्मा का सोहिला गाना सीख

जा। याद रखना, सोहिला निरभउ (निर्भय) का गाना है तथा सतिगुरु जी ने पहले शब्द में रहाउ के वचन भी ये कहे हैं :

तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला।।

आप गाओ उस निरभउ परमात्मा का सोहिला। हजूर ने कृपा की है। एक शब्द प्रयोग किया है 'करता' (कर्त्ता) तथा दूसरा शब्द इसी पहले अमृत वचन में प्रयोग किया है 'निरभउ'। 'करते' का शाब्दिक अर्थ है सब कुछ बनाने वाला और निरभउ का आप अर्थ समझते हो कि जिसे किसी प्रकार का कोई भी भय नहीं। जहां वह परिपूर्ण परमात्मा कर्त्ता है, निरभउ है तथा निरभउ होने के साथ-साथ उस परम पिता परमेश्वर का बहुत बड़ा गुण है कि वह निरवैर (वैर रहित) भी है।

ध्यान देना जी! इस शब्द के अर्थ तो समझ पड़ेंगे यदि अपने अंदर को वैर तथा द्वेष की दृष्टि से ऊपर उठाएंगे। जहां वह कर्त्ता है वहां वह निरभउ है। जहां वह निरभउ है वहां वह कभी भी किसी के साथ वैर नहीं कमाता। वह निरवैर है।

धन्य गुरु नानक साहिब कृपालु जी ने इस शब्द में उन प्राचीन ग्रंथों का, उनके उपदेशों का ज़िक्र करके साथ एक वचन किया है कि इन सभी का कर्त्ता केवल पारब्रह्म परमेश्वर है।

धर्म की दुनिया में यदि वैर वाली वृत्ति लेकर इंसान चलेगा और यदि अंदर भी द्वेष है तो द्वेष कभी हमारे अंदर को एकाग्रता नहीं आने देगी। हजूर ने कृपा करके बाणी में ये वचन भी कहे हैं कि जिस आदमी के साथ तेरा वैर भी है, तू यत्न कर कि किसी तरीके से उस वैर को अपने अंदर से मिटा सके। हजूर कहते हैं कि अंदर के वैर को मिटा। तभी तो बाणी में दो शब्द आते हैं—एक राग और दूसरा द्वेष, एक मित्र और दूसरा दुश्मन। प्यारिओ! जहां राग है वह भी पकड़ है, जहां द्वेष है वह भी जकड़ है। राग को हम प्रेम कहेंगे, द्वेष को हम वैर कहेंगे। राग जब भी पैदा होगा, प्रेम-मोह जब भी पैदा होगा तब अपनों के लिए पैदा होगा तथा द्वेष जब भी पैदा होगा तब बेगाने, जिन्हें हम जानते हैं, उनके लिए पैदा करेंगे।

याद रखो! प्रेम भी संबंध बनाकर रखता है और घृणा भी संबंध बनाकर रखती है। प्रेम करके संबंध बना रहता है कि हम उसके बारे में अच्छा विचार करेंगे तथा जिसे छोड़ दिया और हम कहते हैं कि छोड़ दिया। अंदर से घृणा है, बाहर से बोलना छोड़ दिया, लेकिन अंदर के विचारों ने तो नहीं छोड़ा। उसके प्रति द्वेष, उसके प्रति ईर्ष्या, उसके प्रति घृणा, उसके प्रति नफ़रत है। गुरु साहिब ने बाणी में कहा है, यदि निरभउ का सोहिला गाने लगा है तो इस निरवैर से भी ऊपर उठ तथा देख अनेकों ही परमात्मा की कीर्ति करने वाले संसार में आए। याद रखना कि यह कर्त्ता की किरत करने वालों के अनेकों वेष हैं, लेकिन सभी के पीछे केवल पारब्रह्म परमेश्वर है। कितना अच्छा हो कि अंदर का वैर मिटे, लेकिन मिटता नहीं।

प्यारो! बाबा फ़रीद जी ने दो वचन कहे हैं। कहते हैं प्यारे! यदि हमने किसी स्थान पर बैठना हो और जगह नीची हो तो न तो हम उस नीची जगह पर चारपाई बिछाकर बैठ सकते हैं, न उस ऊंची-नीची जगह के ऊपर हम कोई चटाई बिछाकर बैठ सकते हैं। जो जगह ही एक फुट ऊंची, एक फुट नीची हो उसके ऊपर बैठना ही मुश्किल है। कहते हैं कि जिस अंदर परमात्मा को बिठाना चाहता है, यदि वह ऊंचे-नीचे में फंसा रहा तो साईं को बैठाएगा कहां? अंदर की सेज देख। बाहर के ऊंचे-नीचे स्थान पर इंसान नहीं बैठ सकता तो अंदर के ऊंचे-नीचे स्थान पर भगवान कैसे बैठ सकेगा? बाबा जी ने वचन किया :

फरीदा मनु मैदानु करि

बराबर कर दो मैदान की तरह। ऊंचेपन का अर्थ है अहंकार कि मेरे जैसा कोई नहीं। नीचेपन का अर्थ है, मेरा मुकाबला इस आदमी ने क्या करना है? ऊंचे का शाब्दिक अर्थ है हउमै तथा नीचे का शाब्दिक अर्थ है हीनता। यदि हमने नीची जगह और इसके अंदर नम्रता के अर्थ नहीं समझने, अपनी हउमै (अहंकार) रखनी, दूसरे की हीनता प्रकट करनी, अपने आप को ऊंचा जानना, दूसरे को नीचा दिखाना। प्यारिआ!

फरीदा मनु मैदानु करि टोए टिबे लाहि।।

'टोए' का अर्थ है नीचापन, गड्ढा, 'टिबे' का अर्थ है ऊंचापन, टीला। बराबर कर दे। इस बराबरता को समदृष्टि कहा है।

फरीदा मनु मैदानु करि टोए टिबे लाहि।।

और याद रखना :

अगै मूलि न आवसी दोजक संदी भाहि।। *(अंग १३८१)*

जिस दोज़ख़ की आग से तू दिन-रात डरता है, याद रखना, मरने के बाद जीते-जी तथा सामने दोज़ख़ की आग नहीं बुझेगी। अब वैर, भय कैसे मिटे? देखो, गुरु जी की विशालता कितनी है! बाबा जी ने दूसरा वचन कहा। देखो, हमारे जो ख़्याल के विचार हैं यह भी दूसरे आदमी तक पहुंचते हैं। हम यदि कहें कि नहीं पहुंचते तो यह भ्रम है। बाबा जी कहते हैं कि किसी जगह पर सिखों ने अरदास करके याद किया तो गुरु जी वहां आ गए। अब यह करामात के साथ न जोड़ो। आज भी आप देखो, बच्चे पर मुसीबत आ जाए, माँ उससे सैंकड़ों कोस दूर हो और जब बच्चा केवल दुख में 'हाए माँ' ही कहता है तो पता नहीं माँ को रोटी भी अच्छी नहीं लगती, घर भी अच्छा नहीं लगता और वह कहने लग पड़ती है कि पता नहीं, आज मेरा कोई दिल निकाल कर ले जा रहा है। क्यों? बच्चे के दुख के विचार माँ पर असर कर गए। जो आदमी बुरा सोचता है उसके प्रति कभी दिन में अच्छे विचार बनाने शुरू कर दो तो यकीन करो, बुरा मांगने वालों के लिए भी अच्छे विचार बनाओगे। एक दिन वे ख़ुद आकर कहेंगे कि मुझे बख़्श दे। वास्तविकता है कि वे विचार उसके तक पहुंचते हैं।

बाबा जी ने वचन किया है। कहने लगे :

फरीदा बुरे दा भला करि

भले का भला भी लोग नहीं करते। याद रखना, यह तो हमारा स्वभाव है कि जो भला करता है उसका ही हम बुरा करते हैं, तो

जो बुरा करता है उसका भला कैसे करेंगे? बहुत सुंदर बात है कि हम आज भी उन्हें याद करते हैं।

ज्ञानी संत सिंघ जी मसकीन ने अपनी ज़िन्दगी में इसका ज़िक्र किया है, चाहे उन्होंने किसी और ढंग से किया है। वे कहते हैं कि यहां भलों का जो भला करता है, उसका नहीं लोग भला करते तथा जिसने बुरा करना है उसका भला किसने मांगना है? गुरमुख का अंदर का जीवन जो बहुत उच्च है। वे लिखते हैं कि एक बार कोई सज्जन दरिया के किनारे खड़ा था। लांघने वाला आया, उसने खड़े हुए को पूरे ज़ोर से धक्का मारा तथा वह एक दम दरिया के किनारे से नीचे गिर पड़ा है। उसके वस्त्र कीचड़ से भर गए। वह तो ज़मीन पर कीचड़ में गिर पड़ा है, वस्त्र भर गए हैं और धक्का मारने वाला आगे चला गया और जो कीचड़ के साथ, मिट्टी के साथ भरा था, वह उठकर कहता है धक्का मारने वाले को कि भाई! जाते समय मेरी एक बात सुनकर जा। जिसने धक्का मारा उसने ख़्याल नहीं किया। उसने दोबारा पूछा कि तू क्या कहना चाहता है? वह आगे से कहने लगा कि तूने धक्का मारा और मैंने तो भला कभी तेरा किया नहीं। वह कहता है कि मैं समझा नहीं। वह कहता है कि याद रखना, जिसका भला करें वही लोग धक्के मारते हैं, यह असलियत है।

संसार में देखते हो, परिवारों में देखते हो, लेकिन गुरमुखो! गुरमति का रास्ता है निरवैरता का।

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाए।।

मन को गुस्सा न स्पर्श करने देना।

देही रोगु न लगई

जब तेरे अंदर गलत विचार ही नहीं तो रोग कहां से लगेगा?

पलै सभु किछु पाइ।। *(अंग १३८१)*

'सभु किछु पाइ' का अर्थ है, तेरे अंदर सारे गुण प्रवेश कर जाएं। पहले हमने वचन पढ़े थे:

बाबा जै घरि करते कीरति होइ।। *(कीरतन सोहिला, अंग १२)*

आज इस शब्द में 'रहाउ' की जो पंक्ति आई है :

बाबा जै घरि करते कीरति होइ।।
सो घरु राखु वडाई तोइ।।१।। *(अंग १२)*

पहले था 'जै घरि', वहां 'घर' का अर्थ करके आए थे 'सतसंगत'। अब फिर शब्द आ गया है 'बाबा जै घरि', जिस घर में :

करते कीरति होइ।।

कर्त्ते की कीर्ति हो, कर्त्ते की सिफ़त हो। अब यह शब्द 'घर' आया है। आगे जाकर फिर यह शब्द आना है :

निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा।।
(अंग १३)

इस घर का अर्थ क्या है? गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी समझने वाले गुरमुखो! देखो 'घर' गुरु ग्रंथ साहिब में बेअंत अर्थों में प्रयोग किया गया है। 'घर' के अर्थ मैं कुछ अर्ज़ कर देता हूं, आप समझ जाओगे। उच्चारण एक-सा है, लेकिन अर्थ सभी के एक जैसे नहीं। जब हम बाणी पढ़ते हैं तो वचन आते हैं सोरठि महला ५ घरु ४, घरु ३, १७ तक घर होते हैं। वहां शब्द भी 'घर' है। हम एक वचन पढ़ते हैं :

घरि ही महि अंम्रितु भरपूरु है मनमुखा सादु न पाइआ।।
(अंग ६४४)

एक वचन हम पढ़ते हैं :

ऐसे घर हम बहुतु बसाए।।
जब हम राम गरभ होइ आए।। *(अंग ३२६)*

एक वचन अमृत-बाणी में आता है :

नानक बधा घरु तहां जिथै मिरतु न जनमु जरा।।
(अंग ४४)

हज़ूर ने वचन किया है बाणी में :

(अंग ७३९)

घर महि ठाकुरु नदरि न आवै।।

(अंग १२९१)

घर महि घरु देखाइ.....।।

बेअंत शब्द गुरबाणी में आए हैं 'घरि', मगर क्या सभी जगहों पर 'घर' का अर्थ एक जैसा है। देखो 'घर' का अर्थ गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी में मकान भी है :

(अंग ९८९)

घर छडणे रहै न कोई।।

वहां 'घर' का शाब्दिक अर्थ है जो हमने घर बनाया, जिस छत के नीचे हम रहते हैं। जब हम अमृत वचन पढ़ते हैं :

घर ही महि अंम्रितु भरपूरु है मनमुखा सादु न पाइआ।।

(अंग ६४४)

वहां 'घर' का शाब्दिक अर्थ है हृदय रूपी घर। जब हम वचन पढ़ते हैं—**घरि का मास चंगेरा** तो वहां घरि का अर्थ है घरवाली। जब हम वचन पढ़ते हैं **घरि की नारि** तो यहां 'घरि की' का अर्थ है 'घरवाली'। जब हम वचन पढ़ते हैं :

ऐसे घर हम बहुतु बसाए।।

(अंग ३२६)

जब हम राम गरभ होइ आए।।

'ऐसे घर' का शाब्दिक अर्थ है यह शरीर रूपी घर।

(अंग १२९१)

घरि महि घरु देखाइ.....।।

इसका अर्थ है शरीर रूपी घर में जो अंदर का घर दिखा दे। जब हम पढ़ते हैं—**निज घर,** तो निज घर का अर्थ है 'स्वयं-स्वरूप', अपने स्वरूप में स्थित होना, जो तेरा अपना घर है। जब वचन पढ़ते हैं :

नानक बधा घरु तहां जिंथै मिरतु न जनमु जरा।।

(अंग ४४)

जहां मौत नहीं, बुढ़ापा नहीं, उस घर में मैं रहता हूं। गुरु ग्रंथ साहिब जी की अमृत बाणी में 'घरि' शब्द के जो अर्थ हैं, अनेकों आए हैं। अब आज जो पहला वचन आया है कि हजूर ने शब्द 'घर' प्रयोग किया है, मगर साथ बाणी में कह रहे हैं कि जिस घर में कर्त्ते

की कीर्ति हो, क्योंकि कर्त्ते को मनफी करके नहीं, कर्त्ते का शाब्दिक अर्थ है बनाने वाला। इस धरती के टुकड़े पर हम रहते हैं सभी, लेकिन गुरु साहिब ने बाणी में बहुत सी उदाहरणें दी हैं केवल इस बात को समझाने के लिए कि आदमी को समझ पड़ जाए कि सारे कुछ का कर्त्ता केवल एक परमात्मा है, एक प्रभु है। आगे उन्होंने एक बहाना बनाया, तरीके बना दिए, सब कुछ रचने के।

देखो, गुरु साहिब जी की अमृत बाणी में हम सृष्टि-रचना संबंधी पढ़ते हैं कि कब हुई और मेरे सच्चे पातशाह जी ने जपु जी साहिब जी की बाणी में सृष्टि-रचना की बात कर्त्ते पर आकर खत्म की कि सृष्टि-रचना के बारे में कर्त्ता को ही पता है, किसी और को नहीं। जब हम वचन पढ़ते हैं हज़ूर की बाणी में :

कवणु सु वेला वखतु कवणु कवणु थिति कवणु वारु।।
कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु।।

(अंग ४)

कर्त्ते की कीर्ति जिस घर में हो, हे परमात्मा! कृपा करना, हम उस घर को हृदस में बसा सकें। हज़ूर कहते हैं—**कवणु सु वेला,** कौन सा समय था? **वखतु कवणु,** कौन सा वक्त था? प्यारे! मुझे बता, ऋतु कौन सी थी, महीना कौन सा था, कौन सा दिन था, कौन सी थित थी? महाराज काहे के लिए? आगे वचन किया **वेल न पाईआ पंडती,** पंडितों को, विद्वानों को नहीं पता चला इस समय का और यदि पता होता तो पुराण में लिख कर जाते।

वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु।।
वखतु न पाइओ कादीआ

काज़ियों को भी वक्त का पता नहीं :

जि लिखनि लेखु कुराणु।।
थिति वारु ना जोगी जाणै

महीने का दिन, तारीख, वार का अर्थ है सप्ताह का दिन।

थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु न कोई।।

सच्चे पातशाह! कौन जानता है?

जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई।। *(अंग ५)*

फिर मन में ख़्याल आया कि सच्चे पातशाह! इसका तो नहीं पता कि कर्त्ते ने बनाया कैसे है, कैसे कर्त्ते ने खेल बना दिया है। सच्चे पातशाह जी ने उस कर्त्ते के खेल को नम्रता में आकर एक वचन कहा। आपने यह बहुत बार पढ़ा-सुना होगा :

साचे ते पवना भइआ.....।। *(अंग १९)*

कर्त्ते से बात शुरू करते हैं, अकेली किरत से नहीं। देखो, दो तरह के इंसान धरती पर रहते हैं। एक वे हैं जो केवल किरत की बात करते हैं, कर्त्ते की बात नहीं करते। एक वे गुरमुख हैं जो किरत की बात करने से पहले बनाने वाले की बात करते हैं।

हज़ूर ने कहा कि एक वृत्ति है—कूकर वृत्ति तथा दूसरी वृत्ति है सिंघ वृत्ति। शेर वृत्ति, कूकर वृत्ति तथा सिंघ वृत्ति में अंतर है। कूकर—कुत्ते को कोई पत्थर मारे तो कूकर का स्वभाव है उस पत्थर को अपने मुंह में पकड़ लेता है। यदि आप लाठी से, डंडे से, छड़ी से मारोगे तो कई बार कूकर उस डंडे को अपने मुंह में डालकर चबाने का यत्न करेगा। कूकर का स्वभाव है कि जिस चीज़ के साथ वार करोगे, उस चीज़ पर हमला करेगा। कभी शेर पर वार करके देखो। शेर पर कोई पत्थर से वार करे, शेर कभी भी पत्थर को मुंह में नहीं डालता। शेर हमेश देखता है कि पत्थर मारने वाला कौन है। हज़ूर कहते हैं कि गुरमति वृत्ति एक शेर वाली वृत्ति है। वह केवल किरत की तरफ नहीं, जिसने भेजा है उसकी तरफ ध्यान करते हैं जिसने पैदा किया है। कूकर की वृत्ति (स्वभाव) है :

दाति पिआरी विसरिआ दातारा।। *(अंग ६७६)*

अब हम धन, पदार्थ, पुत्र-पुत्रियां सब कुछ मांगते हैं, लेकिन प्यारो! कभी यह भी कहते हैं कि परमात्मा जी! आज आप से आपको मांगने आए हैं। आप मेरे पर कृपा करो, आप मेरे घर चलो। हज़ूर ने कृपा की कि देखो, कर्त्ते को तिनका बना दिया तथा किरत को

पहाड़ बना दिया। परमात्मा ने पुत्र की दात दी। पुत्र के श्वास में श्वास लिया तथा जिस परमात्मा ने पुत्र दिया उसे एक श्वास भी कभी याद नहीं किया। देने वाला तिनका बन गया और जो मिली हुई दात थी वह बन गई पहाड़। धन चला गया तो बहुत विलाप किया, नित्तनेम चला गया तो कभी परमात्मा के चरणों में अरदास ही नहीं की।

सतिगुरु ने बाणी में कृपा भरे बेअंत वचन कहे हैं कि कर्त्ते ने सारी किरत की है। कहते हैं, उस सच्चे सृजणहार ने ख़ुद कृपा की और वह सभी जगहों पर स्वयं समाया। उस सच्चे ने अपने से पवन बना दी। पवन से उसने पानी बना दिया। जब पानी बनाया और पानी को एक बात कही कि तूने सारी ज़िन्दगी नीचे की तरफ ही अर्थात् सिर नीचा करके ही चलना है और प्यारो! जब उसने पानी पैदा किया तो यह धरती एक तुला की तरह है। धरती एक नाव की तरह बना कर मेरे कर्त्ते ने समुद्र के पानी पर रख दी। कुर्बान जाएं तेरे पर, तीन हिस्से पानी है। मेरे मालिक! धरती इस पर ऐसे तैरती है जैसे किश्ती तैर रही है। कहते हैं कि कर्त्ते ने पानी का सिर झुका दिया और साथ ही एक कृपा की कि इस पानी में कर्त्ते ने आग पैदा की।

कर्त्ते का खेल कौन-सा है? पानी में से आग कैसे हम कहेंगे? समुद्र की आग जिसे बरवा आग भी कहा जाता है। गुरमुखो! पानी में से आग कैसे पैदा हुई? जिन पेड़ों को हम देखते हैं, ये पेड़ पानी करके हैं और जब पेड़ की लकड़ी को जलाकर देखोगे तो बीच में से केवल आग ही निकलेगी। पानी में से आग वाले पेड़ पैदा किए तथा मालिक! देख, जिन पेड़ों के पत्ते-पत्ते में आग भरी पड़ी है तूने इसकी टहनियों में से फिर फल पैदा किए। इन फलों में से आप ने पानी को फिर मीठा बना दिया। फलों में से फिर रस पैदा किए। भाई साहिब के वचन हैं :

सचा सिरजणिहारु सचि समाइआ।
सचहु पउणु उपाइ घटि घटि छाइआ।
पवणहु पाणी साजि सीसु निवाइआ।

तुलहा धरति बणाइ नीर तराइआ।

नीरहु उपजी अगि वणखंडु छाइआ। *(वार २२:४)*

कर्त्ते की कैसी कीर्ति है ? हर घट में उसकी कीर्ति है। हिन्दोस्तान में प्राचीन आज भी हम देखते हैं, सनातनी भाई यह कहते हैं कि ब्रह्मा से सृष्टि पैदा हुई। ब्रह्मा कमल के फूल से पैदा हुआ। शब्द है :

पहिल पुरीए पुंडरक वना।। *(अंग ६९३)*

पहले-पहले सफेद कमल का फूल था :

ता चे हंसा सगले जनां।।

उसमें से हंसा का शाब्दिक अर्थ करते हैं ब्रह्मा पैदा हुआ। सिक्ख का मतलब ही यह है कि जो मरते दम तक भी दावा न करे कि मैं सीख गया। मरते दम तक भी कहे कि मैंने कुछ सीखना है। सीख गया नहीं, मैंने कुछ सीखना है। यदि कहें कि मैं अर्थ कर गया। यह अंतिम सच नहीं है।

गुरु हरिगोबिंद साहिब कश्मीर की धरती पर गए। रास्ते में जाते हुए गुरसिक्खों ने कहा, सच्चे पातशाह! जपु जी साहिब का जपु नीसान का रोज़ पाठ करते हैं। कृपा करके हमें जपु जी साहिब के अर्थ समझाओ। धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने जपु जी साहिब के अर्थ शुरू किए। कृपालु दाता जी अर्थ करते गए और सिक्खों ने सुने। जिस दिन जपु जी साहिब के अर्थों की सम्पूर्णता हुई, **'केती छुटी नालि'** वचन आया तो सिक्खों ने शुक्राने के रूप में अरदास करके कहा—सच्चे पातशाह! आप जी का कोटान कोटि शुक्र है। आप जी ने जपु जी साहिब के अर्थ सुनाए। धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब जी का उत्तर था कि हे सिक्खो! अर्थ जपु जी साहिब के ज़रूर किए हैं, लेकिन याद रखना कि जितनी हमें समझ पड़ी, यह अर्थ किए, मगर अर्थ तो गुरु नानक साहिब जाने। गुरमुखो! बाबा जी ने भी कह दिया :

नानक कथना करड़ा सारु।। *(अंग ८)*

'सारु' का अर्थ है लोहा। यहां तो यह कथन इस तरह जैसे दांतों से लोहा चबाना तथा यदि हज़ूर कह रहे हैं कि हमारी हस्ती क्या है?

पहिल पुरीए पुंडरक वना।।

हज़ूर कहते हैं कि पहले-पहले कर्त्ते की तरफ हमें जोड़ते हैं कि किरत को कर्त्ते से अलग न जानना और उस घर की बात करना जिस घर में कर्त्ते की किरत हो तथा जिस घर में केवल किरत की ही प्रशंसा की जाए तथा कर्त्ते को भुला दिया जाए, प्यारे! तो उस घर में न ठहरना। हज़ूर ने बख़्शिश की :

पहिल पुरीए पुंडरक वना।।

पहले सफेद कमल का फूल था।

ता चे हंसा सगले जनां।।

मनौती है कि उसमें से ब्रह्मा जी पैदा हुए तथा ब्रह्मा जी ने सारी उत्पत्ति की।

क्रिस्ना ते जानऊ हरि हरि नाचंती नाचना।।

'क्रिस्ना' के शाब्दिक अर्थ हैं 'माया'। उसकी माया के द्वारा, उसके खेल के द्वारा सब कुछ बन गया और जिसमें ये जीव नृत्य कर रहे हैं, यह मनौती है कि भ्रम में आखिर तू कहता है कि कमल के फूल में ब्रह्मा जी उत्पन्न हुए तथा मुझे बता कमल का फूल किसने पैदा किया? और शब्द थे :

पहिल सुरसाबिरा।। *(अंग ६९३)*

सबसे पहले ये परिपूर्ण परमात्मा, उसकी बाणी, उसका शब्द :

कीता पसाउ एको कवाउ।।
तिस ते होए लख दरीआउ।। *(अंग ४)*

हज़ूर कह रहे हैं कि सर्वप्रथम वह पुरुष, वह परिपूर्ण परमात्मा, उसकी बाणी, उस वाहिगुरु जी ने अपनी रचना द्वारा, अपने शब्दों

के द्वारा, प्यारिआ! इस संसार की माया की सृजना कर दी। उसे रच दिया जिसे हजूर ने आसा जी की वार में कहा:

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ।।
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ।।

(अंग ४६३)

कर्त्ते की किरत को इस पंक्ति में से पढ़ कर देखो। रोज़ाना यह हम पढ़ते हैं, सुनते हैं। अपने आप को उसने ख़ुद साजा और याद रखना, साजने वाला भी वह है और बनाने वाला भी वही है। सब कुछ उसने साजा, नाम भी उसने रचा।

दुयी कुदरति साजीऐ

अपने से यह दूसरा सब कुछ बना दिया और दूसरा बनाकर धक्का नहीं मार दिया। यह नहीं कहा कि मैं तेरे से नफ़रत करता हूं। तुझे बनाया है या मेरे से दूर। कहते हैं:

दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ।।

(अंग ४६३)

'करि आसणु' का शाब्दिक अर्थ है, अपना ठिकाना इसमें बना लिया और 'डिठो' का अर्थ है देखने लग पड़ा। और प्यारो! देखता मजबूरी के साथ नहीं है, देखता किसी और तरीके से नहीं है कि मजबूरी है, मैंने देखना है।

करि आसणु डिठो चाउ।।

वह कर्त्ता पुरख शौक से इसे देख रहा है। यह उसका प्रेम है। जब साईं तथा उसका मेल हुआ तो क्या बना दिया:

हरि का बागरा नाचै पिंधी महि सागरा।। *(अंग ६९३)*

कर्त्ते की प्रशंसा कर, जिस कर्त्ते ने यह किरत की है। 'पिंधी' का शाब्दिक अर्थ है 'कुएं की टिंडें'। कहते हैं, हे प्रभु! आप ने संसार को बनाया है और कुएं की टिंडों की तरह जैसे पानी छलकता है, इस तरह जीव नाच रहे हैं।

नाचंती गोपी जंना।।

स्त्रियां तथा मर्द तेरा खेल हैं, नाच रहे हैं। मैं तेरी किरत से कुर्बान हूं। लेकिन अगला वचन किया :

नईआ ते बैरे कंना।। *(अंग ६९३)*

अकेला 'नईआ' का शाब्दिक अर्थ है 'नायक', 'नायक' का अर्थ है 'आगू', 'आगू' का अर्थ है 'कर्त्ता'। जिस कर्त्ते का सोहिला गाना, जिसने मर्द-स्त्रियां बनाए, बता मुझे, कौन-सा प्रभु से अलग है?

नानक करते के केते वेस।। *(अंग ३५७)*

नईआ ते बैरे कंना।।

कोई प्यारे से अलग नहीं।

तरकु न चा।।

मेरे कर्त्ते की किरत पर तर्क न किए जाना।

भ्रमीआ चा।।

आगे के भ्रम उठा दे। कौन-से भ्रमों में पड़ गया है?

तरकु न चा।। भ्रमीआ चा।।
केसवा बचउनी अईए मईए एक आन जीउ।। *(अंग ६९३)*

'केसवा' का अर्थ है 'सुंदर केशों वाला'। 'बचउनी' का अर्थ है 'वचन'। 'अईए मईए' का अर्थ है 'स्त्रियां तथा मर्द'। जितने भी बोल रहे हैं, दिखा तो सही जिसमें प्रभु नहीं बोल रहा।

करते के केते वेस।।

हम आज कर्त्ते के लिए जुड़े हैं।

छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस।।

हजूर कह रहे हैं :

केसवा बचउनी अईए मईए एक आन जीउ।।

फिर सभी में कर्त्ता बोलता है जिसने किरत बनाई है और तू एक काम कर कि कर्त्ते की किरत को देखकर तू कीर्ति किया कर। तीन शब्द याद रखना। यदि धन कमाते हो तो अपना इसके बिना नहीं चलता। इसमें कोई शक नहीं। कई तो धन को गालियां भी निकालते हैं। अंतर इतना है कि कोई खुशामद करके जेबें भर जाता है और कोई गालियां निकाल कर धन से जेबें भरता है। भरते दोनों हैं। इसके बिना चलता नहीं। लेकिन इसे समझें। सांप ज़हर से भरा है, मगर उतनी देर तक जितनी देर तक वह जंगल में विचरण करता है और जिस दिन सपेरा मंत्र से सांप को कील ले (वश में कर ले) तो याद रखना, पटारी में डाला सांप सपेरे के लिए रोज़ी बन जाता है। वही सांप जो डंक मारे तो बच्चे की मृत्यु हो सकती है और जब उसी सांप को कील ले तो वह अपनी लड़की के दहेज़ में भी सांप की पटारी देता है। वह कहता है कि ले बेटी! मैंने तुझे सांप दिया। उतनी देर तक ही यह दुखदाई था जितनी देर तक इसके ऊपर गारुड़ी मंत्र नहीं था प्रयोग किया। जिसके पास गारुड़ी मंत्र है सांप भी उसका सेवादार है।

जिसके मुख में गुरु है और याद रखना, माया उसकी दासी है। जिसके मुख में से गुरु निकल जाए, माया उसकी मालिक है। हज़ूर ने कहा कि यदि धन कमाना है तो याद रखना कि धन के साथ धर्म को कभी भूलना न। यदि तू किरत करता है तो किरत के साथ परमात्मा की कीर्ति कभी भूलना न। यदि परमात्मा ने तुझे माया दी है तो अरदास करना कि मेरी झोली में माया के साथ अब मया (कृपा) भी डाल। धन के साथ धर्म मांगें, किरत के साथ कीर्ति मांगें, माया के साथ मया मांगें। मया का शाब्दिक अर्थ है कृपा। हज़ूर कह रहे हैं :

केसवा बचउनी अईए मईए एक आन जीउ।।

बाबा नामदेव कहते हैं कि सांस भी तो कुएं की टिंडों की तरह छलकते हैं। देखो, कितने छलकते हैं? बहुत सुंदर उदाहरण दी है। थोड़ी-सी कोई चीज़ प्राप्त हो जाए, छलक-छलक कर हम बाहर पड़ते हैं। बर्तन छोटे हैं, कई बार दातें बड़ी पड़ जाती हैं।

पिंधी उभकले संसारा।।

कुएं की टिंडों की तरह डूबता-ढहता है।

भ्रमि भ्रमि आए तुम चे दुआरा।।

तेरे दरवाज़े पर आ गया हूं और जो आदमी कर्त्ते की कीर्ति करता है, वह दरवाज़े तक पहुंचता है तथा कीर्ति करने वाले की कर्त्ता आवाज़ सुन लेता है। कहने लगे :

तू कुनु रे।।

तू कौन है? कीर्ति करने वाला कहता है :

मै जी।। नामा।।

मैं नामदेव हूं। साथ ही विनती की :

हो जी।। आला ते निवारणा

संसार के दुखों से बचा ले।

जम कारणा।।

कृपा कर, यमों की मार से बचा ले।

कर्त्ते ने किरत रची, किरत को देखकर भक्तों ने कीर्ति की तथा जिन्होंने कीर्ति की उन्होंने अंदर की वैर-भावना भी गंवा दी।

बाबे नानक ने पहला वचन किया **छिअ घर**, राग शुरू होता है :

रागु आसा महला १।। छिअ घर

यहां घर का अर्थ मकान नहीं, यहां पर घर का अर्थ शरीर नहीं, यहां घर का अर्थ हृदय नहीं, यहां **छिअ घर** का अर्थ है छः शास्त्र। छः शास्त्रों की बात क्यों की? भाई गुरदास जी ने एक वचन कहा है। कहते हैं, उस धर्मी धर्म कमाने वालों ने तीन उदाहरणें दी हैं। कहते कि हे माँ! तुझे अपना बच्चा बहुत प्यारा लगता है। तेरा बच्चा रंग का सांवला हो, मैल से भरा हो, टाकियों वाले (फटे-पुराने) कपड़े पहने हों तो भी तूने कहे जाना है शहंशाह। यदि अपने पुत्र को शहंशाह कहती है तो पड़ोसी के पुत्र को शहंशाह ही जान। लेकिन नहीं, तेरा

पुत्र शहंशाह और पड़ोसी का पुत्र गुलाम। कहने लगे कि यदि पड़ोसियों के पुत्र से नफ़रत करके उसके साथ अपशब्द बोलती है कि मेरा पुत्र अच्छा तथा पड़ोसी का बुरा है। जितना अपने पुत्र को अच्छा जानती है, याद रखना, जिसके पुत्र के लिए नफ़रत पैदा करके बैठी है, उसकी मां से पूछ, उसका पुत्र भी उसके लिए शहंशाह है। धर्मी की इस संकीर्णता से ऊपर उठें और कर्त्ते के साथ जुड़ें। इस किरत में से भी कर्त्ते के साथ गुरु जी ले गए।

दूसरी विनती है कि हम देखते हैं कि जैसे तू अपने धन को संभाल कर रखता है, तुझे अपना धन बहुत अच्छा लगता है और गुरमुखा! तेरे एक धन में से कुछ पैसे कम पड़ जाएं तो तू रुदन करता है और दूसरे के धन को बर्बाद होते देख कर हंस न। जैसे वह अपना जानता है उसी तरह उसका भी जान, अपने पुत्र की तरह दूसरे का पुत्र भी जान। यदि तू अपने कर्म-धर्म का ढिंढोरा पीट रहा है तो दूसरे पर कीचड़ न फेंक। याद रखना, जितना तुझे अपना धर्म प्यारा है उतना उसे अपना धर्म प्यारा है। याद रखना, संकीर्णता ज़िन्दगी की तबाही कर जाती है। गुरु गोबिंद सिंघ जी को बहादुर शाह ने पूछा था कि मेरा ईमान अच्छा कि तुम्हारा ईमान अच्छा? बाबा जी ने एक ही बात कही। कहने लगे कि तुमको तुम्हारा खूब, हमको हमारा खूब। तुझे तुम्हारा अच्छा, मुझे मेरा अच्छा। छिअ घर, छः शास्त्र हैं।

सबसे प्राचीन जो ग्रंथ है वह ऋग्वेद है। 'वेद' का शाब्दिक अर्थ है 'ज्ञान'। पहले वेद रचना केवल श्रुति थी, याद की हुई तथा जिन्होंने याद किया वे स्रोत बन बए। वेदों के बाद उपनिषद आते हैं। ये दो शब्द हैं—उप तथा निषद। उपनिषद का शाब्दिक अर्थ है पास बैठ कर जो ज्ञान हासिल किया गया। उपनिषद के बाद भारत की संस्कृति में आध्यात्मिकवादियों ने जो ग्रंथ दिए वे हैं दर्शन। इसकी दो धाराएं हैं—एक नास्तिक पक्ष तथा दूसरा आस्तिक पक्ष। जो छः शास्त्र हैं, वैसे 'दर्शन' का शाब्दिक अर्थ हम 'फ़िलासफी' भी करते हैं। 'फ़िलो' का अर्थ है 'देखने वाला'। देखने के बाद जिसने सिद्धांत दिया उसे

दर्शन कहा गया। छः शास्त्र हैं। उनकी गिनती आप जानते भी होंगे। उनमें न्याय, सांख, विशेषक, मीमांसा, योग तथा विधांत, ये छः शास्त्र हैं। इनके अलग-अलग रचयितों ने उन्हें **छिअ गुर** कहा है। **छिअ घर छिअ गुर।** गौतम, कपिल, कनात, जैमनी, व्यास, पतांजलि, ये छः शास्त्रों के छः रचयिता भी हैं। प्रत्येक शास्त्र का अपना-अपना उपदेश है। उसे गुरु जी ने कहा है :

छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस।।

अब देखो, गुरु साहिब जी की कमाल की हम पर रहमत। एक दम हमें उठाकर कर्त्ते के साथ ले गए। कहने लगे :

गुरु गुरु एको वेस अनेक।।

उस कर्त्ते की किरत हैं ऋषि। उस कर्त्ते की किरत के साथ जो उनमें से ज्ञान पैदा हुआ। 'गुरु गुरु एको' का अर्थ है इन्हीं का शिरोमणि गुरु एक है, जिसे बाबा जी ने कहा है एक ओअंकार, जिसे कहा है :

साहिबु मेरा एको है।। *(अंग ३५०)*

जिसे कहा :

अनिक बिसथार एक ते भए।।
एकु अराधि पराछत गए।। *(अंग २८९)*

इन सभी का शिरोमणि गुरु एक परिपूर्ण परमात्मा है।

वेस अनेक।।

जो छः शास्त्र हैं ये भी उसके वेष हैं। वेष उसके अनेकों हैं लेकिन है वह एक। बादशाह की उदाहरण ले लें। बादशाह ने अनेकों पोशाकें बनाईं, किसी पर कोई रंग, किसी पर कोई रंग, मगर याद रखना, पोशाकें अलमारी में सैंकड़ों हो सकती हैं लेकिन पहनने वाला केवल एक ही है। हे मेरे साईं! कोई बेद कहे, कोई कतेब कहे, कोई अल्लाह कहे, कोई राम कहे, कोई रहीम कहे, सुलतान मेरे! ये तेरे अलग-अलग वेष हैं। देखो, कितनी निरवैरता है!

एक बार एक आदमी दलील के साथ सिद्ध करता था कि प्रभु-नाम की कोई चीज़ नहीं। किसी साधू के पास उसे ले गए। जो धर्म है, सच जानो, इसकी कितनी व्याख्या कर लोगे? गुरमुखो! अंदर को केवल अनुभव में महसूस किया जा सकता है। कितने शब्दों के साथ हम व्याख्या करेंगे। कबीर साहिब जी ने जब कहा कि :

कबीर सुरग नरक ते मै रहिओ सतिगुर के परसादि।।
चरन कमल की मउज महि रहउ अंति अरु आदि।।

(अंग १३७०)

उन्होंने कहा कि जहां मैं रहता हूं, फिर बताओ कि वैसा स्वाद क्या है? आप जी शिमला में रहते हो, कोई आप जी से पूछे कि शिमले का मौसम क्या है तो आप बताओगे कि इन महीनों में यही कुछ है। पर जो चरण-कमलों में रहते हैं वे केवल महसूस कर सकते हैं, वे बता नहीं सकते।

कबीर चरन कमल की मउज को कहि कैसे उनमान।।

कहने लगे :

कहिबे कउ सोभा नही देखा ही परवानु।। *(अंग १३७०)*

कर्त्ते के वेष हैं। वह आदमी मानता नहीं था कि प्रभु है। उसने प्रत्येक जगह पर युक्ति से, दलील से बड़े से बड़े विद्वान हरा दिए। कहता है कि परमात्मा नाम की कोई चीज़ नहीं, लोग झूठ बोलते हैं। उस फ़कीर के पास ले गए। कहने लगे, फ़कीर बाबा! इसकी तसल्ली करा। यह कहता है, परमात्मा नाम की कोई चीज़ नहीं। उसने कहा, बता बेटा, क्यों नहीं? उसने दलीलें देनी शुरू कीं। एक-एक शब्द उसका अंदर को बींधने वाला था। पूरे तीन-चार घंटे उसने बोलकर सिद्ध किया कि प्रभु कोई नहीं। उस साधू ने चरण पकड़ कर कहा कि पहले मैं कहता था प्रभु है, लेकिन अनुभव नहीं था। सच जानना, आज तुझे सुनकर पता चला है कि परमात्मा है। वह कहता हद हो गई, मैं दलील दे रहा हूं कि परमात्मा नहीं है और यह कहता है कि मैं एक दम तुझे देखकर उसके शुक्राने में जुड़ गया

हूं। परमात्मा ने ऐसे भी पैदा किए, जिन्हें इतना ज्ञान दिया कि तुझे मानने से इंकारी हैं। उसने साधू के चरण पकड़ लिए और रो पड़ा। कहता है—बाबा! मैं भी दलीलें देता था, लेकिन सच जानना, आज तू मिला है जिसका एक शब्द मुझे आस्तिक बना गया है। कर्त्ते के केते वेष हैं। समुद्र एक है, लहरें बीच में से हज़ारों निकलती हैं, मगर याद रखना, लहरें हज़ारों हो सकती हैं, समुद्र हज़ारों नहीं।

हज़ूर ने देखो जिन सिक्खों के अंदर के भ्रम तोड़े। भाई नंद लाल जी ने एक दिन वचन किया—चोजी प्रीतम! आपने मेरे पर कृपा की, मुझे चक्षु दे दिए। कौन से? कहने लगे कि यदि भगवे कपड़े पहन कर आ जाए, मैं तो भी तुझे पहचान लूंगा। यदि तू बांग देने वाला शरई बनकर आए, मैं तो भी तुझे पहचानूंगा। यदि मस्ताना फ़कीर बन कर आ जाए, मैं तो भी तुझे पहचान लूंगा, क्योंकि तू कर्त्ता है। मैं तेरे वेषों को समझ गया हूं।

गाहे सूफी गाहे ज़ाहिद गाहे कलंदर मे शवद।
रंग हाए मुख़तलिफ़ दारद बुते अयार मा।

मेरे सज्जना! तू बाहर के वेष बदलेगा, मगर मैं अंदर से तुझे जानता हूं। हज़ूर कह रहे हैं :

बाबा जै घरि करते कीरति होइ।।
सो घरु राखु वडाई तोइ।। *(अंग १२)*

यहां विद्वानों के अर्थ दो धाराओं के हैं। एक गुरमुख प्यारे बाबे का अर्थ परमात्मा के साथ भी करते हैं। हे भाई! यहां 'घरि' का अर्थ करते हैं 'सतसंगत'। जिस घर में कर्त्ते की कीर्ति हो, उस सतसंगत घर में मुझे रख, हम तेरी प्रशंसा करें। परन्तु भाई साहिब भाई जोगिंदर सिंघ जी तलवाड़ा, भाई साहिब भाई वीर सिंघ जी, उनके अलावा और भी विशेषत: डा० तारन सिंघ जी एक बात कहते हैं कि यदि प्रकरण के अनुसार अर्थ करें तो अर्थ सतसंगत न बनें। छ: घरों की जो बात चल रही है, प्रकरण शास्त्र का है, संगत का नहीं। हे भाई! जिस शास्त्र में, जिस ग्रंथ में, जिस पोथी में कर्त्ते की कीर्ति हो, उस

घर को हृदय में बसा कर रखना, उस उपदेश को कमाना। इससे तेरी प्रशंसा होगी, तू परमात्मा तक पहुंचेगा।

अब बाणी में से दर्शन करो। हजूर कहते हैं कि धर्म-ग्रंथ बुरे नहीं, वास्तव में व्याख्या करने वाले कई बार अपनी कार्य-सिद्धि कर जाते हैं।

सिम्रिति सासत्र पुंन पाप बीचारदे

पढ़ने वालों ने इतनी बात कह दी कि ये पुन्य हैं और ये पाप हैं, लेकिन :

ततै सार न जाणी।। *(अंग ९२०)*

तत्त (तत्व) की ओर क्यों नहीं गए? रोज़ाना आप पढ़ते हो :

वेदा महि नामु उतमु सो सुणहि नाही फिरहि जिउ बेतालिआ।।

(अंग ९१९)

सुनता क्यों नहीं?

चारि पुकारहि ना तू मानहि।।
खटु भी एका बात वखानहि।।
दस असटी मिलि एको कहिआ।।
ता भी जोगी भेदु न लहिआ।। *(अंग ८८६)*

चार वेदों को तू क्यों नहीं मानता? हम पढ़ते हैं कि :

सिम्रिति बेद पुराण पुकारनि पोथीआ।।

और यदि हम मानते हैं :

नाम बिना सभि कूड़ु गाल्ही होछीआ।। *(अंग ७६१)*

फिर यहां कहने लगे कि पुस्तकें पढ़ता भी रहा, संथा (पाठ) भी की :

पड़ि पुसतक संधिआ बादं।।

पढ़ कर अकेले झगड़े ही पैदा करता रहा। पढ़ कर परमात्मा की तरफ तो चला ही नहीं। धर्म कभी दूसरे से शुरू नहीं होता, धर्म

अपने से शुरू होता है। जो दूसरे से शुरू करता है, वह कभी धर्म नहीं होता।

प्राचीन समय में सियाने एक बहुत सुंदर कहानी सुनाते थे। एक बार मूर्खों का दल किसी सफ़र पर गया और रास्ते में सफ़ेद बालू आ गई, रेत आ गई तथा रेत ऐसे प्रतीत हो मानो जैसे दरिया है और अगुआ मूर्ख ने कहा कि एक काम करो, अपने कपड़े संकोच लो, तैर कर पार करना है, पानी आ गया। रेत पर हाथ-पांव मारते, शरीर को घसीटते पार कर गए। पार करके कहने लगे कि गिन लो कि आदमी पूरे हैं? जब गिनती शुरू की तो अपने आप से न करनी, दूसरे से शुरू करनी तथा लौट कर जिसने गिनती करनी, वही रो पड़ता। सभी ने पूछना, क्या हुआ? कहता है कि एक डूब गया। गिनती पूरी नहीं होनी। उसने कहा, तुझे गिनती नहीं करनी आई, मैं करता हूं। उसने भी दूसरे से शुरू करनी। फिर उसने भी रोना कि सचमुच एक डूब गया है। इतनी देर में कोई सियाना आया। उसने कहा कि रोते क्यों हो? कहते हैं कि रास्ते में दरिया आया तथा एक साथी डूब गया। कहता है, कौन-सा दरिया? चमकती रेत को दरिया कहने लगे। उसने सोचा कि ये पूरे सूरे ही लगते हैं। वह कहता है कि बताओ कितने थे? उन्होंने कहा इतने थे। कहता है, करो गिनती मेरे सामने। उसने गिनती शुरू की, दूसरे से और करके रो पड़ा तथा कहता है, देखो, अधूरे हैं। वह कहता है कि जब दूसरे से शुरू करें तो कभी भी पूरे नहीं हो रहे, अपने से शुरू करें तो हो रहे हैं। अब जब ख़ुद गिनती में आ गया तो पूरे अपने आप ही होने थे। सच जानो, हम धर्म की बात दूसरे से शुरू करते हैं। दूसरे की गिनती करने वाला अधूरा रहता है और अपने से गिनती करने वाला पूरा होता है।

हजूर ने कृपा की कि तू पढ़ता है, मगर तेरी पढ़ाई का अर्थ क्या होगा? यदि कोई विद्वान आदमी पढ़ता जाए, उदाहरणें देता जाए तो कबीर साहिब का एक वचन आता है तथा गुरु ग्रंथ साहिब के वचन हैं कि जो आदमी धर्म की पोथियां पढ़ता है, धर्म की चर्चा करता है, लेकिन कमाई नहीं करता तो कहते हैं कि किसी ने गधे

के ऊपर दो मण चंदन लाद दिया तथा गुज़रने वाले ने उसे कहा कि तू कितना खुशकिस्मत है कि आज तेरे ऊपर कीमती चंदन लदा है। गधा कहता है कि चंदन की कीमत होगी आपके लिए, मेरे लिए तो चाहे चंदन की जगह पर मिट्टी रख दो, मैंने तो भार ही ढोना है। यदि अंदर नहीं चलेगा तो साहिब ने कहा है कि :

बेद पुरान पड़े का किआ गुनु खर चंदन जस भारा।।

(अंग ११०२)

दुनिया की बातें कर लीं और यह बातें कर लीं। यदि चलता नहीं तो केवल बोझ है।

राम नाम की गति नही जानी कैसे उतरसि पारा।।

(अंग ११०३)

कृपालु-दाता ने कृपा भरे बाणी में वचन कहे हैं। जब पढ़ते हैं तो भाई गुरदास जी ने वहां किताब खोलने की बात कही है :

पुछनि गल ईमान दी काजी मुलां इकठे हाई।
वडा सांग वरताइआ लखि न सकै कुदरति कोई।
पुछनि फोलि किताब नो हिंदू वडा कि मुसलमानोई?

बाबा जी ने कहा कि किस भ्रम में पड़ गए हो?

बाबा आखे हाजीआ सुभि अमला बाझहु दोनो रोई।

(वार १:३३)

भाई साहिब ने और कहा है :

बेद कतेब भुलाइ कै मोहे लालच दुनी सैताणे।
सचु किनारे रहि गिआ खहि मरदे बाम्हणि मउलाणे।

(वार १:२१)

वेद-कतेबों के कितने वचन सुने? धन्य गुरु नानक साहिब कहते हैं :

बाबा जै घरि करते कीरति होइ।।

जिस घर में मेरे कर्त्ते की कीर्ति हो।

सो घरु राखु वडाई तोइ।।

भाई उस उपदेश को हृदय में रख, इस प्रशंसा में सुख है। यहां फिर प्रश्न पैदा हो गया कि यह कैसे हो गया? आगे से गुरु जी ने उदाहरण बहुत सुंदर दी। कहने लगे :

विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ।।

यह समय का विभाजन है। हम घड़ियों से समय की बांट करते हैं, सेकेंडों की, मिनटों की करेंगे। प्राचीन समय में जो समय की सबसे छोटी इकाई थी, वह शुरू होती थी विसे से। विसा क्या है? अब 60 सेकिंड होते हैं तथा हम कहते हैं एक मिनट। 60 मिनट एक घंटा। 12 घंटों का एक दिन तथा 12 घंटों की एक रात हम निश्चित कर लेते हैं। प्राचीन समय में जो हमारे बुज़ुर्ग थे, वे सबसे छोटी इकाई शुरू करते थे निमख से, विसे से। विसा कब बनता है? हम बैठते हैं। हमें अपनी आँखों की पलकें खोलनी तथा बंद करनी पड़तीं हैं। कुदरत का एक नियम है कि आँखें अपने आप झपकी जाती हैं। स्वस्थ आदमी जब 15 बार अपनी आँखें खोलता और बंद करता था तो इसे कहा जाता था एक विसा। जब 15 विसे होते थे उससे बनता था एक चसा। 30 चसों का बनता था एक पल। 60 पलों की बनती थी एक घड़ी। साढ़े सात घड़ियों का बनता था एक पहर तथा आठ पहरों का बनता था दिन और रात। याद रखना, सात वारों का बनता था सप्ताह। पहले बनती थी थितें, उससे बनते थे महीने, उसके बाद बनते थे साल, लेकिन सारे समय की जो हस्ती है वह सूर्य पर निर्भर है। हज़ूर कहते हैं कि गुरमुखा, चल इस आँख के झपकने से तो सदियों तक पहुंच जाएगा। यहां 'होआ' का अर्थ किया गया है 'साल'। गुरमुखो! इस साल में हुआ क्या? छः ऋतुएं आईं।

सूरजु एको रुति अनेक।।

सूर्य एक है। गर्मी आई तो सूर्य बदला नहीं। धरती के चक्कर से ही ऋतुएं बदलती गईं। यदि बर्फ पड़ी तो सूर्य वही, बसंत आई तो सूर्य वही, खिमकर आई तो सूर्य वही। कहने लगे, एक सूर्य के

अस्तित्व में कई ऋतुएं बदलती हैं। प्यारे! याद रखना, अनेकों धर्म कमाने वाले, अनेकों ग्रंथ बनाने वाले आएंगे, लेकिन परमात्मा एक ही रहेगा। प्यारे!

नानक करते के केते वेस।।

कर्त्ते के कई वेष हैं। कभी बर्फ गिराए जाता है और सूर्य वह पिघला नहीं रहा। कभी इतनी गर्मी डालता है कि आदमी का शरीर पिघलने लगता है। कर्त्ता पुरख के अनेकों वेष हैं। इस शब्द का तत्व भाव यह है कि परमात्मा निरभउ है तथा फिर किसी के साथ वह वैर नहीं कमाता। गुरु भी नहीं कमाता। आओ! करो कृपा, बख़्शो आशीश! इतनी विनतियां स्वीकार करना। भूल-चूक के लिए क्षमा!

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

तिन धंनु जणेदी माउ

आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से।।
तिन धंनु जणेदी माउ आए सफलु से।। *(अंग ४८८)*

परम सम्मानयोग्य शब्द-गुरु सत्कारयोग्य गुरु ग्रंथ साहिब सच्चे पातशाह जी की पावन पवित्र हजूरी अंदर शोभायमान गुरु-संवारे सतसंगी-जनो! जिन्हें मालिक ने कृपा करके अपने संग लगा लिया है, असल में वे प्रभु के दर पर गिरे हुए दरवेश हैं। इससे आगे हजूर ने प्रभु के चरणों में विनती करके दो दातें उनके पास से मांगीं। एक तो पहले प्रशंसा करते हुए कहा, प्रभु जी! तू सभी की पालना करने वाला है, तेरा किसी ने ठिकाना नहीं पाया लेकिन एक कृपा कर, जिन्होंने तेरे दर पर गिर कर सत्य को पहचान लिया है, मुझे उनके चरणों की ख़ाक बख़्श दे ताकि मैं अपने मुंह के साथ उनके चरणों को चूम सकूं।

एक दात, रत्ते हुओं के चरणों की सेवा तथा दूसरी दात, बाबा फ़रीद जी की ने मांगी कि प्रभु जी! आपके चरणों की शरण में आया हूं और मेरी झोली में बंदगी की ख़ैर डाल दो, सिमरन की दात दो, कमाई वाले के चरणों की धूल दे दो। सबकी पालना करने वाले! मुझ पर कृपा कर दो। मन एक उस चश्मे की तरह है कि लोग चाहे रात को सोए हों लेकिन पानी के चश्मे का प्रवाह रात को भी निरंतर चल रहा है। सुबह भी वह पानी का चश्मा निरंतर चलता है। मन भी मानो उस पानी के चश्मे की तरह है। इसकी तरफ नज़र मारकर देखें, हर समय इसके अंदर कोई न कोई विचार ज़रूर उठता रहता है। यह कितना तेज़ है? धन्य गुरु ग्रंथ साहिब जी ने अमृत बाणी

में एक वचन कहा है। देखो, शरीर की कुछ लिमिट है, कुछ दूरी तक सीमित है, लेकिन मन का स्वभाव, कहते हैं एक क्षण में पाताल में धंस जाता है, एक क्षण में आकाश में उड़ान भरता है। इतना चंचल है कि एक क्षण में सभी ओर से भटक कर फिर वापिस आ जाता है। हज़ूर के अमृत वचन हम पढ़ते हैं :

कबहू जीअड़ा ऊभि चड़तु है कबहू जाइ पइआले।।

लेकिन सभी का नहीं। कहने लगे किनका?

लोभी जीअड़ा थिरु न रहतु है चारे कुंडा भाले।।

(अंग ८७६)

चारों ओर मन दौड़ रहा है। धन्य गुरु ग्रंथ साहिब जी के चरणों में एक विनती करें—सच्चे पातशाह! कृपालता करो तथा हमारे अंदर को स्थिरता बख़्शो। बाबा फ़रीद साहिब जी के इस विचार अधीन शब्द की अंतिम पावन पवित्र पंक्तियां हैं :

परवदगार अपार अगम बेअंत तू।।
जिना पछाता सचु चुंमा पैर मूं।। ३।।
तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी।।
सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी।। ४।। *(अंग ४८८),*

पहले शब्द आया :

परवदगार अपार अगम बेअंत तू।।

'परवदगार' का शाब्दिक अर्थ है पालना (पालन-पोषण) करने वाला। 'अपार' का अर्थ है जिसका अंत किसी ने नहीं पाया। 'अगम' का शाब्दिक अर्थ है जो अपहुंच है, जहां तक हमारी इंद्रियों की पहुंच नहीं है। हे प्रभु! तू सारे जीवों की पालणा कर रहा है। धन्य गुरु ग्रंथ साहिब जी की अमृत गुरबाणी को हम पढ़ते हैं। जितने भी जीव परमात्मा ने पैदा किए हैं, प्रत्येक जीव की परमात्मा ने कोई न काई रोज़ी ज़रूर बना दी है। लेकिन जितना मनुष्य रोज़ी संबंधी चिंता में नज़र आएगा, शायद इतने पशु, इतने पक्षी, इतने धरती पर रेंगने वाले

कीड़े-मकौड़े चिंता में नहीं दिखाई देंगे। आदमी को रात-दिन रोज़ी की चिंता खा रही है। हजूर कहते हैं कि प्रभु का एक स्वभाव है कि वह जीव को बाद में पैदा करता है, पहले उसके रिज़क का प्रबंध करता है। हजूर के अमृत वचन हम पढ़ते हैं :

पहिलो दे तैं रिजकु समाहा।।

पहले तूने जीव की रोटी पैदा कर दी।

पिछो दे तैं जंतु उपाहा।। *(अंग १३०)*

जीव बाद में पैदा किया है, पहले उसके रिज़क (रोज़ी-रोटी) का प्रबंध किया है। लेकिन इंसान का अंदर फिर भी स्थिरता में नहीं। इसका एक कारण है। बाबा फ़रीद साहिब जी का एक श्लोक है कि यदि आदमी अपने गिरेबान में झांके तो शायद इसके अंदर को स्थिरता मिल जाए। वास्तव में जब इसकी आंखें दूसरी तरफ देखती हैं तभी उसके अंदर भटकन पैदा होती है। चाहे पराए तन को देखे, चाहे पराए धन को देखे, चाहे पराए तरक्की करते हुए मनुष्य को देखे, जब दूसरे को देखकर ईर्ष्या पालता है तब अंदर भटकन पैदा होती है और बाबा फ़रीद साहिब जी ने एक वचन कहा है कि सच जानना, तेरे अंदर की चिंता का कारण एक ही है कि जो तेरी थाली में प्रभु ने तुझे दिया है उसमें से निवाला खाने की बजाए तू दूसरों की थाली की तरफ देखता है। जब हक का निवाला देखेगा तब कभी भी तेरा अंदर चिंता रहित नहीं होगा। चिंता का कारण ही यही है। बाबा जी का वचन हमने पढ़ा था कि :

रुखी सुखी खाइ कै ठंढा पाणी पीउ।।

इसका मतलब, जो परमात्मा ने तुझे दिया है उस पर सब्र-संतोष कर।

कभी लोगों के अंदर का विश्लेषण करके देखें तो मनुष्य अपने आए हुए दुख से इतना दुखी नहीं जितना दूसरों के सुख से परेशान हो रहा है। इससे दूसरे का सुख बर्दाश्त नहीं होता। यही कारण है कि दूसरे का सुख ही इसके अंदर भटकन पैदा करता है।

रुखी सुखी खाइ कै ठंढा पाणी पीउ।।
फरीदा देखि पराई चोपड़ी

इसका मतलब, बेगाने की रोटी न देख, अपनी रोटी, अपना प्रालब्ध, अपने माथे पर लिखे हुए लेख देख। जो तुझे मिल रहा है तू उस पर यकीन कर।

फरीदा देखि पराई चोपड़ी ना तरसाए जीउ।। *(अंग १३७९)*

ज़िंद (ज़िन्दगी, जान) तभी तरसती है जब देखने के निवाले की तरफ हमारा हाथ जाता है। हजूर कहने लगे कि परवदगार है परमात्मा, सभी की पालना करने वाला है। दरवेश तथा पक्षी एक हैं। कभी देखो, दरवेश को भी प्रभु ने वह दात दी है तथा पक्षी को भी वह दात दी है। यूं कह लें कि प्रभु के चरणों में गिरा हुआ दरवेश उड़ने वाले पक्षी से अपनी ज़िन्दगी की दिशा लेता है। हज़ूर के अमृत वचनों में से एक श्लोक है तथा श्लोक के उच्चारणकर्त्ता हैं धन्य गुरु नानक साहिब जी। साहिब फ़रमाते हैं कि देखो, जो पक्षी है उसके घोंसले में न आप सोने के भंडार देखोगे, न उसके घोंसले में चांदी, हीरे, जवाहरात देखोगे। यहां तक कि कुछ चुन कर वह अपनी चोंच में डालकर आ गया, उस पर सब्र किए बैठा है तथा रात को घोंसले में आ बैठा है और आदमी से कितना अच्छा है। इसके जागने से पहले वह परमात्मा को याद कर रहा है। चाहे उसके पुकारने का तरीका अलग है, लेकिन प्रभु के प्यारे दरवेश कहते हैं कि पक्षी प्रभु पर भरोसा करके जीता है। उसे पता है कि परवदगार परमात्मा है और सच जानना, वह जंगल में से कंकड़ भी उठा कर परमात्मा का शुक्राना करता है, कभी उसको उलाहना नहीं देता। हज़ूर के अमृत वचन हम पढ़ते हैं कि :

परंदए न गिराह जर।।

'परंदए' का शाब्दिक अर्थ है 'पक्षी'। पक्षियों के पास न सोना है, न उन्होंने रोटी के भंडार इकट्ठे किए हैं।

दरखत आब आस कर।।

पेड़ पर यकीन करके बैठा है, क्योंकि परमात्मा परवदगार है।

दिहंद सुई।।

और पक्षी भी कह रहे हैं, मालिक!

एक तुई एक तुई।। *(अंग १४४)*

रिज़क (धन-पदार्थ) देने वाला तू है। साहिब कृपालु जी के अमृत वचनों में से ही बाबा फ़रीद साहिब जी का वचन आता है। कहते हैं कि कई बार चित्त करता है अपने आप को आदमी चाहे चौरासी का सरदार मानता है, लेकिन नज़र मार कर देखो कि कई बार इससे बढ़कर सब्र जब दूसरी योनियों में मिलता है तो चित्त कहता है कि इनसे कुर्बान जाएं। जिन्हें आदमी टेढ़ी-मेढ़ी योनियां कह रहा है। खुद को चौरासी का सरदार मानता है, वो क्यों? जितने भी दुखांत घटित होते हैं, कभी किसी पक्षी को आपने पानी में डूबकर मरते नहीं देखा। यह बात अलग है कि प्राकृतिक रूप से कोई घटना घटे और नदी में पक्षी का घोंसला बह जाए, लेकिन कभी भी कोई पक्षी परमात्मा की दी हुई ज़िन्दगी से परेशान होकर पानी में डूबकर मरता हुआ नहीं देखोगे। कभी किसी पशु को आप जी ने किसी ट्रेन के नीचे या किसी बिजली की तार के पास जाकर अपने आप को खत्म करते हुए नहीं देखा। मैं कहता हूं कि कितना सब्र (संतोष) है उन जीवों में। हम कहेंगे उनके पास बुद्धि नहीं। इस निपुण बुद्धि से तो उनकी बुद्धि सही है कि जो प्रभु के दिए हुए पर भरोसा करके बैठे हैं। पशु, पक्षी आत्म-हत्या नहीं करते। जिन्हें हम चौरासी का सरदार कहते हैं, इसकी चिंता इसे इतना परेशान करती है कि यह चिंता का मारा हुआ अपनी ज़िन्दगी को तबाह कर देता है। साहिब कहते हैं कि पक्षियों को देख, जो परमात्मा की दी दात पर भरोसा किए बैठे हैं कि देने वाला परमात्मा केवल एक है। बाबा जी ने फ़रमाया है :

फरीदा हउ बलिहारी तिन्ह पंखीआ

मैं उन उड़ने वाले परिंदों से कुर्बान जाता हूं। किनसे?

जंगलि जिन्हा वासु।।

जो रहते भी जंगल में हैं। उनके घरों में पत्थर नहीं लगे हैं। आज से सदियों पहले भी घोंसले थे तथा सदियां व्यतीत हो गईं, आज भी घास के घोंसले में बैठे हैं। लेकिन याद रखना, आदमी कभी कच्चे कुल्लों (मकानों) में रहता था, पेड़ों पर रहता था, विकास करते-करते अटरियां ऊंची-ऊंची बनाकर महलों में रह रहा है, लेकिन पक्षी घोंसले में बैठा आज भी शुक्र कर रहा है। आदमी इतनी सहूलतें लेकर भी परमात्मा से आकी (बाग़ी) हो गया है। हजूर ने फ़रमाया है :

फरीदा हउ बलिहारी तिन्ह पंखीआ जंगलि जिन्हा वासु।।
ककरु चुगनि थलि वसनि रब न छोडनि पासु।।

(अंग १३८३)

उन्होंने भगवान वाला पासा कभी नहीं छोड़ा, चाहे उनके चहकने का तरीका कोई और हो। आखिर वे भी तो प्रभु को याद कर रहे हैं। गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी में गुरु अमरदास जी का वचन आप पढ़ते हो। हजूर फ़रमाते हैं :

जो बोलत है म्रिग मीन पंखेरू सु बिनु हरि जापत है नही होर।।

(अंग १२६५)

जो पक्षी चहकते हैं, पानी में रहते हुए जीव पुकारते हैं, गुरु ग्रंथ साहिब कहते हैं कि सच जानो, वे परमात्मा को याद कर रहे हैं।

इस संसार में कोई मनुष्य किसी को कुछ देता है तो हर देने वाले आदमी की तह में कहीं न कहीं लालच रुका है। आप आसा की वार का पाठ करते हो। गुरु ग्रंथ साहिब जी की गाणी में से बाबा नानक जी का एक अमृत वचन है कि मनुष्य को जब मनुष्य देता है वह भी किसी आशा पर कुछ देता है। गरीब की कोई मदद करता है तो अमीर का कोई लालच है कि चार आदमी किसी के पीछे खड़े होने के लिए ज़रूरत पड़ी और जितनी मैं आज मदद कर रहा हूं, यह कल को मेरी मदद ज़रूर करेगा। हजूर कहते हैं कि केवल आदमी आदमी की मदद करके यह आशा रखता है। यहां तक कि गुरु के सामने भी जब कुछ भेंट करता है तो बहुत से लोगों के अंदर की

यह वृत्ति है कि परमातमा को एक गुना दिया है तथा परमात्मा इसके बदले हमें हज़ार गुना दे। सतिगुरु वचन कहते हैं :

दे दे मंगहि सहसा गूणा

देता एक गुना है और मांगता हज़ार गुना है। रखा एक रुपया है और आशा है इसके बदले हज़ार मिलेंगे तथा अकेले हज़ार नहीं, फिर कहता है कम से कम मोहल्ले में, शहर में, गुरु-घर आए हुए लोगों को यह बात अवश्य बताओ कि मैंने इतना कुछ परमात्मा को, मंदिर को दिया। साहिब कहते हैं कि कैसा चुस्त व्यापारी है इंसान तू? एक रुपया, हज़ारों की आशा करके रखता है। यदि गुरु को हज़ारों गुना ब्याज़ लगाने लगा है तो फिर कम से कम अपनी शोभा न करा।

दे दे मंगहि सहसा गूणा सोभ करे संसारु।। *(अंग ४६६)*

लेकिन उस परवरदिगार की तरफ नज़र मार कर देखें, क्या उसे कोई लालच है? गुरु गोबिंद सिंघ जी फ़रमाते हैं कि उस देने वाले को कामना कोई नहीं, उसे लालच कोई नहीं, उसे मोह कोई नहीं, उसका भोग कोई नहीं, उसका अपना कोई तन नहीं, लेकिन याद रखना, सभी जो तनधारी जीव हैं, उन जीवों की रोज़ी का प्रबंध किए बैठा है। जिन्हें समझ है तथा जिन्हें नहीं समझ, अब प्यारो! परमात्मा का खेल तो ऐसा है कि वह कभी देते समय भी किसी के अवगुण नहीं विचारता। यदि परमात्मा हमारे अवगुणों का, हमारे कर्मों का लेखा-जोखा देख कर हमें रोटी दे तो हो सकता है किसी विरले-विरले इंसान को पेट भर कर रोटी मिले। वह कर्म नहीं देखता, वह अपनी केवल रहमत देखता है। हज़ूर बख़्शिश करते हैं कि वह परमात्मा तेरी ख़बर लेगा, उस परवरदिगार पर भरोसा रख, क्यों परेशान हो रहा है? सिक्खा! तुझे राजनीति खेलने के लिए शब्द कहने पड़ सकते हैं कि मैं सबके चरणों की धूल हूं जी। तेरा बाबा बेमुहताज है। तेरा बाबा वेपरवाह है, तेरे जगत् गुरु नानक साहिब को किसी की मोहताजी

नहीं। सच जानना, धुर अंदर से कह रहे हैं जो प्रभु के रंग में रंगे हैं कि परमात्मा! मुझे उसके चरणों की धूल दो।

हंउ कुरबानै जाउ मिहरवाना हंउ कुरबानै जाउ।।
हंउ कुरबानै जाउ तिना कै लैनि जो तेरा नाउ।।

जो तेरा नाम जपते हैं, मैं उनसे कुर्बान जाता हूं।

लैनि जो तेरा नाउ तिना कै हंउ सद कुरबानै जाउ।। १।। रहाउ।।

(अंग ७२२)

कहने लगे भलिआ (भले पुरुष)! यदि रखने के लिए चला है तो यत्न कर :

काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे

यहाँ 'रंङणि' का अर्थ 'रंगना' नहीं, यहां 'रंङणि' का अर्थ है 'वह बर्तन जिसमें कपड़ा रंगा जाता है'। कहते हैं अपने तन को बर्तन बना, यत्न कर, इसमें मजीठ का पक्का रंग घोल तथा अंदर के चोले को मजीठ रंग में रंग दे।

काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ।।
रंङण वाला जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न डीठ।। २।।
जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि।।
धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि।।

(अंग ७२२)

गुरु नानक साहिब कहते हैं कि यदि तू ऊंची कुल में पैदा हुआ है तो प्रभु का नाम जप ले, तेरे से कुर्बान हूं, लेकिन साथ में एक वचन किया है कि जो इंसान नीची कुल में पैदा हुआ हो, जिसे जन्म से लेकर ऊंची जाति वालों ने ठोकरें मारी हों, जिन्हें ऊंची जाति वालों ने कभी कुएं से पानी न भरने दिया हो, मेरे बाबा नानक जी कहते हैं कि प्यारे! यदि कहीं नीची जाति वाला रब्ब-रब्ब जपता है तो मैं इससे इतना कुर्बान जाऊंगा कि मेरे तन की चमड़ी लेकर उसके पैरों की जूती बना दो, जो परमात्मा के नाम में रंगा हुआ है। हजूर ने कहा :

जाति कुलीनु सेवकु जे होइ।। ता का कहणा कहहु न कोइ।।
विचि सनातीं सेवकु होइ।। नानक पण्हीआ पहिरै सोइ।।

(अंग १२५६)

गुरु ग्रंथ साहिब में सच जानो, बहुत से उन भक्तों की बाणी है जिन्हें समय के समाज ने दुरकार कर रख दिया है। कहा जाता था यह भगवान का घर है तथा जब कोई भगवान का आशिक कहीं अपनी मौज में होता था तो उसे टांगों से पकड़ कर, ठोकरें मार कर बाहर निकाल देते थे। नीची जाति वाला भगवान के घर नहीं जा सकता था। एक नई क्रांति आई। वह क्रांति क्या थी? जो सपना भक्त रविदास जी ने लिया था कि :

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।।
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै।।१।।रहाउ।।
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै।।
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै।।१।।

(अंग ११०६)

मेरे गुरु अरजन साहिब गुरु नानक साहिब जी की ज्योति ने **'नीचहु ऊच'** करते हुए रंचक मात्र भी परवाह नहीं की। जिन्हें लोग अपने घर शरण नहीं देते थे, दहलीज़ पार नहीं करने देते थे, मेरे नीचहु ऊच करने वाले गुरु ने उनके अलाही वचनों को अपने वचनों के बराबर रख कर गुरु ग्रंथ साहिब में कह दिया कि सिक्खा! तू बाबे नामदेव का वचन पढ़ना, तू बाबे रविदास की बाणी पढ़ना, तू बाबे कबीर की बाणी पढ़ना और सच जानना, ये नीची जाति वाले कौन हैं? मेरे गुरु अमरदास जी ने कहा है :

नामा छीबा कबीरु जुोलाहा पूरे गुर ते गति पाई।।
ब्रहम के बेते सबदु पछाणहि हउमै जाति गवाई।।
सुरि नर तिन की बाणी गावहि कोइ न मेटै भाई।।

(अंग ६७)

इनकी बाणी दर्ज कर दी। मेरे कहने से तात्पर्य है कि यदि कोई नीची जाति का है और मैं उसकी सेवा कर सकता हूं। यदि सच

को पहचान गया है तो मेरे तन की चमड़ी से उसके चरणों का जोड़ा (जूता) बना दो। सिक्खा! जो गुरु के बताए मार्ग पर, सच पर चले, हकीकत है उन सिक्खों के भी चरण पकड़ो। प्यारो! सच जिन्होंने पहचाना है।

हम गुरु नानक साहिब जी की बाणी पढ़ते हैं और ध्यान देना, कोई भी तवारीख़ की बात करने से पहले गुरु ग्रंथ साहिब के शब्द की रोशनी ले लेना, क्योंकि शब्द ही अंतिम सिक्ख के लिए सच है। बाबे नानक ने कुसमय का सच नहीं बोला, समय का सच बोला है। हमें पता होता है कि आदमी गुनाह कर रहा है, लेकिन हम जानबूझ कर अपना नाक-नमूज़ रखने के लिए कहते हैं कि छोड़ो इसे। अपनी कन्नी काट जाते हैं और जिस दिन भाणा वापरदा (घटना घटित होना) है तो कहते हैं कि हमें पता तो था लेकिन हमने क्या कहना था? कुसमय का बोला हुआ सच कभी सच नहीं होता। सच वह है जो समय पर बोला जाए। बाबा जी का वचन हम पढ़ते हैं कि :

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो।।

क्या बाबा जी? कहने लगे :

पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दानु वे लालो।।

उसमें एक पंक्ति आती है :

सच की बाणी नानकु आखै सचु सुणाइसी सच की बेला।।

(अंग ७२२-२३)

प्यारो! उस परमात्मा के आगे अरदास करो कि हम भी सच को पहचानें। अरदास धन के लिए, पदार्थ के लिए, संतान के लिए करनी कोई बुरी बात नहीं, लेकिन यह कभी न भूलना कि :

मागना मागनु नीका हरि जसु गुर ते मागना।।

(अंग १०१८)

यदि गुरु नानक साहिब को पूछें तो वे भी परमात्मा के चरणों में पुकार करते हैं। कहते हैं कि हे प्रभु! तू मेरी झोली में नाम डाल। नाम का दान सबसे बड़ा दान है। जब दानों की विचार करें तो आप

सज्जनों ने वह विचार सुनी होगी अरदास में कि सिक्खों को सिक्खी दान, केश दान, रहित दान, विवेक दान, विसाह दान, भरोसा दान, अगली पंक्ति है दानां सिर दान। 'सिर' का शाब्दिक अर्थ है 'जोड़'। सभी दान अच्छे हैं। 'दानां सिर दान', जो भी दान किया। नाम दान यदि है तो अंदर के खेल हैं तो ही सतिगुरु के बारे में भाई गुरदास जी कहते हैं कि गुरु ने क्या मांगा?

पहिला बाबे पाया बखसु दरि पिछोदे फिरि घालि कमाई।
रेतु अक्कु आहारु करि रोड़ा की गुर कीअ विछाई।
भारी करी तपसिआ वडे भागि हरि सिउ बणि आई।
बाबा पैधा सचि खंडि नउ निधि नामु गरीबी पाई।

(वार १:२४)

सिक्खा! कभी तू अरदास कर :

करता तू मेरा जजमानु।।
इक दखिणा हउ तै पहि मागउ देहि आपणा नामु।।

(अंग १३२९)

मेरी आंखों को अपने दीदार की दात दे, मेरे सीने को अपने ख़ज़ाने में से कोई दात बख़्श। गुरु कृपा करे, हम इस शब्द को कमा सकें। सतिगुरु हमें अंदर का प्रेम बख़्शें। सतिगुरु रहमत करें। भूल-चूक की क्षमा बख़्शना!

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

से पूरे परधान

परम सम्मानयोग्य गुरु ग्रंथ साहिब जी की हजूरी अंदर शोभायमान सतसंगी-जनो! गुरु अरजन देव जी ने इस वचन की आरम्भता में यह पंक्ति कही है :

जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ से पूरे परधान।।
जिन कउ आपि दइआलु होइ तिन उपजै मनि गिआनु।।
जिन कउ मसतकि लिखिआ तिन पाइआ हरि नामु।। १ ।।

(अंग ४५)

जिन किस्मत वालों ने अपने चित्त को सतिगुरु जी के चरणों में लगा लिया, गुरु के शब्द में लगा दिया, वे पूरे भी हैं और प्रधान भी हैं। इन दो शब्दों की हम व्याख्या करेंगे—एक पूरे तथा दूसरा प्रधान। धन्य गुरु ग्रंथ साहिब जी की अमृत बाणी में हजूर ने सबसे पहले पूरा शब्द प्रयोग किया है परमात्मा के लिए। दूसरा शब्द प्रयोग किया है पूरे गुरु के लिए तथा तीसरा शब्द प्रयोग किया है उन कमाई वालों के लिए, जो पूरे गुरु के चरणों में जुड़ कर उस पूरे परमात्मा को प्राप्त कर गए तथा अपने शरीर के अंत होने से पहले वे असल में इस संसार में रहते पूर्ण हो गए।

कोई भी अधूरी चीज़ मनुष्य को अच्छी नहीं लगती। हम किसी भी मनुष्य का लिखा हुआ कोई लेख पढ़ें और उस लेख को पढ़ते हुए जो बात उस लिखारी ने शुरू की है तथा उस विषय को अभी आरम्भ ही किया है, दो-चार पैरे ही अभी लिखे हैं, अभी बात मुकम्मल नहीं हुई तथा लेखक आगे से लिखना छोड़ दे और वह संसार से कूच कर जाए तो हम कई बार उस लेखनी को पढ़ते हैं। जितना

लिखा है, उसका आनंद तो उठाते हैं, लेकिन साथ एक आशंका पैदा होती है कि काश! यदि कहीं परमात्मा इसे ज़िन्दगी देता तो अपने इस लेख को यह मुकम्मल कर जाता, क्योंकि लिखे हुए अधूरे लेख संतुष्ट नहीं करते। भाई साहिब भाई वीर सिंघ जी ने गुरु ग्रंथ साहिब जी का टीका-अर्थ करने प्रारम्भ किए, उनके कुछ हिस्से ही हमें मिलते हैं, लेकिन परमात्मा द्वारा बुलावा आया और संसार से वे कूच कर गए। वह अर्थ जब हम पढ़ते हैं तो हमारे मन के अंदर यह बार-बार ख़्याल उठता है कि यदि कहीं प्रभु चार दिन ज़िन्दगी और देता तो भाई साहिब टीका मुकम्मल कर जाते, यह अधूरा रह गया। अधूरा करके जितना बना, उतना रस देता है तथा जो मुकम्मल नहीं हुआ वह हमारे अंदर को खेद भी देता है।

दूसरी विनती कि कोई इंसान अपने घर को शुरू करता है, मकान बनाने लगा है। कोई इमारत बना रहा है और वह यह कह दे कि मैं जो इमारत बनाने लगा हूं, इस इमारत को बनाते समय इतने साल लगेंगे। लोग इस इमारत को देखेंगे, लेकिन प्यारिओ! यदि वह इमारत अभी खड़ी हो, उसकी दीवारें ही खड़ी हों और बनाने वाला संसार से कूच कर जाए, उसके बनाने में विघ्न पड़ जाए तो उस इमारत को लोग देखने ज़रूर जाएंगे, मगर मन में फिर यह डर खटकेगा कि यदि कहीं यह इमारत मुकम्मल हुई होती। अधूरी होने के कारण हमें यह अच्छी नहीं लगती।

प्यारो! संसार की कोई भी चीज़ ले लो, अधूरी चीज़ कोई भाती नहीं। यदि चीज़ें अधूरी हों तो इंसान का अंदर संतुष्ट नहीं। उस इंसान की ओर नज़र मार कर देखो कि जो ज़िन्दगी लेकर परमात्मा की याद में नहीं जुड़ा। इसके अधूरे होने की बात तो बहुत दूर की बात है, इसने तो अभी नींव भी नहीं रखी। जिसने नींव भी नहीं रखी उस इंसान को भाएगा कैसे? मुकम्मल तो बहुत अच्छी बात है, अधूरापन भी कुछ प्राप्ति है और जो चला ही नहीं, उसे हम क्या कहेंगे?

आज पूरे प्रधान की बात है। इंसानी जामा मिला है। सच पूछो तो यह इंसान को पूरे होने के लिए मिला है। यही कारण है कि जब किसी आदमी की मृत्यु होती है तो अक्सर गांवों में बुज़ुर्ग यह शब्द प्रयोग करते हैं कि अमुक इंसान आज पूरा हो गया। उनकी शब्दावली में पूरे का अर्थ इसकी मृत्यु हो गई। प्यारो! शारीरिक रूप से श्वास पूरे होते हैं, लेकिन इस बात को कभी भूलें न कि मृत्यु करके पूरे नहीं हुए, कभी अंदर से पूरे नहीं होते। पूरे का अर्थ यह है कि जो मृत्यु के पूरे होने से पहले-पहले अपने अंदर को भी पूरे परमात्मा के चरणों के साथ जोड़ कर अंदर से पूरा हो जाए।

एक उदाहरण मैं आप जी को देनी चाहूंगा। जब नवजात बच्चा जन्म लेता है तो उसके हाथ देखा करो। जब कोई आदमी संसार में से चलाणा करता है तो तब भी उसके हाथ देखा करो। कई बार जब मैं देखता हूं तो मेरे मन में एक ख़्याल आता है कि जब बच्चा जन्म लेता है तो दोनों हाथों की उंगलियां बंद होती हैं। जब कोई आदमी संसार से कूच करता है तो उसके हाथ हमेशा खुले होंगे। यदि कहीं इंसान एक पैदा हुए बच्चे के हाथों में से और जा चुके इंसान के हाथों में से कुछ सीखना चाहे तो हकीकत है कि इंसान के शरीर के हाथ भी हमें कुछ बता रहे हैं कि धरती पर जीने वालो! देखो जिस समय बच्चे का जन्म हुआ इसकी दोनों मुट्ठियां बंद थीं, लेकिन जब यही शरीर संसार से कूच हुआ तो इसके दोनों हाथ खुले हैं। इसका मतलब कि जिस दिन मनुष्य दुनिया पर आया, उस दिन इस बच्चे की मुट्ठी में बहुत कुछ था, इसके पास श्वास थे, इसके पास ज़िन्दगी के दिन थे, इसके पास सीखने के लिए समय था, इसके पास उम्र के कुछ पड़ाव थे। जिस दिन इंसान का जन्म हुआ उस दिन अपनी मुट्ठी में बहुत कुछ लेकर आया तथा जब दुनिया से चलने लगा तो दोनों हाथ खाली हैं और देखने वाले लोगों को बता रहा है कि संसार के लोगो! आया बहुत कुछ लेकर था लेकिन चलते समय दोनों हाथ खाली हो गए। न श्वास मेरे पास हैं, न ज़िन्दगी का समय मेरे पास है, न बीते हुए दिन मेरे पास हैं, जो मैं बचपन में लेकर आया था।

जो प्रभु की बंदगी करने वाले हैं उन्होंने गुरु की कृपा से अपने आप को मुकम्मल करने का यत्न किया। प्रधान के अर्थ हैं मुखी। गुरु ग्रंथ साहिब में सच्चे पातशाह जी ने पहली बार शब्द जो 'परधान' है वह जपु जी साहिब में प्रयोग किया है। वहां परधान से पहले एक शब्द लगाया 'पंच'। जो 'पंच' शब्द है वह गिनती वाला पांच नहीं, उसके अर्थ हैं 'गुरमुख'।

पंच परवाण पंच परधानु।।
पंचे पावहि दरगहि मानु।। *(अंग ३)*

पंच परधानु, इनमें जो पांच गुण आए। पहला गुण था कि उन्होंने सुना। दूसरा गुण था कि उन्होंने माना। तीसरा उनके पास लक्षण था कि मानने के बाद वे गाने लगे। गाने के बाद वे **हुकमि रजाई** चले तथा पांचवां गुण उनके मन अंदर आ गया कि **मनि रखीऐ भाउ।** उन्होंने अपने अंदर उस प्रेम-भावना को टिका लिया। यहां प्रधान के अर्थ न वोटों से, न ताकत से, न इंसानों की ज़िंदाबाद तथा न मुर्दाबाद से हैं। हज़ूर ने शब्द प्रयोग किए। पहली बात, जिन्होंने सुना। आप जी कहोगे कि **हुकमि रजाई** मैं बाद में कह रहा हूं। क्योंकि **हुकमि रजाई** चलना ज़रूर कहा है मगर हुक्म-रज़ा में चल वह सकता है जिसने पहले परमात्मा को सुना, गाया तथा उसे माना, तो ही वह हुक्म में चलेगा। जिसने सुना नहीं प्यारो! वह हुक्म में कैसे चल सकता है?

पंच परधानु कैसे हो गए? पहली बात, उन गुरमुखो ने सुना। प्यारिओ! ये कान कई सालों से सुन रहे हैं तथा सुनने के इतने आदी हो गए हैं कि इनका काम ही है सुनना। हज़ूर कहने लगे कि कौन-सी चीज़ सुनें जहां पूरे प्रधान होने की अवस्था में आ जाएं। दाता जी का वचन है:

नानक भगता सदा विगासु।।
सुणिऐ दूख पाप का नासु।। *(अंग ३)*

परन्तु यह नहीं बताया कि क्या सुनें। हम कहेंगे बाणी सुनें। चाहिए, अच्छी बात है, क्योंकि सुनना बहुत बड़ा गुण है। बाबा जी ने चार पउड़ियां सुनने की कहीं। हालांकि गुरु ग्रंथ साहिब में पता नहीं कितने शब्द सुनने से संबंधित हैं, लेकिन हम उन चारों में पढ़ते हैं कि :

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ।।
सुणिऐ धरति धवल आकास।।
सुणिऐ दीप लोअ पाताल।।
सुणिऐ पोहि न सकै कालु।।
नानक भगता सदा विगासु।।
सुणिऐ दूख पाप का नासु।। *(अंग २)*

सुनने का अर्थ केवल बाहर के कानों तक सीमित नहीं। यह वो स्त्रोत है जो इन कानों के बिना सुनी जाती है। बाबा जी ने कहा कि :

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा।। *(अंग १३९)*

अब हालांकि सुनने का संबंध कानों से है। गुरु अमरदास पिता जी ने तो कह दिया :

ऐ स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए।। *(अंग ९२१)*

साचै सुनणै का यह अर्थ नहीं कि मैं जो कह रहा हूं, सच कहता हूं। **साचै सुनणै** का अर्थ है कि अपनी अंतर-आत्मा में बाहर की हर आवाज़ को बंद करके केवल वाहिगुरु को सुन। जब अंदर की धुनि को सुनेगा तो सच जानना, प्रधान बनने के लिए तेरा पहला पाठ होगा, यदि पूरे प्रधान बनना है।

गुरु साहिब का वचन कई बार मैंने आप जी के साथ सांझा किया है। माघ महीना हम पढ़ते हैं। गुरु जी कहते हैं :

हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु।।

(अंग १३५)

सुनना बहुत बड़ी परमात्मा की दया है। सच जानो, सुनने वाले बहुत हैं। हम जितने सुनाने वाले हैं, शायद हमारे पास इतना सुनने

का हाज़मा नहीं। हम केवल सुना सकते हैं। जितना कोई अपने गहरे तल से सुनेगा, जितना कोई अपनी अंतर-आत्मा से सुनेगा, प्यारो! सच जानना, उतना अंदर से सुख लेगा, लेकिन जब अंदर सुनने लगते हैं तो बहुत चीखें बजती हैं। गुरु ग्रंथ साहिब का एक श्लोक आता है :

बारि विडानड़ै हुंमस धुंमस कूका पईआ राही।।

कहते हैं कि जब मैं चलने लगा अंदर की यात्रा पर तो पहली बात यह कि बेगाने शहर थे, अपना तो कोई है नहीं था। कहते हैं कि एक दम मेरे कानों में आवाज़ें पड़ीं। अब वे आवाज़ें काहे की थीं? शायद इन्हीं आवाज़ों को बाबा फ़रीद जी ने जब सुना तो उन्होंने यहां तक कह दिया कि यह तन का काम तो भौंकना ही है। कहने लगे कि प्रभु को सुनने से पहले-पहले कान में डाट दिए जाते हैं। क्योंकि जितना मर्ज़ी तन भौंकता जाए, मैंने इसे नहीं सुनना, मैंने इसके अंदर प्रभु को सुनना है। कौन है पूरा प्रधान? हम बाबा जी का एक वचन पढ़ते हैं। वह वचन आता है कि :

बारि विडानड़ै हुंमस धुंमस कूका पईआ राही।। *(अंग ५२०)*

मार्ग में रोने की आवाज़, विलाप करने की आवाज़ क्यों? ये कौन-सी आवाज़ें हैं जब कोई इंसान परमात्मा की कृपा से अपनी अंदर की यात्रा पर निकलता है और कूकें (आवाज़ें) सुनाई देती हैं? जो किए हुए पाप हैं, किए हुए गुनाह हैं, प्यारिओ! ऊंची-ऊंची आवाज़ें मारते हैं। यही कारण है कि हम अपने अंदर को टिकाकर उन्हें नहीं सुन सकते, क्योंकि हमारे अंदर के पापों की आवाज़ें नहीं हमें सुनने देतीं। गुरु जी ने कहा है कि तू सुन, ये आवाज़ें बंद होंगी। बाबा फ़रीद साहिब ने इस आवाज़ के संबंध में कहा :

फरीदा इहु तनु भउकणा

इसका काम ही है भौंके जाना।

फरीदा इहु तनु भउकणा नित नित दुखीऐ कउणु।।

कहते हैं कि अब मैंने इसे सुनना छोड़ दिया है।

कंनी बुजे दे रहां किती वगै पउणु।। *(अंग १३८२)*

जितनी मर्ज़ी आवाज़ आती जाए मैं इसे नहीं सुनता, मैं परमात्मा को सुनने लगा हूं। जिसने प्रधान बनना है, उसे पहली विनती है कि सुनना शुरू करे। सुनने के बाद तू इसे मान। जो तू सुन रहा है इसे भ्रम न समझ, इसे सही अर्थों में मानना शुरू कर दे। फिर जब तू मानेगा तो याद रखना, मानने वाले बेमुहताज होकर जाते हैं। हम वचन पढ़ते हैं :

मंनै पावहि मोखु दुआरु।।
मंनै परवारै साधारु।।
मंनै तरै तारे गुरु सिख।।
मंनै नानक भवहि न भिख।। *(अंग ३)*

वह मोहताज नहीं रहता जो पहले सुने, फिर माने तथा मानने के बाद वह गाने लगता है। यही कारण है कि जब भी परमात्मा की भक्ति वाला पूरा होता है तो पूरे हुए फिर गाना शुरू कर देता है। कोई सोचे कि उन्होंने किसी संगीतकार से संगीत नहीं सीखा, किसी राग-आचार्य के पास जाकर राग की विद्या नहीं ली, लेकिन वे गाने लग पड़े। उनके अंदर गीत का जन्म हुआ। असल में फूल जैसे सुगंधि से भर जाता है और यदि हम कहें कि इस फूल के ऊपर कपड़ा बांध कर हमने यत्न करना है कि यह खिले न, तो प्यारिओ! जितने मर्ज़ी यत्न कर लें उसे रोकने के, जिसमें सुगंधि भर गई उसने एक दिन खिलना ज़रूर है। उस फूल की सुगंधि को कोई नहीं रोक सकता।

जब किसी ने माना तो उसके अंदर एक गीत का जन्म हुआ। फिर उसने गाया और जब उसने गाया तो परंपरावादी लोगों, पुरोहित लोगों ने शोर मचा दिया कि जो कुछ यह कर रहा है, झूठ है तथा उस समय गाने वाले ने ये शब्द कहे कि :

लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रहम बीचार।।
जिउ कासी उपदेसु होइ मानस मरती बार।।३।।
कोई गावै को सुणै हरि नामा चितु लाइ।।
कहु कबीर संसा नही अंति परम गति पाइ।।४।। *(अंग ३३५)*

गाने के बाद प्यारिओ!

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ।। *(अंग २)*

गाने के बाद मन में भावना बनाई और गुरु साहिब कहते हैं कि फिर वह **हुकमि रजाई** चलना हुआ तथा जो **हुकमि रजाई** चलने लग पड़ा वह पूरा हो गया। सही अर्थों में प्रधान वह है। इसके आगे चलो। आप जी पांच खंड पढ़ते हो। धन्य गुरु नानक साहिब ने बहुत कृपा हमारे पर की। आप जी धर्म खंड पढ़ते हो, प्रधान को सबसे पहले कुर्सी दी जाती है, जैसे संसार में प्रधान के लिए हर जगह पर सबसे आगे स्थान है। जो आत्मिक रूप से प्रधान बन गए हों, प्रभु की दरगाह में भी उनका स्थान सबसे आगे है। शायद लोग समझ नहीं रहे कि इन प्रधानगियों के बाद जिस दिन परमात्मा के घर जाना है, उस घर में यह नहीं पूछा जाना कि तू किस मंदिर का प्रधान था, नहीं पूछा जाना कि तू किस गुरुद्वारे या धर्मशाला का प्रधान था। वहां यही पूछा जाएगा कि क्या तू परवान हो गया है? यदि परवान हुआ है तो प्रधान है, लेकिन यदि परवान नहीं हुआ तो तेरी प्रधानगी की प्रभु की दरगाह में एक टका भी कीमत नहीं पड़ेगी।

'धरम खंड' हम पढ़ते हैं। जिस दिन आगू आ जाए तो सभी का ज़ोर लगा होता है कि मेरा चेहरा सबसे पहले दिख जाए। इंसान! कितना अच्छा हो यदि तू अपने चेहरे को दिखाने की जगह अपनी आंखों से गुरु को देखने का यत्न करे। ज़ोर यही है कि मेरी फ़ोटो सबसे आगे आए।

ईसा जी का एक वचन मुझे कई बार याद आता है। जब हम भीड़ करके आगे-आगे होकर बैठते हैं तो वे एक बात करते थे कि धर्मी आदमी कभी आगे नहीं बैठेगा। क्यों? कहने लगे कि याद रखना, आप पीछे बैठे हो। यदि ज़रूरत पड़ेगी तो हमें अपने आप ही समय आगे ले आएगा। पीछे बैठे हुए आगू बनें, आगे आएं तो उनको सुख है, आगे बैठे को पीछे धकेला जाए तो उनकी मृत्यु हो जाती है। जो संगत में आकर मैं-मेरी को छोड़ गया, वह प्रधान है।

सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु।।
साधसंगि जा का मिटै अभिमानु।।
आपस कउ जो जाणै नीचा।।
सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा।। *(अंग २६६)*

गुरु जी कहते हैं, यदि कोई यह कहे कि मैंने बहुत भला किया, मैंने बहुत अच्छा किया तो साहिब कहते हैं :

आपस कउ जो भला कहावै।।
तिसहि भलाई निकटि न आवै।। *(अंग २७८)*

उसके पास भलाई नहीं।

आज रामसर के किनारे सारी सिक्ख संगत आई। गुरु ग्रंथ साहिब सच्चे पातशाह का स्वरूप पलंघ के ऊपर था। ख़ुद धन्य गुरु अरजन देव नीचे ज़मीन पर बैठे। सबके बाद संगत में जो बैठे थे, वे धन्य बाबा बुड्ढा साहिब थे। आज अमृत समय प्रकाश होना है। धन्य गुरु अरजन देव सच्चे पातशाह ने नज़र उठाई। बैठी हुई संगत की तरफ देखा। बाबा बुड्ढा साहिब जी को ढूंढते हैं और बाबा बुड्ढा साहिब जहां से संगत प्रवेश करती थी, वहां बिलकुल पीछे बैठे हैं। याद रखना, बुजुर्ग पीछे इसलिए बैठते हैं कि मैं इस घर की संभाल कर सकूं।

जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ से पूरे परधान।। *(अंग ४५)*

इतिहास की दो पंक्तियां हैं। आवाज़ दी, बाबा जी, कहां हो? पीछे से आवाज़ आई, सच्चे पातशाह! आप जी की कृपा से मैं यहां बैठा हूं। कहने लगे, आज पीछे नहीं बैठना, आज आप आगे चलोगे और हम पीछे चलेंगे। कहने लगे :

साहिब बुढा आगै कीना।

साहिब का शाब्दिक अर्थ है धन्य गुरु अरजन साहिब ने बाबा बुड्ढा जी को आगे किया और

पाछै सतिगुर सुख लीना।

गुरु अरजन देव जी उनके पीछे चलने में सुख महसूस करते हैं। फिर वही प्रधान हुआ न जिसे पीछे से आवाज़ मार कर गुरु जी ने अगुआ बना दिया।

दूसरी उदाहरण है, भाई बहलो ने बहुत भावना से सेवा की। हरिमंदर साहिब के निर्माण में उस सज्जन ने अपने सिर पर कूड़े की टोकरियां ढो-ढो कर ईंटें पकाईं। चौधरी था, जिस दिन आया था तो यही पूछा था कि जो सिक्ख आगे बैठे हैं, क्या मैं कैसे यहां पहुंच सकता हूं? आगे से उत्तर मिला था— कमाया कुछ नहीं और अगुआ पहले। आज ज्यों-ज्यों उसने सेवा की, मली (बारीक सूखे उपले) पाई, ईंटें पकाईं तथा धन्य गुरु अरजन सहिब ईंटें देखने गए। एक-एक ईंट बजाकर देखी आवे (भट्टी) में से तथा जब भाई बहलो के आवे को देखा, ईंट पकड़कर हाथों में बजाकर देखी, लाल सुर्ख थी। आवाज़ दी, यह ईंट किसकी है? यह आवा किसका है? भाई बहलो कुछ नहीं बोला, क्योंकि उस ईंटों के आवे में मली या कूड़ा नहीं था जला। मेरे गुरु ने सिर पर टोकरी रखाकर जो कई जन्मों की मली उठाए फिरता था, वह सेवा और सिमरन की साधना में जलाकर मन को पक्का कर दिया था। धन्य गुरु अरजन साहिब ने फिर पूछा और आवाज़ आई, सतिगुरु! यह बहलो का है। धन्य गुरु अरजन देव जी ने देखा, भाई बहलो पीछे थे और पता है वहां आशीश क्या दी, कहने लगे, 'भाई बहलो, तूं सभ तों पहलों'।

गुरु नानक साहिब को पूछें, दाता! आप जी कह रहे हो :

पंच परवाण पंच परधानु॥ *(अंग ३)*

किस जगह परवान हैं, किस जगह पर प्रधान हैं? हजूर ने वहां एक वचन कहा—प्रत्येक इंसान को समय मिला है प्रधान बनने का। धन्य गुरु नानक साहिब कहते हैं कि तुझे परमात्मा ने छः ऋतुएं दी हैं इस धरती पर। तुझे दिन में काम करने के लिए दिन दिया, तुझे रात दी, तुझे छत दी, तुझे पानी दिया। सब कुछ देकर इसका नाम रख दिया धर्मशाला। यदि तू धर्म को कमाएगा तो याद रखना, यहां

कमाई करने वाले! प्रभु की दरगाह में प्रधान बनेगा और जब प्रभु के घर जाएगा, तो यहां सिरोपे मिलते हैं प्रधानगी के तथा वहां तेरे माथे पर प्रभु अपना निशान डाल देगा। गुरु जी के वचन हैं :

राती रुती थिती वार।।
पवण पाणी अगनी पाताल।।
तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल।।
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग।।
तिन के नाम अनेक अनंत।। *(अंग ७)*

यह तो इस धरती की बात है। क्या करने आए धर्मशाला में? किसी इंसान को सुविधा दी जाती है, किसलिए? आप जी का बच्चा, मान लो किसी बड़ी कंपनी में नौकर है। बड़े गर्व के साथ हम कहते हैं कि कंपनी द्वारा इसे मकान भी मुफ्त दिया गया है, उसे कार भी दी गई है, उसे इतनी छुट्टियां भी दी गई हैं। किसलिए? इसलिए मुफ्त मकान नहीं था दिया गया कि सारा दिन सोया रहे, गाड़ी इसलिए नहीं दी कि सुबह से शाम तक आवारागर्दी करता रहे। उसे नौकर इसलिए नहीं दिए गए कि यह खुद ऐशो-आराम करे तथा नौकर इसकी मुट्ठी-चापी करें। किसलिए? क्योंकि कंपनी को पता है कि इस आदमी के पास इतना गुण है कि यदि यह गुण को प्रयोग करेगा तो हमारे कारोबार में और बढ़ोत्तरी होगी तथा जो आदमी सुविधाएं लेकर कंपनी को कुछ करके न दे तो एक क्षण में अगले रिटायर कर देते हैं। सुविधाएं सारी देंगे लेकिन यदि नहीं काम करता तो शाम को हाथ में कागज़ पकड़ा देंगे कि सुबह को इस कंपनी में काम करने नहीं आना, तेरी छुट्टी।

परमात्मा ने सारी सुविधाएं दीं। उसने कहा, मैं तुझे प्रधान देखना चाहता हूं और देख मैं तुझे इस धरती पर रहने के लिए धरती का टुकड़ा देता हूं। इसके चारों तरफ पानी है, हवा धीरे-धीरे चल रही है, लेकिन याद रखना, तू इस पर रहेगा, यह गिरेगी नहीं। परमात्मा ने धरती दे दी। आदमी ने श्वास लेने थे। उसने कहा, यदि बीमार

हो जाए तथा आक्सीजन के पैसे देने लगे तो कई हज़ार रुपयों का बिल बनेगा। जा तू बंदगी करना, मैंने तुझे पवन भी मुफ़्त में दी। फिर मैंने तुझे भोजन के लिए आग दी, तुझे पानी दिया, तेरे शरीर का सिस्टम ऐसा बना दिया कि तुझे भोजन-पानी पचाते हुए कोई दिक्कत न आए। सब कुछ दे दिया, लेकिन मैंने तुझे धर्मशाला में तो भेजा है कि केवल मैं एक ही आशा तेरे पर करता हूं कि तू धर्म कमाकर आना और यदि तू धर्म कमाकर आएगा तो मैं तेरे माथे पर निशान डालकर तुझे प्रधान की पदवी दे दूंगा। गुरु जी के वचन हैं :

करमी करमी होइ वीचारु।।
सचा आपि सचा दरबारु।।

वह स्वयं भी सच्चा है। उसके दरबार में कोई कर्मचारी रिश्वत नहीं लेता, क्योंकि उसके दरबार में जितने बैठे हुए हैं वे सच्चाई के पुतले हैं। वहां कौन परवान होते हैं, कौन प्रधान बनते हैं?

तिथै सोहनि पंच परवाणु।।
नदरी करमि पवै नीसाणु।। *(अंग ७)*

परमात्मा की रहमत की कृपा से उसके मस्तक पर निशान पड़ते हैं। वे हैं प्रधान। हजूर ने आज कृपा की। पहली पंक्ति है :

जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ

जिन पुरुषों ने सतिगुरु के साथ अपने चित्त को लगाया है :

से पूरे परधान।।

वे पूरे प्रधान हैं। पूरे कैसे हैं? देखो :

पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ।।
नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ।। *(अंग २९५)*

वे तो पूरे हैं :

पूरे गुर का सुनि उपदेसु।।
पारब्रहमु निकटि करि पेखु।। *(अंग २९५)*

उन्होंने पूरे को जपा। चित्त का शाब्दिक अर्थ यह है कि जिसमें निरंकार की चितवनी चलती रहती है। चित्त नहीं लगता। क्यों नहीं लगता? क्योंकि कई जन्मों की गांठें उठाकर चलता फिरता है। बैठा होता है गुरु के पास। बाणी सुबह उठकर पढ़ता है तथा सैर बाहर के मुल्कों की किए जाता है।

चित्त हमेशा दो चीज़ों के अधीन रहता है या यह तृष्णा के अधीन रहता है या यह माया की गिनती-मिनती के अधीन रहता है। हज़ूर कहते हैं कि जिन्होंने अपना चित्त लगा दिया और लगाना तरले ले-लेकर। जब गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी पढ़ते हो, चित्त का बहुत कुछ किया। कहीं इसके लिए कठोर शब्द प्रयोग किए, कुत्ते मन, समझ। कहीं प्यार के साथ भी समझाया है, लेकिन यह चित्त लौट-लौट कर बाहर की तरफ भागा।

कइयों ने अपने अंदर को जीत लिया। चित्त लगेगा यदि हम दुनिया से उपराम होंगे। हमारा चित्त लगता नहीं, उसका सबसे बड़ा कारण है कि हम यह समझ बैठे हैं कि हमने मरना नहीं। जिस आदमी को पता लग जाए कि मैंने कल को मर जाना है तो उसका चित्त लगेगा।

किसी गुरमुख प्यारे ने फ़कीर से पूछा था कि बाबा जी! इतना कुछ आप सामने देखते हो, हुस्न देखते हो, पैसा देखते हो। यही कारण है कि विकारी (विकारग्रस्त) इंसान जो वह चित्त लगे हुए को नहीं पहचान सकता, क्योंकि उसके अंदर की ऐनक बहुत मलिन है। वह समझता है कि जैसे मैं गंदा हूं, प्रभु की बंदगी करने वाले भी मलिन हैं। नहीं। उसने एक ही बात कही—बाबा जी! जो आप रोज़ाना बात सुनते हो, इतनी सुंदरता, इतना पैसा, इतने पदार्थ आपके पास होते हैं, आपका मन नहीं मलिन होता? ऐसे लोगों को ऊपर-ऊपर से उपदेश करते हो, अंदर तो आपके भी क्रोध-तृष्णा चलती होगी। उस फ़कीर ने कहा, हां बेटा, मुझे एक बात याद आ गई और तुझे बतानी थी कि तूने परसों मर जाना है। उसने दो-तीन बार कहा। चौबारे पर चढ़ रहा था, टांगें कांपने लग पड़ीं। वह कहता है क्यों कांप रहा है?

कहता है, मैंने नहीं तेरे पास आना, मैं घर चला हूं। वह कहता है हद हो गई, मरना तो परसों है, आ तो सही मेरे पास। कहता है, नहीं-नहीं, तेरे पास नहीं आना। बस, जो छलांगें लगाता सीढ़ियां चढ़ा था वह दीवार पकड़ कर नीचे लड़खड़ाता उतरा, क्योंकि मृत्यु दिखाई दे रही थी।

हर पल इंसान मर रहा है। 70 वर्ष के बाद तो वह प्रक्रिया पूरी होनी है। मान लो, कोई लुधियाना से दिल्ली जाना चाहता है। हालांकि दिल्ली उसने गाड़ी में बैठकर छः घंटे में पहुंचना है, लेकिन याद रखना, छः घंटे मुकम्मल होने की प्रक्रिया है। शुरू तो तभी हो गया जब लुधियाना से गाड़ी बाहर निकाली थी। मौत तो उसी दिन शुरू हो गई जिस दिन पहला श्वास लिया था। यह सफ़र धीरे-धीरे तय हो रहा है। चित्त तभी नहीं लगता, क्योंकि हम समझते हैं कि हमने मरना नहीं। प्रभु की बंदगी करने वाला समझता है, मैं पल-पल मर रहा हूं। वह कांपता हुआ घर गया। रंग पीला हो गया। ज़ोर से चारपाई पर गिरा। घर वालों ने पूछा, क्या हुआ? कहता है, अब कुछ न पूछो, कोई धर्म-कर्म मेरे लिए करो। मैंने परसों मर जाना है। घर वाले भी रोने लग पड़े। कहते हैं कि तुझे किसने कहा है? कहता, बाबे ने कहा। उसने सभी आदमी इकट्ठे किए। जिनके साथ लड़ा था, सबसे माफ़ी मांगी। ध्यान बस एक ही, कहता और कोई बात न करो, कोई प्रभु की बात करो।

फ़कीर आया तो उसने देखा कि रोना-पीटना पड़ा (हो रहा) है। वह कहता है, मेरे साथ बात तो कर ले। कहता है कि मेरे पास बात करने का समय ही कोई नहीं। जो तुझे भी मैंने सख़्त बोला है, मुझे बख़्श देना। वह कहता है कि तूने कोई नहीं मरना। उठकर खड़ा हो। उठ बैठा। फ़कीर कहता है कि मैंने केवल तुझे समझाने के लिए कहा था कि तूने मरना है, लेकिन अभी मरना नहीं तूने। क्या तीन दिनों में तेरा चित्त नहीं बिखरा? कहता है, बिखरने की बात छोड़, मुझे सामने जलती हुई चिता दिखाई देती थी। मौत दिखाई देती हो तो चित्त बिखरेगा कैसे? फ़कीर कहता है, बस बेटा! अंतर इतना

है कि हम जिस दिन चले थे, हमारे मुरशिद ने कहा था कि मरना अवश्य है। लोग मरना दूर समझते हैं लेकिन हम एक श्वास समझते हैं। इसलिए हमारा चित्त कभी बिखरता नहीं।

गुरु जी ने पहली बात कही कि जिन्होंने अपने चित्त को गुरु के साथ लगा लिया वे पूरे प्रधान हो गए। पूरों के लक्षण क्या हैं? धन्य गुरु अरजन साहिब जी का एक वचन है। वे कहते हैं कि जो जीते-जी पूरे हो जाते हैं। पहला लक्षण उनका है :

मंत्रं राम राम नामं ध्यानं सरबत्र पूरनह।।

उनकी ज़ुबान पर यदि कोई मंत्र है, केवल परमात्मा के नाम का। वे सर्व-व्यापक परमात्मा के ध्यान में जुड़ जाते हैं। दूसरा उनका लक्षण है :

ग्यानं सम दुख सुखं जुगति निरमल निरवैरणह।।

उन्हें ध्यान में से तथा मंत्र में से ज्ञान मिला। वह ज्ञान था कि उन्होंने दुख तथा सुख को एक समान जान लिया है। उनकी ज़िन्दगी जीने की जो युक्ति थी वह थी निर्मलतायी। कभी अंदर गंदा विचार नहीं आने दिया। ये पूरे हैं। जो निर्मल हैं वे किसी के साथ वैर नहीं कमाते। अगला वचन है :

दयालं सरबत्र जीआ पंच दोख बिवरजितह।।

जो पूरे प्रधान हैं वे सभी पर दयालु हैं। उन्होंने पांच जो दोख (दोष) हैं उन्हें वर्ज दिया है।

भोजनं गोपाल कीरतनं

वे भोजन करते हैं परमात्मा के कीर्तन का।

अलप माया जल कमल रहतह।।

वे इस तरह माया में रहते हैं जैसे कमल का फूल पानी में निर्लेप रहता है। पांचवां लक्षण है।

उपदेसं सम मित्र सत्रह

पूरे जो हैं उनके सामने दुश्मन आ जाए, मित्र आ जाए,

भगवंत भगति भावनी।।

भक्ति-भावना के साथ एक जैसा उपदेश देते हैं। गुरु जी कहते हैं कि छठा लक्षण है पूरों का :

पर निंदा नह स्रोति स्रवणं

पराई निंदा भी अपने कानों से नहीं सुनते।

आपु त्यागि सकल रेणुकह।। *(अंग १३५७)*

अपना आप त्याग दिया। वे सभी के चरणों की धूल बन गए। ये हैं प्रधान, पूर्ण पुरुष। कई मेरे जैसों ने ज़िन्दगी का प्रोजेक्ट ही यह बनाया है कि सुबह से शाम तक पंद्रह-बीस की जितनी देर तक निंदा नहीं कर लेनी, रोटी नहीं पचती। वे इंसान परमार्थी कभी नहीं हो सकते।

निंदा कैसे अंदर के नेम (नियम) को खराब करती है? दूध दोहा तो और दोहे हुए दूध में चार कांजी की बूंदें डाल दो। दूध हो 40 लीटर तथा 10 बूंदें डाल दो, 10 बूंदें 40 लीटर दूध को ख़राब कर सकती हैं। प्यारे! तेरा 50 दिनों का किया जप-तप दो मिनट की निंदा में ख़राब हो सकता है। साहिब कहते हैं :

खट लख्यण पूरनं पुरखह

ये हैं पूर्ण पुरुष।

नानक नाम साध स्वजनह।। *(अंग १३५७)*

उन्हें साधू कहा जाता है। यदि कोई आदमी चलता है तो उसके मुंह पर उसकी वाह-वाह न करो, क्योंकि उसकी वाह-वाह उसके विनाश का कारण बन सकती है। वह समझ लेता है कि मेरे से आगे कोई नहीं।

महात्मा बुद्ध, जिन्होंने बहुत संघर्ष किया, उनके पवित्र जीवन में ज्ञान होने के बाद उन्होंने व्याख्यान शुरू किया। महात्मा बुद्ध नालंदा गए। वहां उन्होंने प्रवचन करना शुरू किया। नालंदा में एक बहुत

सियाना विद्वान पंडित था, जिसकी रसना पर कहा जाता था सरस्वती बोलती है। उस पंडित को जब पता चला कि महात्मा आए हैं। वह महात्मा बुद्ध को सुनने के लिए चला गया। महात्मा बुद्ध ने व्याख्यान दिया। पंडित ने बहुत ध्यान से उस व्याख्यान को सुना। सुनने के बाद श्रद्धा-भाव के साथ महात्मा बुद्ध के प्रति समर्पित हो गया। पंडित महात्मा बुद्ध जी के पास गया तथा वहां जाकर उसने शब्द कहे थे कि महात्मा बुद्ध जी! आपके जैसा कोई नहीं।

महात्मा बुद्ध जी ने सुना और कहने लगे कि मैंने तेरे बारे में बहुत कुछ सुना है, तू सियाना है, तेरी वाणी में मिठास है, तेरी वाणी सुन कर लोगों के कानों को सुकून मिलता है, लेकिन पंडित जी सियाने विद्वान होकर बात भी सियानी करो। इसका मतलब कि तू अपनी जुबान से जो बातें कर रहा है वह तेरा अपना ज्ञान नहीं, केवल व्याख्यान है।

पंडित कांप गया। महात्मा बुद्ध ने तीन प्रश्न किए। कहने लगे, तू त्रैकालदर्शी है? पंडित कहता है, नहीं। त्रैकालदर्शी का अर्थ क्या है? महात्मा बुद्ध कहने लगे कि मेरे जन्म से पहले जिस दिन की परमात्मा ने सृष्टि रची है, क्या तब के सारे बुद्धों के बारे में तू जानता है? पंडित ने हाथ जोड़ कर कहा, बिलकुल नहीं। कहते, चलो छोड़ो, बीते का तुझे कोई पता नहीं, आने वाले बुद्धों की तुझे कोई जानकारी नहीं, लेकिन मुझे भरोसा है इस समय मेरी उम्र में, मेरे काल में जितने बुद्ध हैं, उनके बारे तू जानता होगा। पंडित ने चरण पकड़ कर कहा, महात्मा! मैं नहीं जानता। कहने लगे, यदि नहीं जानता तो फिर तूने कैसे कह दिया कि आपके जैसा कोई नहीं। कहने लगा, बस आप जी का चेहरा, आप जी की वाणी, आप जी के खुमारी में आए हुए नेत्र तथा समाधि में नेत्र बंद मेरे अंदर को इतना श्रद्धा में ले गए कि मैंने श्रद्धावश होकर कह दिया कि आपके जैसा न है, न होगा, न था। उस समय महात्मा बुद्ध ने एक बात कही। कहने लगे—श्रद्धा परमात्मा की बहुत बड़ी दात है, लेकिन श्रद्धावश होकर झूठ न बोलो, क्योंकि झूठ की उम्र बहुत थोड़ी है। यदि परमात्मा तुझे श्रद्धा दे तो

श्रद्धा में वह वाणी बोल जिसमें सच्चाई हो, क्योंकि सच्चाई वाले शब्दों की उम्र बहुत लंबी होती है।

गुरु जी हमें समझा रहे हैं :

जिन कउ आपि दइआलु होइ

जिनके ऊपर परमात्मा दयालु हो गया :

तिन उपजै मनि गिआनु।।

उनके मन में रूहानियत का ज्ञान पैदा हुआ। ज्ञान वाला ही प्रधान है। ज्ञान किन्हें मिलता है?

जिन कउ मसतकि लिखिआ

जिनके मस्तिष्क पर प्रभु जी आप अपनी रहमत के लेख लिख देते हैं।

तिन पाइआ हरि नामु।।१।।

उन्होंने हरि का नाम पा लिया है। नाम में से ज्ञान पैदा हुआ, ज्ञान में से प्रधान पैदा हुआ।

मन मेरे एको नाम धिआइ।।

मेरे मन! तू एक परमात्मा के नाम को जप।

सरब सुखा सुख ऊपजहि

नाम को जपेगा तो सभी श्रेष्ठ सुख तेरे अंदर पैदा हो जाएंगे।

दरगह पैधा जाइ।।१।।रहाउ।।

वे प्रभु की दरगह में इज़्ज़त के साथ जाते हैं।

जनम मरण का भउ गइआ

जो प्रधान हैं, उनका जन्म तथा मरण का भय चला गया।

भाउ भगति गोपाल।।

उस धरती की पालना करने वाले प्रभु की प्रेमा-भक्ति उन्होंने की।

साधू संगति निरमला

कमाई वाले साधू-जन की संगत करके अंदर निर्मलतायी आ गई।

आपि करे प्रतिपाल।।

मेरा वाहिगुरु ख़ुद उनकी प्रितपालणा करता है।

जनम मरण की मलु कटीऐ

उनकी जीवित तथा मरे हुओं की मैल काटी गई।

गुर दरसनु देखि निहाल।। २।।

उन्होंने गुरु के दर्शन किए तथा निहाल हो गए।

थान थनंतरि रवि रहिआ पारब्रहम प्रभु सोइ।।

समझ पड़ गई कि सभी जगहों में पारब्रह्म परमेश्वर ख़ुद रमा है।

सभना दाता एकु है

सबको रिज़क देने वाला एक दाता है।

दूजा नाही कोइ।।

उसके बिना और कोई नहीं।

तिसु सरणाई छुटीऐ

उसकी शरण में आएंगे तो छुटकारा होगा।

कीता लोड़े सु होइ।। ३।।

जो कुछ वह चाहता है, वही कुछ होता है।

जिन मनि वसिआ पारब्रहमु

जिनके मन में परमात्मा बस गया,

से पूरे परधान।।

वही पूरे हैं।

तिन की सोभा निरमली

उन प्रधानों की शोभा सारे संसार में है।

परगटु भई जहान।।

उनकी जहान प्रशंसा करता है।

जिनी मेरा प्रभु धिआइआ नानक तिन कुरबान।।४।।

(अंग ४५-४६)

धन्य गुरु अरजन साहिब कहते हैं कि जिन्होंने मेरे प्यारे प्रभु को जपा है, मैं उन पर से कुर्बान जाता हूं। गुरु कृपा करें, हम सभी को सुमति बख़्शें। हम गुरसिक्खी कमाने वाली तरफ चलें। हुई बेअंत भूलों की क्षमा!

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।